(दुर्गम दुर्ग)

लेखक—

श्री प्रमोद बिहारी

पुस्तक मन्दिर मथुरा।

जिसकी गोद में पल कर बड़ा हुआ
जिसकी सुशिक्षा ने मुझे इस
योग्य बनाया—अपनी
मां—विष्णुदेवी
को
सादर समर्पित

"प्रमोद"

प्रकाशक की ओर से

हम घोषणा करते हैं कि हमने प्रति मास इसी प्रकार का एक नवीन उपन्यास छापने की योजना की है। इन उपन्यासों के छापने में हमने पाठकों की मनोवृत्ति का पूर्ण ध्यान रखा है। संसार के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला जायगा और आशा है पाठक उनसे बहुत कुछ सीख सकेंगे। शीघ्र ही आप भी अपना नाम हमारी सूची में लिखा लीजिये और इस प्रकार प्रति मास एक नई पुस्तक पढ़िये। स्थायी ग्राहकों को प्रत्येक पुस्तक पौन मूल्य में दी जायगी और डाक खर्च पृथक रहेगा।

शिवचरनलाल,

अध्यक्ष—पुस्तक मन्दिर मथुरा।

क्या आपको यह उपन्यास पसन्द है

यदि हाँ तो

आप निम्न उपन्यास पढ़े बिना रह ही नहीं सकते। सनसनी खेज घटनाओं से भरपूर इन क्रान्तिकारी उपन्यासों में आपको वह सामाजिक, राजनैतिक और वैज्ञानिक सामिग्री मिलेगी जो हिन्दी के किसी भी अन्य उपन्यास में मिलना कठिन है।

नीला पंजा	दुर्गम दुर्ग	२॥)
"	खूनी तीर	२॥)
"	मृत्यु मेह	१)
"	भेदी मित्र	१)
"	संसार विध्वंसक	१)
तिलस्मी पञ्जा	तिलस्मी कुमारी	२)
"	तिलस्मी खोपड़ी	२)
"	फकीरी तिलस्म	२)
"	पुरोहित का तिलस्म	१॥)
"	तिलस्म में तिलस्म	१॥)
खूंख्वार टोली		२॥)
शाही रास्ता २ भाग		२॥)
पाँच जासूस		१)
ब्लैक चक्कर में		१)
समाज के नाम पर		१)

भारत भर की हिन्दी की समस्त पुस्तकें मिलने का एक मात्र स्थान—

पुस्तक मन्दिर मथुरा।

भूमिका

यह उपन्यास समाज के ढकोसलों और मानव दुराचार पर आक्षेप करने को लिखा गया है। प्रतिदिन देखा जाता है कि धार्मिक रूढ़ियां बहुधा मनुष्य को अकर्मण्य और दुश्चरित बना देती हैं। क्यों न हम और हमारी सहधर्मिणियाँ इस योग्य बनने की कोशिश करें कि धार्मिक ढकोसले तोड़ सकें। विनायक 'महाराज' के सदृश्य अनेक मठ अब भी कायम हैं और वहाँ अधिकतर वही कार्यवाही होती हैं जिन पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है।

'हन्सा' उन स्त्रियों का आदर्श है जो अबला होने पर भी बुद्धि का सहारा लेकर सबला हो जाती हैं और मार्ग में आये हुए अनेक कंटकों का सहज ही विध्वंस कर डालती हैं। भारतीय स्त्री समाज इतना गिरा है कि उसकी तुलना उन जानवरों से की जा सकती है जो कमजोर और ना समझ होने के कारण दूसरों के आश्रय में रहना चाहते हैं। यह सब दशा समाज के कारण ही है कि उसके व्यवहार ने उन्हें इतना दुर्बल बना रखा है कि वह सिर उठाने के काबिल नहीं हैं। आम तौर से जैसे ही लड़की चौदह वर्ष की हुई कि उसकी शादी करदी गई और अधिकतर वेमेल जोड़ अर्थात् अधिक अवस्था वाले पुरुषों के माथे वह सुकुमारी कन्यायें मढ़ दी जाती हैं। खाने खेलने की अवस्था ही में गृहस्थी का बोझ उनके माथे आ पड़ता है और नवयौवन अवस्था ही में उनकी कामाग्नि प्रज्ज्वलित हो जाने के कारण आगे चलकर वह व्यभिचारिणी

हो जाती हैं। अधिकतर सोलह वर्ष की अवस्था ही में वह मां बन जाती हैं और इस प्रकार कली के ही रूप में उनका यौवन, स्वास्थ्य और चरित्र गिर जाता है। क्या ऐसी स्त्री जाति से यह उम्मीद की जा सकती है कि उसकी सन्तान बलवान् और इतनी पौरुषी हो सकेगी जो राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर ला सके।

रुद्रकंठ वर्मा और जितेन्द्र प्रताप सिन्हा मनुष्यों के लिये आदर्श हैं। वह बुद्धिमान, सच्चरित्र और पौरुषी बनाने की प्रेरणा मानव समाज को देते हैं ताकि समाज का प्रत्येक मानव इस योग्य हो सके कि वह आततायियों का सामना करके अपने बल और विक्रम से समाज का उत्थान कर सके। रामप्रताप एक बहुत बलशाली आदर्श है जिसने अपने कर्मों द्वारा मानव समाज को दुखाना शुरू कर दिया। मगर रुद्रकंठ वर्मा ने उसकी तमाम कार्यवाही को पलट डाला और अन्त में उसे परास्त कर ही दिया। आततायी कभी सफल हो न सके न हो सकेंगे। इसलिये इस भाव को छोड़कर क्यों न सब अच्छे प्रजाजन और सामाजिक सदस्य बन जांय। प्रायः देखा गया है कि शान्ति के समय ही में और प्रजा की सुचरित मनोवृत्ति ही से देश उन्नति पर पहुँचता है।

आशा है पाठक भावों को समझेंगे और अच्छे नागरिक और सामाजिक बनने का प्रयास करेंगे।

आफिस
श्री कृष्ण सेवासंघ,
मथुरा।

प्रमोदबिहारी

❀ नीला पञ्जा ❀

(दुर्गम दुर्ग)

प्रथम परिच्छेद

भयंकर परिणाम

देखते ही देखते काले लबादे वाले मनुष्य ने अपने मुँह पर से एक झिल्ली सी हटाली और अपनी भयङ्कर सूरत सोफे पर बैठी रमणी के आगे करदी। जिसे देखते ही रमणी भय से थर २ काँपने लगी और चीख मारकर बेहोश हो गयी। लबादे वाले मनुष्य ने उसकी बेहोशी की कुछ भी परवा न की और उसकी कमर में लटका हुआ चांदी का गुच्छा निकाल लिया जिसमें केवल एक चाबी पड़ी थी। तत्पश्चात् उसने जेब में से एक अनोखी डिब्बी निकाली और उसमें से एक तरल पदार्थ निकाल कर रमणी की साड़ी के पल्ले पर डाला और उसे उसकी नाक के पास बाँध दिया ताकि साँस के साथ तरल पदार्थ की खुश्बू अधिक देर तक बेहोश रखने में मदद दे सके।

"करीब दो घंटे तक तो भगवान भी इसे होश में न ला सकेगा" लबादे वाला गुनगुनाया।

इन सब कामों से फुर्सत पाकर इसने तमाम दरवाजे व खिड़की बन्द कर दी और रोशनी बुझाकर एक दरवाजे से निकल गया और साथ ही बाहर से उसे भी बन्द करता गया। बाहर बरामदे में आकर उसने देखा कि कमरों के समस्त किवाड़बन्द थे और किसी भी दूसरे मनुष्य का वहां होना सम्भव न था लेकिन उसने अपना शक मिटाने के लिये तमाम कमरों के दरवाजे खोले और जेब में से टौर्च निकाल कर इस बात को पूरी तरह से निश्चय किया कि कहीं कोई दुबका तो नहीं बैठा है। परन्तु कहीं भी किसी आदमी के होने का आभास न पा सका। अतः इस काम से निश्चन्त होकर उसने जेब में से नापने का फीता व खड़िया निकालली और आँगन को नाप कर बीच में एक 'चौकोर एक फीट का वर्ग बना दिया। कई बार उसने फीते से नाप २ कर इस बात को जांचा कि कहीं निशान गलत तो नहीं है। मगर जब उसे पूरी तरह विश्वास होगया तो वह बांई तरफ वाले कमरे में गया और एक लोहे का बड़ा गेंदाला उठा लाया। चौकोर निशान के बीच की ईंटें उसने उखाड़ना शुरू कर दिया और थोड़ी ही देर में उसने निशान के अन्दर की सारी ईंटें उखाड़ डाली।

ईंटें उखाड़ने में उसे समय तो अवश्य कम लगा मगर

मेहनत ज्यादा करनी पड़ी । उसके माथे पर आया हुआ पसीना इस बात की पूरी गवाही दे रहा था कि वह काफी थक गया है । थकान मिटाने के लिये वह एक मिनट बैठा भी मगर एकाएक घड़ी की ओर नजर जाते ही वह फिर मुस्तैदी के साथ उठ खड़ा हुआ और हाथों से मिट्टी गड्ढे से निकाल कर बाहर इकट्ठी करने लगा । करीब दस मिनट बाद ही वह मिट्टी निकालना छोड़ कर किसी सोच में पड़ गया । बैठा बैठा कुछ सोचता रहा और फिर जेब से पुर्जा निकाल कर बिजली के नीचे पढ़ने लगा । कई बार वह मन ही मन में उस पुर्जे को पढ़ गया मगर कुछ समझ न पाया । चन्द मिनटों तक ही वह आंगन में टहलता रहा तब फिर बाद में गड्ढे के पास आया और गेंदाला लेकर जमीन को ठोकने लगा कि एकाएक गेंदाला गड्ढे के अन्दर ऐसे बजा कि मानो किसी धातु की वस्तु पर पड़ा हो ।

शीघ्र ही उसने दुगने साहस से जेब में से मोमबत्ती व एक दियासलाई का बक्स निकाला और मोमबत्ती जलाकर गड्ढे के अन्दर एक ईंट पर रख दी ताकि वह उसके अन्दर की हर एक चीज आसानी से देख सके । थोड़ी सी मट्टी हटाने के बाद उसने देखा कि बीच में एक लोहे का गोल डिब्बा रखा है न तो उसमें कहीं जोड़ ही दीखता, था न उसमें चाबी लगाने का कोई छेद ही, केवल ऊपर एक छोटा सा मोर बना था । जो लगभग एक इंच लम्बा था और उस

पर हल्की सी नक्काशी का काम भी था। मगर डिब्बा मिट्टी की वजह से जगह २ पर जङ्ग तो जरूर खा गया था मगर कमजोर कहीं से न हुआ था। थोड़ी कोशिश के बाद डिब्बा बाहर निकल आया। तब कहीं उस मनुष्य ने चैन की सांस ली।

मगर थोड़ी ही मिनटों के बाद वह फिर उठ खड़ा हुआ और उसने उस गड्ढे को भर देने के पश्चात् ईंटें जड़दीं और कूड़ा साफ कर दिया। गड्ढा ऐसा प्रतीत होने लगा कि किसी भारी वस्तु के पड़जाने से ईंटों की दर्जें खुल गई है मगर ऐसा न लगता था कि कभी ईंटें उखाड़ी भी गई हैं। एका-एक उसे फिर कुछ ख्याल आया और उसने आंगन के बांई ओर ही गमले रखे हुए तुलसी के पौदे के गमले को उठाकर उन ईंटों पर रख दिया और ऐसा लगने लगा कि मानो वह सदा से ही यहाँ रखा हो। आंगन में उसके रखे रहने से एक नई किस्म की खूबसूरती सी आ गई। सब प्रकार संतुष्ट होकर उसने डिब्बा हाथ में उठाया और फिर ओवर कोट की एक जेब में डाल लिया। तब अन्दर की जेब में से एक झिल्ली निकाली और उसे मुँह पर लगाली। जिसके लगाते ही उसका भयानक चहरा एक हँसमुख युवक के चहरे में परणित हो गया। सावधानी से उसने चारों ओर फिर एक नजर डाली और बरामदे में आकर बिजली बुझा दी। टार्च हाथ में लेकर वह फिर उसी कमरे में पहुंचा और किवाड़ खोल कर अन्दर दाखिल हुआ। स्विच के पास पहुँच कर उसने

बिजली जलाई जिससे कि तमाम कमरा जगमगा उठा और कमरे की हर चीज साफ दीखने लगी। ज्योंही उसकी सोफे की तरफ निगाह गयी तो वह एक दम चीख पड़ा और शीघ्र ही लड़खड़ा कर गिर पड़ा।

दूसरा परिच्छेद

'राजा' का परिचय

कमलसिंह ठाकुर की हवेली विक्रमपुर में सब से शानदार थी। विक्रमपुर एक छोटा सा शहर घाघरा नदी के किनारे पर है। शहर तो काफी बड़ा नहीं है मगर बस्ती तो लगभग ७० हजार आदमी से ज्यादा की होगी। शहर के चारों ओर परकोटा खिंचा था जो कहीं २ काफी टूटा था लोगों का कहना था कि मुगल काल में इस भाग का सूबेदार जालम खाँ यहीं रहता था। आस पास की जगह उपजाऊ होने के कारण लोग काफी खुशहाल थे और यह अनाज व घी की बहुत बड़ी मंडी थी। कमलसिंह ठाकुर जिसकी अवस्था इस समय लगभग ८० वर्ष की होगी वह इस भाग का सबसे बड़ा जमींदार व रुपये वाला था कि उसके यहाँ करोड़ रुपये पर सदा घी का दीपक जलता रहता था। कुछ भी हो यह मानना ही पड़ेगा कि कमलसिंह ठाकुर विक्रमपुर का एक प्रकार से बे तिलक का राजा था।

थे और रामप्रताप अपनी ही धुन में मग्न था और चन्द्रसिंह अपनी पढ़ाई में लगा रहता था इसलिये जागीर की तमाम देखरेख नाहरसिंह को करनी पड़ती थी। नाहरसिंह औसत कद का सांवले रंग का जवान लड़का था। उसकी उम्र लगभग ३० साल के होगी और वह रामप्रताप से केवल चार साल ही छोटा था। उसका चेहरा व रहन सहन पूरे ठाकुरों की तरह का था और उसके चेहरे से रौब भी टपकता था।

चन्द्रसिंह की अवस्था इस समय केवल चौबीस साल की थी। उसकी देह इकेहरी थी रंग गेहुँआ और नाक का नकशा भी सुन्दर था उसकी वाणी में मिठास था और वह सबसे छोटा होने के कारण सब को प्यारा था। स्वभाव उसका हँसमुख था और वह जिद्दी परले सिरे का था। कारण केवल यही था कि छोटे होने के कारण उसकी हरेक जिद पूरी करदी जाया करती थी दोनों बड़े भाइयों का विवाह तो बहुत दिन पहले हो चुके थे और बी० ए० में आते ही इनका विवाह भी ठाकुर कमलसिंह की लड़की मालती से कर दिया गया और उसी के साथ लखनऊ बी० ए० में पढ़ने के लिये जाना पड़ा। रामप्रताप के तो अब तक कोई सन्तान न थी मगर नाहरसिंह के हरीसिंह नाम का एक चार वर्षीय लड़का था।

रामप्रतापसिंह का प्यार का नाम राजा था। क्योंकि सबसे बड़ा होने के कारण हरपालसिंह उसका नाम न लेकर

राजा ही कहा करते थे अतः बाद में वह जागीर भर में राजा के नाम से ही पुकारा जाता था। चन्द्रकला उसकी स्त्री का नाम था। जैसा कि उसका नाम था वैसी ही वह स्वरूपवती भी थी और उसके चहरे से यह प्रतीत होता था कि मानो वह सदा हँसती ही रहती है और विषाद तो उसने जाना तक नहीं। चन्द्रकला को राजा अधिकतर चन्द्र! ही कह कर सम्बोधित करता था। चन्द्रे ने बी० एस० सी० तक भारत में शिक्षा पाई थी और निरंतर अपने पति के साथ अध्यन किया करती थी। चन्द्रा राजा के साथ विदेश भ्रमण को भी गई थी अतः वह अध्यन व प्रयोग के समय अपने पति का साथ पूर्ण रूप से देती थी। न तो चन्द्रे ही को घर-बार देखने का अवकास मिलता था और न राजा ही को। दोनों पति-पत्नि अपने काम में सलंग्न रहते थे। हरपालसिंह इसमें ही प्रसन्न थे। वह कभी २ सराह कर यह कह दिया करते थे कि 'राजा और उसकी स्त्री ही ने अपनी विद्या का पूरा फायदा उठाया है और अब भी दोनों अपने ही काम में संलग्न रहते हैं भगवान उनको चिरायु रखे।'

तीसरा परिच्छेद।

दुर्गम दुर्ग

काठमंडू नैपाल की राजधानी है। यहाँ से एक सड़क भारतीय अंग्रेजी राज्य सीमा की ओर आती है जो पर्वत,

नदियों तथा ऊबड़ खाबड़ वनों को पार करती हुई सीधी दार्जलिंग को जाती है। काठमांडू से करीब चालीस कोस चलने के बाद यह सड़क दो भागों में फट जाती है। जिनमें से एक तो सीधी दार्जलिंग जाती है और दूसरी बायीं ओर मुड़ कर पर्वतों की ओर चली जाती है। और करीब २ मील चलने के बाद पूरी तरह खतम होजाती है। इससे आगे एक आयताकार पर्वत श्रेणी जो बहुत दूर तक फैली हुई है और जिसके बीच में एक गोल ऊंचा सा पर्वत दीखता है। यह पर्वत काफी बड़ा तथा सबसे ऊंचा है। सैकड़ों कोस तक इस पर्वत पर आदमी का चिन्ह नहीं मिलता। पेड़ों के समूह ने पर्वत को इतना घेर रखा है कि दूर से देखने पर सिवाय पेड़ों के कुछ ही नहीं नजर आता। रास्ता इतना दुर्लभ है कि किसी अजनबी आदमी की ताकत नहीं कि वह सही सलामत पेड़ तक पहुंच भी सके बीच में खाई खड्डे तथा मध्य स्थित पर्वत के चारों ओर एक पहाड़ी नदी घेरे हैं जिसमें पहाड़ों से बर्फ पिघल २ कर आती है जिसकेकारण नदी का पानी काफी ठंडा रहता है। इतने दुर्गम स्थान में जाने का साहस किसी मामूली आदमी का काम नहीं है ।

कार्तिक का महीना था। उजेला पाख था, शीत शनैः २ बढ़ने लगी थी और कुहरा छाये रहने के कारण पास की चीज भी साफ न दीख पाती थी । मध्य स्थित पहाड़ के बायीं ओर दो मूर्ति सी पूर्णतया खड़ी दिखाई दीं । जिनमें से एक

तो आदमी दीखता था जो कि नीले रङ्ग का गर्म सूट पहने और ऊपर से काले रङ्ग का लबादा ओढ़े था। हाथ में दस्ताने और सिर पर काले रङ्ग का टोप था और पास खड़ी औरत मालूम होती थी जो कि काले रङ्ग की साड़ी पहने थी और ऊपर से आदमी जैसा काले रंग का लबादा ओढ़े थी। हाथों में दस्ताने थे मगर सिर पर टोप न था।

'डार्लिङ्ग ! यही जगह ठीक रहेगी क्योंकि सामने वाले पहाड़ की वजह से यह स्थान कम उजाले में भी है और दूसरी ओर देखे जाने का भय भी नहीं'। आदमी ने अपने साथ वाली स्त्री से कहा।

'यस माई मास्टर ! लेकिन चाँद के डूबने में अभी करीब एक घंटा ही बाकी है अतः हमको चाहिये कि हम अपने प्रयोग का पूरा सामान मंगालें और उसे भली प्रकार सुसज्जित करदें ताकि चाँद छिपते ही हमारा काम शुरू हो जाय।' स्त्री ने जवाब दिया।

'हाँ ! तुम ऐसा ही करो जब तक मैं पास वाली पहाड़ी पर चढ़ कर देखलूं कि हमारे कल वाले प्रयोग के लिये कौन सी जगह ठीक रहेगी। काम शीघ्रता से करना।' कह कर वह दीर्घकाय मनुष्य लम्बे २ डग भरता हुआ। ऐसी स्थिरता से चला गया मानो कि वह उस ऊबड़ खाबड़ जगह को चप्पा २ जानता हो।

स्त्री ने जिल्कुल भी समय न नष्ट करके जेब में हाथ डाल कर सीटी निकाल ली और शीघ्रता से बजा दी। सीटी की आवाज सुनसान जङ्गल में गूँज गई और चंद ही मिनट बाद एक जवान स्याह रंग की फौजी वर्दी पहने आ पहुँचा और उसने आते ही फौजी ढंग पर सलाम किया।

'नम्बर'? स्त्री ने कड़क कर पूछा

'राजगढ़ सात'। उस जवान ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

'अच्छा नम्बर सात' सिटगढ़ तीन के पास जाकर कहना कि हर मजेस्टी ने तुम्हें सुहाने के बाँयी ओर प्रयोग के सामान के साथ बुलाया है। शीघ्र आये क्योंकि समय कम है।' स्त्री ने हुक्मनामा ढङ्ग पर कहा।

जवान ने फिर फौजी ढङ्ग पर सलाम किया और शीघ्र ही पीठ फेर कर बाँयी ओर वाले पेड़ों में गायब हो गया।

स्त्री ने अपने दोनों हाथ जेबों में डाल लिये और टहलने लगी। मगर दस मिनट भी न गुजरे थे कि एक दो पहियों की छोटी सी हाथ से ठेलने वाली गाड़ी ठेल कर लाता हुआ एक जवान ठीक पहले वाले नम्बर सात की तरह फौजी कपड़े पहन उस स्त्री के पास आया। उसके पीछे दो फौजी जवान ठीक पहले वाले की तरह कपडे पहने हुए थे, केवल फर्क इतना ही

था कि इन दोनों के बाये हाथों पर घड़ी के स्थान पर एक सोने का चमकता हुआ पंजा बना हुआ था और उसकी बीच हथेली पर नीलम का बना हुआ एक (सतीये) स्वास्तिक का निशान था।

दोनों जवानों ने आकर उस स्त्री को फौजी ढंग से सलाम किया और अपने बांये हाथों पर लगे चिन्हों की तरफ इशारा किया। उस गाड़ी में तीन काठ के मामूली संदूक रखे थे। जो जवान उसको ठेल कर लाया था उसने एक २ करके उन तीनों संदूकों को नीचे उतार कर रखा। उन दोनों युवकों ने ऊपर लिखे निशानों से पहचान कर उन संदूकों को खोला।

पहले संदूक में से तो एक प्रकार की छोटी सी गोल मेज सी निकली! यह मेज करीब डेढ़ फुट बीचों बीच चौड़ी रही होगी। इस में एक स्थान पर एक ट्यूब सी लग रही थी, जो करीब नौ इंच लम्बी और गोल बनी थी। उसके नीचे ही गोले में एक से लेकर सौ तक गिनती लिख रही थी और बीचों बीच में एक सूई लग रही थी। जो चाहे किसी भी नम्बर पर रखी जा सकती थी और नीचे की तरफ एक घोड़ा लगा था जैसा कि बदूकों में लगा रहता है। यह मेज एक तिपाई पर खड़ी की जाती थी, जो जमीन से लगभग एक गज ऊँची रहती थी। दूसरे संदूक में काली २ लम्बी बत्तियाँ भरी पड़ी थीं, जो मेज पर लगे ट्यूब की ही शकल की थीं पर

थी उसके छोटी नालि हृदय में आ गई। तीसरे कलम में एक बारह सेन्ट की पेन्सी रखी थी, जिसमें से एक तार निकाल कर मेज के नीचे लगे स्विच में लगा दिया गया और दूसरा एक प्लग में लगा था। जिसकी शक्ल पुराने तरह के ग्रेमोफोनों के मुंह से कटने वाले भाग की तरह थी।

शीघ्र ही दोनों निरहृदार जवानों ने मेज जमा दी, आला ठीक लगा दिया। फिर एक अजीब तरह की लोहे की सी नाल में वह लम्बी २ काली ट्यूबें भर कर मेज पर लगे ट्यूब से लगा दी जिसके नीचे एक तरह का कुन्दा लटक रहा था। भली प्रकार से जमा देने के बाद एक बार फिर दोनों ने जाना और यह इत्मीनान करके कि इस में अब कोई कमी नहीं रह गई है, तो उन्होंने फिर एक साथ फौजी ढङ्ग पर सलाम किया। जूतों की आहट से स्त्री का ध्यान इधर फिरा और उसने टहलना बन्द कर दिया।

'मशीन ठीक लग गई, कुछ कमी तो नहीं है ?' रौब से पूछा।

'हर मैजेस्टी, काम सब ठीक है, मशीन में कुछ कमी नहीं है। प्रयोग किया जा सकता है'। उनमें से एक ने उत्तर दिया।

'नम्बर्स' स्त्री ने फिर प्रश्न किया।

'रोयल तीन व पाच' एक ने नम्रता पूर्वक कहा।

स्त्री ने हाथ पर लगी घड़ी को देखा और बाद में एक सीटी बजाई। जिसकी आवाज़ समस्त जंगल में गूँज गई। उसके थोड़ी देर बाद ही उस स्थान के पूर्व की ओर से एक वैसी ही सीटी आयी। जिसको सुनकर स्त्री ने उन तीनों आदमियों से जो गाड़ी में मशीन लाये थे 'मज़ेस्टी आरहे हैं, 'तुम लोग जाओ बुलाने पर फिर आना'।

तीनों ने फौजी ढङ्ग पर सलाम किया और वापिस चले गये जिधर से आये थे। उनके जाने के बाद स्त्री ने फिर एक बार लगी हुई मशीन की जाँच की। मगर शीघ्र ही चन्द्रमा को छिपता देखकर उसने पास ही रखे टेबिल लेम्प को जला लिया जिसका कनेक्शन उसी बैटरी से था। लैम्प की रोशनी से काफी उजेला हो गया और पास की सारी चीजें साफ-साफ दीखने लगीं। कुछ ही मिनट बाद वह मनुष्य फिर लौट आया जिसे स्त्री ने पास के पर्वत पर दूसरे दिन के प्रयोग के लिये स्थान देखने भेजा था और मजेस्टी कह कर सम्बोधित किया था।

उसने आते ही एक बार भली प्रकार लगी हुई मशीन की जाँच की और जब सन्तुष्ट होगया तब मेजके पास आकर तनकर खड़ा होगया। उसने हाथों में से कपड़े के दस्ताने उतारे और रबड़ के दस्ताने पहन कर मेज का बटन जो कि टयूब के ठीक नीचे था दबा दिया। बाद में टयूब के नीचे लगी घड़ी की सुई घुमा अस्सी पर करदी।

'लेकिन मेरे ख्याल से आठ सौ फीट ऊँचा ही ठीक लगेगा'। पुरुष ने पूछा।

'हाँ! ठीक है यह भी केवल देखना ही है कि हमारा प्रयास कहाँ तक सफल है'। स्त्री ने जवाब दिया।

अच्छा तो हाथ में बोलने वाला आला ले लो। तीन कहते ही बोलना शुरू कर देना साफ २ बोलना ताकि ठीक रहे। बस चार लाइन नीला युवकों का सन्देश बोलना।' कह कर मनुष्य मेज के पास जा खड़ा हुआ।

'एक! दो! रेडी तीन!, कहने के साथ ही मनुष्य ने मेज पर लगे हुये काले बटन को दबा दिया जिसके दबते ही पास रखे हुये बड़े टयूब की काली सलाइयाँ निकल कर अपने आप मेज वाले टयूब में आने लगी और कुछ ही मिनटों में उस में से एक दम तेजी के साथ निकल २ कर आसमान में उड़ने लगीं। मेज में से निकलने के साथ ही उनके मुँहों में स्वयम ही आग लग जाती थी और वह आसमान में उड़ २ कर चमकदार शब्दों में स्त्री के मुख से आले में कहा हुआ सन्देश नीले आकाश पर अंकित करने लगे। दो मिनट बाद ही मशीन रोक दी गई। स्त्री ने आला हाथ से रख दिया और दोनों जने उपर निगाह करके संन्देश को पढ़ने लगे। संन्देश साफ हिन्दी में चमकदार हरफों में इस प्रकार लिखा था :—

''नीला पंजा' गरीबों का रक्षक तथा धनियों का भक्षक है। समाजिक एकता और ताकत ही संसार विजय का प्रतीक है।'

'डार्लिङ्ग ! यह प्रयोग ठीक उतरा। हमारी कामयाबी अब निश्चय है भगवान हमारा साथ दे रहे हैं' पुरुष ने पास खड़ी हुई स्त्री से कहा जिसकी निगाह अब भी आकाश की ओर थी।

'हां! मजेस्टी यह ठीक रहा निश्चय हम अपने व्रत में सफल होंगे भगवान ने तुम्हें अपना दूत बना कर पृथ्वी का भार हटाने के लिये ही भेजा है। स्त्री ने समर्थन किया।

'तब मैं; निश्चय ही संसार का एक मात्र अधिकारी होकर राज्य करूँगा। डार्लिंग ? तब तो मैं सचमुच ही संसार के लिये मजेस्टी बन जाऊँगा। पुरुष ने गम्भीरता से कहा।

स्त्री ने उत्तर दिया, 'इसमें क्या शक है।

ठीक इसी समय बांयी ओर एक सीटी सुनाई पड़ी। जिसके जवाब में पुरुष ने भी अपनी सीटी बजाई। थोड़ी देर बाद ही नम्बर सात ने आकर बड़े अदब से फौजी सलाम किया और पुरुष ने खत को पढ़ा और सात नम्बर कहता हुआ कि शीघ्र सामान प्रयोगशाला में पहुंचाने का आदेश देकर वह स्त्री को साथ लेकर बांयी तरफ वाले पेड़ों के झुरमुट में जा गायब होगया।

पड़ा रहता। माल बिल्कुल साफ़ रहता है और कोई भी यह नहीं पहचान पाता कि यह विदेशी है 'सेठ केशवदास कुँज-रूमल. बम्बई वालों ने यह सात लाख का आर्डर दिया है, यह आर्डर 'कुबेरमल श्रीनाथदास' करांची वालों का है और इस आर्डर बुक में तमाम भारतीय व्यापारियों के आर्डर हैं। इन सब के माल सादा आयेंगे और इनपर स्वदेशी मार्का पड़ा होगा। कोई यह न कह सकेगा कि यह माल विदेशी है।, दीक्षित ने कहते हुए सेठ पर गहरी नजर डाली।

'यह सब तो ठीक है मगर मैं ऐसा काम नहीं करता। धोखा देना महाभयङ्कर पाप है और जान कर अपने ही स्वदेश वासियों पर। मुझसे; यह अधम व्यापार न हो सकेगा।, सेठ ने रुखाई से कहा।

दीक्षित ने अन्यान्य तर्क वितर्कों द्वारा सेठ को राजी कर लिया। सेठगङ्गादीन ने पूरे एक जहाज माल का आर्डर जो लगभग ६ लाख रु० की कीमत का होता था आर्डर दे दिया। वायदा आर्डर बुक पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद दीक्षित ने जेब से निकाल कर एक सिगरेट सुलगाई और आराम से कुर्सी पर बैठा २ धुआँ सेठ की ओर अधिक फैकने लगा। करीब तीन मिनट ही में सेठको मूर्छा आगई। उसका सिर मेज पर आकर टिक गया और बेहोश होगया: दीक्षित ने एक बार दरवाजे कीतरफ़ ध्यान से देखा और फिर उठकर कमरे का बोल्ट कस दिया।

बहुत ही इत्मीनान के साथ उसने उठकर सेठ की जेब में पड़ा गुच्छा निकाल लिया और पास ही रखी तिजोरी को खोला। जिसमें से लगभग पौने दो लाख के नोट बरामद हुये, जिन्हें उसने अपने चमड़े के बक्से में भरा जो उसके साथ था और फिर एक लाल कागज का पर्चा निकाला जिसका रंग बिल्कुल खूनी था और उस पर सफेद स्याही से इबारत लिखी थी। दस्तखतों के स्थान पर एक ऐसा हाथ का पंजा बना था और उसके बीच हथेली पर नील रंग का स्वास्तिक का एक निशान था। वह पंजा उसने सेठजी की मेज के बीचों बीच कलमदान के पास एक छोटे से तीर के साथ लगा दिया। यह तीर एक फीट लम्बा था, जिसकी नाक काफी पतली थी और ऐसा मालूम देने लगा कि वह पर्चा किसी ने खिड़की के सहारे बाहर से फैंका है।

इन तमाम कामों से फुर्सत पाने के बाद दीक्षित ने सेठ की नाड़ी देखी जो लगभग होश में आने की सूचना दे रही थी। शीघ्रता से दीक्षित ने बैग संभाला और दरवाजा खोलकर बाहर आया। नौकर ने झुक कर सलाम किया और हाथ से बैग ले लिया और मोटर तक पहुंचाने गया। दीक्षित की मोटर नीचे खड़ी हुई थी, जिसमें एक बहुत बढ़िया पोशाक पहिने ड्राईवर बैठा था। दीक्षित के बैठते ही मोटर तेजी से दौड़ पड़ी और शीघ्र ही सड़क पर पहुँच कर गायब होगई।

दफ्तर की घड़ी ने टन्-टन् करके नौ बजने का संदेश दिया। इतने में सेठ की मूर्छा जागी। दिमाग कुछ भारी

मालूम किया और उन्हें ऐसा लगा कि मानो झपकी आ जाने के बाद जगे हों। आंख मल कर वह जब खड़े हुये उन्होंने देखा कि मेज पर तीर के नीचे एक खूनी रङ्ग का पर्चा लग रहा है। उनके विस्मय का ठिकाना न रहा ज्योंही पर्चा निकाल कर पढ़ा तो भय से थर-थर कांपने लगे और जैसे ही निगाह तिजोरी की तरफ गई जो उस समय खुली पड़ी थी। चीख मार कर बेहोश होकर गिर पड़े।

पांचवां परिच्छेद

'लाल कोठी'

कालबादेवी रोड़ से एक छोटा सा रास्ता ठाकुर द्वारा को गया है। जहां कि चौराहे का सिपाही सड़क की खबरदारी करता है उसी के बगल में जाकर वह रास्ता निकलता है। चौराये के ठीक बांई तरफ जैसे ही वह रास्ता खतम होता है। एक अठमँजली इमारत लाल-कोठी के नाम से मशहूर है। इस कोठी का मालिक 'ईदुल जी पिस्टन जी' हैं उनका बम्बई में बहुत बड़ा व्यापार है और शहर के गण्यमान् धनिकों में गिने जाते हैं। इस कोठी के नीचे ही उनका हाथीदांत के सामान तथा गलीचे इत्यादि चीजों का बहुन सुन्दर गौदाम है। पहली व दूसरी मंजिल में कपड़े का काम होता है। तीसरी मंजिल में त्रिसात खाना है। चोथी व पांचवी मंजिल में हर

काम के अलग २ दफ्तर हैं शेप दो मंजिल में काम करने वाले बड़े बड़े पदाशीन नौकर रहते हैं और सब से ऊपरी मंजिल पर 'ईदुल जी' अपने परिवार समेत रहते हैं।

'ईदुल जी' का परिवार बहुत बड़ा नहीं है। केवल एक छै: वर्ष का लड़का है, स्वयम् हैं और उनकी स्त्री है। यही तीन आदमी परिवार में हैं। कोई सगा सम्बन्धी रिश्तेदारी भी नहीं हैं। केवल 'जहाँगीर जी' ही एक ऐसा व्यक्ति है जिसे 'ईदुल जी अपना रिश्तेदार कह सकते हैं। केवल एक बार 'ईदुल जी ने उसे देखा था, जब की वह किसी काम से बम्बई आया था। 'जहाँगीर' ईदुल के चाचा का लड़का है उसका काम अदन में बड़े जोरशोर से चल रहा है! 'ईदुल पहले एक होटल करता था। मगर फिर जब जहाँगीर आया और उसने उसकी यह हालत देखी तो उसने यह लाल कोठी खरीद कर उसे दे दी और व्यापार को उत्साहित किया। उसने स्वयम् अदन से उसे माल भेजा ? ईदुदु ने मेहनत से काम किया और शीघ्र ही करोड़ों रुपया पैदा कर लिया। वह जहाँगीर जी का काफी अहशान मानता था और सदा जहाँगीर जी के लिये पसीना की जगह खून बहाने के लिये इच्छुक था।

दोपहर के लग-भग दो बजे होंगे कि डाकिये ने एक केबिल लाकर ईदुल जी को दिया। खोलने पर मालूम हुआ कि जहाँगीर जी ने अमरीका की मंडी में एक लाख गाँठ रूई का सौदा किया है। भाव निरन्तर गिर रहे हैं इस लिये उसने

लिखा था कि वह तय्यार रहे ताकि रुपये की जरूरत पर रुपया अदन भेजा जा सकेगा। रुपये का ब्यौरा केवल ६ लाख के लिये था। जहाँगीर जी ने केवल इतना ही माँगा था! ईदुल जी ने केबिल पढ़ा और अपने सेक्रेट्री को बुलाकर समझा दिया और केबिल दे दिया। खुद ने टेलीफोन लेकर मालूम किया तो शीघ्र ही जान लिया कि सचमुच रुई के भाव गिर रहे थे।

उस दिन सन्ध्या तक कोई बात न हुई थी। दूसरे दिन जैसे ही दस बजे कि एक अर्जेन्ट केबिल ईदुल जी को मिला। यह केबिल जहाँगीर जी ने अदन से लिखा था उन्होंने साफ लिखा था कि "रुई में ८० लाख का टोटा गया है। इसलिये मेरा आदमी एन०सी० मेकडोनाल एक खत लेकर बम्बई आ रहा है। तुम उसे पन्द्रह लाख रुपया दे देना वह वहीं से रुपया एक्सचेंज को रवाना कर देगा। आज वह 'सिटी आफ बगदाद' जहाज से रावना हुआ है और परसों सुबह आठ बजे वह तुम्हारे पास अवश्य पहुँच जायगा"।

ईदुल जी ने केबिल पढ़कर रख दिया और अपने काम में लग गये। दो दिन कुछ भी बात न हुई तीसरे दिन लगभग सात बजे प्रातः कालही ईदुल जी को बताया गया कि अदन से एन० सी० मेकडोनाल्ड साहब आये हैं। ईदुल जी ने सम्मान पूर्वक उन्हें ठहराया और वह साढ़े आठ बजे तक अपने प्रारम्भिक कामों से फारिग हुये। सफर से खराब कपड़े बदले और पास रखा अखबार उठाकर पढ़ने लगा। कि इतने

ही में नौकर चाय ले आया। चाय पीकर सिगरेट निकाली और आराम से बैठकर सिगरेट पीने लगा। काँटा नौ पर आया ही था कि नौकर ने सूचना दी कि सेठ बुलाते हैं और वह नौकर के साथ सेठ के कमरे में चला गया।

"आइये बैठिये मि० मैकडोनाल्ड। कहिये मिज़ाज कैसा है।" ईदुल जी ने पूछा।

"आप की कृपा है" कह कर मैकडोनाल्ड सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

"जहाँगीर जी के संदेश मुझको ठीक समय मिल गये थे। शोक है कि उनको इतना बड़ा नुकसान हुआ।" ईदुल जी ने कहा।

"अगर एक दम मानचेस्टर की खरीद बन्द न हो जाती तो हानि की अपेक्षा दूने लाभ की आशा थी। भगवान की इच्छा प्रबल है उसे कौन जान सकता है।" कह कर एक खत ईदुल जी के नाम का निकाल कर उनके हाथ में दे दिया।

लिफाफा काफी मजबूत था और ऊपर से उस पर जगह जगह मुहर लगाकर उसकी मजबूती पक्की करदी थी। ईदुल जी ने एक बार लिफाफा जांच कर देखा कि कहीं उस चिट्ठी का मजमून न बदल दिया हो। उसकी हालत से संतुष्ट होकर उन्होंने सावधानी से खोला, जिसमें लिखा था:—

अदन ता० २४ अक्तूबर सन् ४० ई०

प्रिय ईदुल जी,

मेरे दीये हुये दोनों केबिल आपको ठीक समय मिले होंगे। उनके द्वारा यह आप भली प्रकार जान गये होंगे कि मुझे रुई के काम में अस्सी लाख का नुकसान हुआ है। मेरा रुपया सोने व चाँदी में फँसा है, इसलिये कृपा करके इस समय मुझे पंद्रह लाख रुपये से मदद दो। मैं यह रुपया शीघ्र ही चुका दूंगा। आशा है इन्कार न करोगे। शेष कुशल है। तुम्हारी कुशल कामना में।

तुम्हारा भाई जहांगीर जी

नोटः--इस खत का वाहक एन० सी० मेकडोनाल्ड कम्पनी का जनरल मैनेजर है और विश्वास पात्र है। किसी सूरत की हिच किचाहट रुपया देने में न करना।

द० जहांगीर जी।

ईदुल जी ने खत गौर से पढ़ा और फिर दराज खोलते हुये कहा 'ईस्ट इण्डिया काटन एक्सचेंज 'नौ बजे खुल जाती है। अतः गाड़ी पर पहले नेशनल बेंक जाइये और चैक को कैस करा कर एक्सचेंज में रुपया जमा कर के आइये, तब तक मैं आपके खाने वगैरः का प्रबंध करता हूं।

'बहुत अच्छा! यही ठीक होगा' यही मैकडोनाल्ड ने कहा।

'यह लीजिये' कह कर चैक पर दस्तखत करते हुये ईदुल जी ने चैक कापी से अलग करके उसकी तरफ बढ़ा दिया। मैकडानल्ड ने एक बार चैक की जाँच की, किसी भी गलती की वजह से वापिस न आना पड़े।

"जी ! चेक तो ठीक रहा, मगर आप किसी एक अपने खास आदमी को भेज दीजिये ताकि बैंक रुपया देने में हुज्जत न करे। क्योंकि मामला ज्यादा रुपयों का है।" मैकडोनल्ड ने कहा।

"मैं आपके साथ अपना 'आउट डोर सेक्रेटरी' को देता हूँ वह बैंक से आपको रुपया दिला आयगा।" कहकर सेठ ने मेज पर लगी घन्टी के बटन पर हाथ रखा कि शीघ्र ही बौय हाजिर हुआ।

"हाण्डे बाबू" को बुलाओ नौकर को आदेश दिया।

थोड़ी ही देर में चाइना सिल्क का सूट पहने एक तीस वर्षीय नवयुवक ने प्रवेश किया। जिसका चहरा गोरा, आँखें बड़ी २ और होठों पर मुस्कराहट थी। उसने आते ही दोनों सज्जनों को यथा पूर्वक प्रणाम किया और सेठ का मुह ताकने लगा।

'हाण्डे बाबू ! आप मि० मैकडानल्ड हैं जिन्हें जहांगीर भाई ने अदन से रुपया लेने भेजा है। मैंने आपको चैक दे दिया है तुम मोटर में इनके साथ जाकर बैंक से रुपया दिलवा

दो क्योंकि ज्यादा रुपये का काम है शायद बैंक दुभ्भत करे और यह परदेशी भी है" सेठ ने कुर्सी छोड़ते हुये कहा।

बहुत अच्छा चलिये" कहकर पांडे ने मि० मेकडोनाल्ड को आने का इशारा दिया

केवल एक मिनट कहकर मैकडोनाल्ड अपने कमरे में चले गये शीघ्र ही अपना टोप व छोटी सी अटैची लिये कमरे से बाहर आगये ।

पांडे उन्हें लेकर लिफ्ट से नीचे उतरा और कार में बैठाकर ड्राईवर से नेशनलबैंक चलने का आदेश दिया ड्राईवर गाड़ी को लेकर नेशनल बैंक के लिये चल दिया। रास्ते में दोनों में कुछ बातें हुई और कुछ ही देर में गाड़ी नेशनल बैंक के पास जाकर रुकी। पांडे की गवाही से रुपये का भुगतान शीघ्र होगया। मैकडोनाल्ड ने नोट हाथ में ली हुई अटैची में रखे और फिर दोनों जने गाड़ी में आ बैठे। शीघ्र 'ईस्ट इन्डिया काटन एक्सचेंज' को चलने का आदेश दिया एस्प्लानेड, फोर्ट, फीरोजाबाद महता से गुजरती हुई मोटर कालवा देवी रोड पर अठमंजली विशाल एक्सचेंज भवन के सामने आकर खड़ी हुई।

'मुझे यहाँ करीब तीन घंटे लगेंगे इसलिये आप गाड़ी को ले जाइये मैं काम करने के बाद टैक्सी से आजाऊँगा। हाथ में अटैची लिये मोटर से उतरते हुए मैकडोनाल्ड ने कहा

"बहुत अच्छा" कह कर पांडे ने मोटर का दरवाजा बन्द कर लिया और मोटर लाल कोठी को चली गई।

करीब ग्यारह बजे होंगे कि नौकर ने सूचना दी कि एक बहुत घबराया हुआ अंग्रेज मनुष्य आपसे मिलना चाहता है। वह बेहद घबराया व भयभीत दीखता है। अपनी सुंघनी की डिबिया बंद करते हुये ईंदुलजी ने उपस्थित करने का आदेश दिया। शीघ्र ही एक लम्बा सुडौल अंग्रेज उनके कमरे में दाखिल हुआ। जिसकी पोशाक मैली होने के साथ ही अस्त व्यस्त भी थी और इस बात का प्रमाण दे रही थी कि वह बड़े लम्बे सफर से आ रहा है। उसके चेहरे पर घबराट की वजह से हवाईयाँ उड़ रही थीं और वह चहरे से भयभीत दीखता था। उसने अंग्रेजी में सेठ से 'गुड मार्निङ्ग' कहा और सेठ के आदेशानुसार कुर्सी पर बैठ गया।

"मैं अदन से आया हूँ। मेरा नाम एन० सी० मैकडो-नाल्ड है और 'जहांगीर जी फ्राम कम्पनी का जनरल मैनेजर हूँ। कपास के सौदे में नुकसान चले जाने की वजह से मैं आपके पास पंद्रह लाख रुपया लेने आरहा था जैसा कि आप को केबिल ग्राम द्वारा मालूम हुआ होगा।

"क्या आप जो कुछ कह रहे हैं ठीक है या बहक रहे हैं" सेठ ने पूछा।

"यह देखिये न मेरा कार्ड" कह कर उसने एक विजिटिंग कार्ड सेठ के हाथ पर रख दिया।

"मगर......" सेठ के नेत्र विस्मय से खुले रह गये।

"किसी हत्यारे ने मेरी जेब में जहाँगीर जी वाला दिया हुआ लिफाफा ऐसी सफाई से गायब कर दिया कि मैं हैरान हूँ। लिफाफे की वजह से मैं केबिन में सोया तक नहीं और निरन्तर जगते रहने पर भी वही हुआ जिसके लिये मैं डर रहा था।" उसने कहा।

"नौकर ने इतने में ही एक तीर जो करीब एक फुट लम्बा था और जिसकी नौक काफी चमकदार व पैनी थी तथा एक लाल रङ्ग का खत लाकर सेठ जी को दिया। खत का रङ्ग बिल्कुल खूनी था और उस पर सफेद स्याही से कुछ लिखा था। नीचे हस्ताक्षर के स्थान पर एक हाथ का पंजा तथा हथेली के मध्य स्वास्तिक का नीला निशान था। खत का मजमून इस प्रकार था:—

"समाज को रुपये की सख्त जरूरत है जितनी शायद तुमको नहीं। वैसे भी यह रुपया हमारे पास कभी न कभी आही जाता मगर आज अपना बल दिखाने के लिये यह रुपया तुमसे लिये जा रहे हैं ताकि तुम्हें मालूम हो सके कि जरूरत-मन्द रुपया किस अक्ल से ले सकता है। बेकार है रुपये के लिये हाथ पैर पटकना क्योंकि घंटे भरके अन्दर रुपया १००मील से अधिक चला जायगा। आदाबअर्ज" द० पजा

"जरूर दगा हुई" कहकर सेठ खत पढ़ने के साथ ही चीख पड़ा। रुपये का गम उसके सीने पर ऐसा सवार हुआ

कि वह कर्त्तव्य विमूढ़ सा होगया। मैकडोनाल्ड भी अवाक रह गया कुछ देर बाद सेठ ने टेलीफोन उठाया और पुलिस चौकी का नम्बर मिला कर कहना शुरू किया।

"हलो! लाल कोठी" सेठ ने कहा।

दूसरी तरफ भी सांय २ के साथ जवाब आया 'हलो! लाल कोठी'।

झुंझला कर सेठ ने टेलीफोन पटक दिया और सिर पर हाथ रख कर ठंडी आह खींची और सिर मेज के सहारे टिका कर शान्त बैठ गया।

छठवां परिच्छेद

दुर्गम दुर्ग की पहली बैठक

रात्रि के सात बजे थे। चन्द्रमा अपनी पूर्ण कला से निकल रहा था। सर्वत्र चांदनी फैल रही थी। दुर्गम-दुर्ग के सामने वाले मैदान में बड़े से बट वृक्ष के नीचे दो कुर्सियां रखीं थीं और एक मेज जिस पर एक लाल कपड़ा बिछा हुआ था और मेज पर एक मौमी शमादान, एक कलमदान व कुछ कागज रखे थे। बांई ओर एक छोटा सा चमकदार लोहे का डिब्बा रखा था और सीधे हाथ पर एक अलार्म पीस घड़ी व घन्टी रखी थी, दोनों कुर्सियों के पीछे, एक सात फीट लम्बा

और उसमें ही थोड़ा नकल झंडे के बराबर खड़ा था, जिसके ऊपर लाल रंग पुता हुआ था और भाले का एक चमकदार चांदी हाथ का पंजा लग रहा था, जिसकी हथेली पर चमकदार नीलम का स्थापित नग लगा था। नीचे सफेद रंग में केवल लिखा था :—

"ताकत व सामाजिक एकता संसार विजय का प्रतीक है।"

ठीक साढ़े सात बजने तक लोग मैदान में जमा होने शुरू होगये। आने वाले लोगों की पोशाकें स्याह रङ्ग के गरम कपड़े की थीं। जो बिल्कुल फौजी ढङ्ग पर सिली हुई थी और उनके गर्म होने का यही काफी सबूत था कि उनकी सर्द हवा चलने पर भी यह लोग कांप नहीं रहे थे, वरन अपने आपको पूर्ण रूप से आनन्द मग्न पाते थे। थोड़ी देर में करीब पांच सौ आदमी जिनमें से लग-भग आधे २ अलग अलग बैठ गये। बीच में इतना स्थान छोड़ दिया कि निकलने को रास्ता रह सके।

आठ बजने के साथ ही दो मूर्तियां बिल्कुल लाल रङ्ग की सूती फौजी पोशाक में आते हुए दिखाई दीं। इन लोगों के सीधे हाथों पर सोने का ठीक वैसा ही नीलम जटित पंजा जो घड़ी के बराबर था बंधा हुआ था। उनके आतेही सबलोग शान्ति पूर्वक खड़े होगये। पहले तो दोनों ने सिपाहियाना

ढङ्ग पर उस तख्ते पर लगे हुए निशान को सलाम किया और कुर्सियों पर बैठ गये। उनके बैठने के बाद तमाम खड़े हुये आदमियों ने सिपाहियाना ढङ्ग पर सलाम किया। जूतों के बजने की आवाज एक बार शान्त जंगल में गूँज उठी।

कुछ सो ने के बाद सीधे और ब ठा हुआ सुडौल मनुष्य उठ खड़ा हुआ और उसने कहना शुरू किया :-

"मेरे बहादुर साथियो ! तुम लोगों को आज इतनी तादाद में मेरे मनके माफिक जमा देख कर मेरा हृदय असीम हर्ष महसूस कर रहा है। कुछ मैंने सोचा है और जिस काम के लिये मैंने बीड़ा उठाया है मुझे, विश्वास है कि वह अवश्य ही पूरा होगा। समाज कितना गिर चुका है। आदमी में स्वार्थ तत्परता कितनी ठूँस २ कर भर दी गई है। एक दूसरे के खाने के लिये तैयार बैठा है। लोग अपने स्वार्थ में इतने अन्धे हो रहे हैं कि उनको अपने अस्तित्व का ज्ञान भी नहीं रहा है।

केवल भारतवर्ष ही नहीं वरन संसार के तमाम देशों में स्वार्थप्रियता अपना राज्य स्थापित कर चुकी है हमारा उद्देश्य समाज का सुधार करना है और मैंने उसको पूर्ण तथा पूरा करने के लिये बीड़ा खाया है हमारा उद्देश्य किसी भी देश की राजनीति में दखल देना या उसके काम में नुकसान पहुंचाना नहीं वरन समाज को सभ्य बना कर सही रास्ते पर लाना है। माना कि किसी देश की शासन व्यवस्था

सकता है। अगर ऐसा हुआ ? भारतीय समाज की व्यवस्था खराब होने का यह है कि उसके अधिकारी वर्ग की आत्मा र आत्मा भ्रष्ट हो चुकी है। अब हम आत्मिक रूप दूर कर देंगे तो इन लोगों का भी परिष्कार हो जायगा क्योंकि यह लोग भी समाज के एक अंग हैं। केवल सुधार होने ही राज्य की व्यवस्था अपने आप ठीक हो जायगी और किसी प्रकार का प्रयास उसे ठीक करने के लिये आवश्यक न होगा।

राज्य की व्यवस्था ठीक करने का मतलब है देश के शासन में हस्तक्षेप करना और शासक से मुठभेड़ करना। जिसका नाम केवल क्रान्ति है। राज्य की भी ताकत बरबाद होगी और साथ ही सुधारक की भी। सुधारक के अनिष्ट होने की अधिक सम्भावना है। पिछले इतिहास के देखने से पता लगता है कि सुधारक कम अपने कार्य को सिद्ध कर सके हैं और सदा ही उन्हें अपने मुंह की खानी पड़ी है। शासक व्यवस्था मान लीजिये कि ठीक कर भी दी उसका मतलब यह नहीं है कि समाज ठीक होगया केवल अधिकारी वर्ग ही सुधर पाया और दुबारा अधिकारी वर्ग फिर भी कोई मेहनत करे और समाज को ठीक रास्ते पर लावे इस प्रकार पहले तो शासक से मुठभेड़ होने के कारण सुधारक को अपने निजी अनिष्ट की अधिक आशंका है और फिर समाज के सुधारने के लिये अलग समय भी चाहिये।

संसार का शासक एक नहीं है। विभिन्न देश विभिन्न प्रकार से शासित किये जाते हैं और संसार भर के अगर

तमाम देशों का सुधार शासक से मुठभेड़ लेकर करना है तो काफी समय चाहिये और इतनी बात कोई मनुष्य अपनी जिन्दगी में नहीं कर सकता। इसलिये हर पहलू को देखते हुये मैंने यही निश्चय किया है कि समस्त संसारिक समाज का सुधार करना चाहिये जो किया जा सकता है और उसके सुधार से समस्त विविध प्रकार के सुधार अपने आप हो जाँयगे।

मेरे शेरो! मेरे कहे को गलत न समझना। संक्षिप्त में केवल इतना ही समझना कि हमारा उद्देश्य समस्त संसार के समाज अर्थात मानव समाज का सुधार करना ही है। न कि किसी भी देश के शासक या शासन व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाना! भारत में हमारी सुधारक कमेटी का यही मुख्य केन्द्र है। इसका नाम 'दुर्ग दुर्ग' है, अपनी सभा की भाषा में हम इसे 'पेलिस्टाइन' कहेंगे, ताकि किसी भी अजनबी के सामने कहने पर हमारा मतलब वह न समझ सके।" इतना कहने के बाद वक्ता अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

उसके बैठते ही बायीं ओर वाली कुर्सी पर बैठी मूर्ती उठी। उसके कपड़े भी ठीक पहले जैसे वक्ता के थे मगर सीना कुछ उभरा हुआ रहने की वजह से यह साफ जाहिर हो जाता कि वह औरत है और फौजी पोशाक अपने बदन पर पहने हैं। उसके बोलते ही उसकी बारीक आवाज ने इस बात की पुष्टी

को कि वह जान-सुन औरत ही है। वह एक दम अपना बदन स्थिर करके खड़ी थी, एक बार इधर उधर निगाह डालने के बाद उसने कहना शुरू किया:—

"बहनों भाइयों ! जैसा कि आगे हमने आपको 'हिज मजेस्टी' में बताया है कि हमारा उद्देश्य किसी देश विशेष की शासन व्यवस्था में सुधार करना नहीं है, वरन संसार भर के मानव समाज को सुधारना है संसार के किसी देश की हालत देखिये। आप सबको शीघ्र मालूम हो जायगा कि समाज में कितनी त्रुटि है। भाई २ को मार डालने को तय्यार है, स्त्री पति को, गरज यह कि स्वार्थ के वश दुनिया अन्धी हो रही है। उसे अपने भले-बुरे या दैविक नियमों का किंचित भी ख्याल नहीं है। ऐसी दशा में हमें चाहिये कि हम उन्हें नींद से जगायें और मानव समाज का सुधार करने का प्रयत्न करें।

हमें इस बात का पूरा ज्ञान है कि सुधार के कार्य में हमें काफी तरद्दुद उठाना पड़े। ताकत का भी स्तेमाल करना पड़ेगा। मगर हम चूकेंगे नहीं, हम ताकत का भी स्तेमाल करेंगे, अपने काम के बीच आने वाले कंटकों को हटाने के लिये चाहे हमें खून क्यों न बहाना पड़े, मगर हम अपने काम के उद्देश्य से विचलित न होंगे। मेरी कामना है कि भगवान तुम लोगों को भी ताकत दे और हमारे किये हुये व्रत में आप लोग भी सफल हों। मुझे यही आशा है कि आप लोग अपने

पथ से, जिसके लिये हम आपको हर प्रकार सहायता देंगे, किंचित भी विचलित न होंगे" कहकर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गयी।

हिज मजेस्टी ने फिर खड़े होकर कहना शुरू किया मुझे उम्मीद है कि तुम सब लोग भली प्रकार समझ गये होगे कि हमारा क्या उद्देश्य है। उम्मीद है कि तुम लोग अब अपने कर्त्तव्य का ध्यान रखोगे और अपने अफसर का हुक्म सदैव मानते रहोगे। आप सब लोगों की परीक्षा अभी होगी। आप सब को प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी और जो जरा भी हिचकिचाया वह दण्ड का भागी होगा। मैं पहले राजगढ़ या पेलिस्टाइन वाले पुरुषों को बुलाऊँगा, बाद में सिंहगढ़ वाले मेम्बरों का नम्बर आयगा।"

"अच्छा पहले राजगढ़ वाले एक २ करके आये" कह कर मजेस्टी ने बांये हाथ की तरफ वाली पंक्ति को इशारा किया।

इतने ही में हिज मजेस्टी ने लोहे का चमकदार डिब्बा खोला जो मेज के बांई ओर रखा था और उसमें से एक आदमी के बांये हाथ का कटा हुआ पन्जा निकला, जिसकी बीच हथेली पर सच्चे नीलम का स्वास्तिक गड़ रहा था। कलाई से अब भी लोहू की बूंदे टपक रहीं थीं। देखने से हिम्मतवर आदमी के रोंगटे खड़े होजाते थे। मजेस्टी ने पंजा हाथ

में उठा लिया और मेज से कुछ दूर होकर उसने फिर कहना शुरू किया...'इस गढ़े में देश का प्रत्येक आदमी इस प्रकार लगाए ताकि उसका हाथ या बदन का कोई हिस्सा कलाई से गिरने वाले खून से स्पर्श न हो और मुँह से कहना पड़ेगा कि हम यहाँ अपने पास आये हुये हुक्म का सावधानी से पालन करेंगे और अपनी जान पर खेलकर भी उसे पूरा करेंगे।"

राजगढ़ पंक्ति में उठकर प्रत्येक आदमी ने पंजा हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की और फिर उसके बाद सिंहगढ़ वालों ने मगर किसी भी आदमी के हाथ या बदन पर खून न लगा और न कोई तनिक भी हिचकिचाया ही। मजेस्टी फिर उठा और उसने कहना शुरू किया:—

"बहादुरो! तुमने प्रतिज्ञा देते समय इस बात का परिचय दे दिया है कि देश में अब भी मन के माफिक जवान मनुष्य मिल सकते हैं। केवल कमी है, योग्य चुनने वाले की। मुझे विश्वास है कि मैं तुम लोगों की मदद से अपने कार्य में सिद्ध जरूर होऊँगा और यह कार्य तो तुच्छ ही है। अगर चाहूँ तो तुम लोगों की मदद से संसार विजयी बन सकता हूँ। मुझे अपने ग्रहण किये पथ पर ही चलना, जहाँ तुम मेरी हर तरह मदद दोगे।

आज की सभा हमने जिस उद्देश्य से की थी। उसमें हम पूर्णतया सफल हुये हैं। आशा है कि हम आगे भी अपने

मनोरथ में सफल होंगे। आज की सफलता के लिये मैं आपको बधाई देता हूँ।" यह कह कर मजेस्टी ने सभा को सिपाहियाने ढङ्ग से सलाम किया।

हर मजेस्टी ने भी उठकर बधाई दी। तत्पश्चात दोनों जने उठे और साथ ही तख्ते पर लगे पंजे को सलाम करके पंक्तियों के बीच से जाने लगे। समस्त सदस्यों ने एक दम खड़े होकर पहले ही ढङ्ग से सलाम किया। मजेस्टी जोड़े के जाते ही मेम्बर भी कतार बांधकर शान्ति पूर्वक दुर्ग में चले गये। इस प्रकार सभा विसर्जन हुई और फिर पर्वतीय तलहटी को देखकर कोई मनुष्य यह नहीं कह सकता कि कुछ देर पहले यहाँ पर एक विशाल फौजी सभा हुई होगी।

पांचवां परिच्छेद

रुद्रकंठ कौतूहल

चाय पीते समय रुद्रकंठ ने अखबार उठाकर ज्योंही देखा तो मुख पृष्ठ पर ही बड़े अक्षरों में लिख रहा था:—

"लाल कोठी में रहस्यमय घटना"

'ईदुल जी पिस्टन जी' फर्म के मालिक ईदुल जी के चचेरे भाई जहांगीर जी ने जो कि अदन के सब से बड़ा व्यापारी कम्पनी 'जहांगीर जी फ्राम जी, के मालिक हैं

अपने भाई इन्दुल जी को जिन्हें लाल सागर पार की भूमि के लिये मँगवाया था उनका लाने के लिये जहाँगीर जी ने अपना विश्वास पात्र आदमी जो उनके यहाँ बीस साल से जनरल मैने-जर के पद पर सुशोभित था भेजा मि० एम० सी० मैकडोनाल्ड जो कि जहाँगीर जी की कम्पनी का जनरल मैनेजर था। रास्ते मिलावट होशियारी से और किसी साथ जहाँगीर जी के मत की हिफाजत करता रहा। मगर न जाने कैसे और कब लिफाफा बदल गया और प्रतिवादी ने आकर दारा इन्दुल जी से शीघ्र ले लिया और गायब हो गया। पुलिस ने मौके पर पहुँच कर जांच की और मुंबई में मि० मैकडोनाल्ड को हिरा-सत में लिया। इन्दुल जी ने जमानत देकर उन्हें छुड़ा लिया है और पुलिस की जांच जारी है।"

इस घटना के पढ़ने के बाद रुद्रकंठ चाय खतम करके अपने निजी कमरे में गये और इसे काट कर अपनी निजी फाइल में लगा लिया। कई बार उसे फिर पढ़ा और सोचते रहे। अन्त में उन्हों ने यही फैसला किया कि दूसरे दिन तक के लिये यह मामला छोड़ देना चाहिये, जब तक कि पूरा हाल अखबार में न निकल आये।

'नवीन भारत' समाचार पत्र के आते ही सबसे पहले रुद्रकंठ ने कल वाला हाल ब्योरे वार पढ़ने के लिये पत्र खोला। ऊपर निगाह डालते ही बड़े २ अक्षरों के साथ लिखा था:—

"एक नवीन आक्रमणकारी दल की खोज" नीचे लिखा था:— कल वाली लाल कोठी में जो घटना हुई थी, उनका पूर्ण विवरण इस प्रकार है जो कि स्वयम् ईदुल जी व मैकडोनाल्ड ने बयान किया है—'जहांगीर जी को अमरीकन मंडी में एक लाख रूई की गांठ खरीदने पर अस्सी लाख रुपया का घाटा आया था। घाटा पूर्ति के लिये उन्हें पन्द्रह लाख रुपयों की सख्त जरूरत पड़ी इसलिये उन्होंने अपने जनरल मैनेजर मैकडोनाल्ड को रुपया लेने के लिये रवाना किया और इधर ईदुल जी को भी केबिल ग्राम देकर सूचित कर दिया कि मेरा आदमी आ रहा है, उसके पास मेरा एक खत है उसे तुम रुपया दे देना ताकि वहीं से वह रुपया भेज दे।

नियत समय पर एक आदमी लाल कोठी पहुंचा जो करीब तीस वर्षीय हृष्ट पुष्ट युवक था। उसके कपड़े व सामान यह बता रहा था कि वह जरूर कहीं सफर से आ रहा है। ईदुल जी को उसने मि० मैकडोनाल्ड कहकर अपना परिचय दिया। इसलिये ईदुल जी ने उसका उचित प्रबंध कर दिया बातचीत के समय उसने ईदुल जी को जहाँगीर जी का लिखा खत दिया। जिसके पढ़ने पर ईदुल जी ने पन्द्रह लाख का चैक दे दिया और अपना आदमी मि० पाण्डे को भेज कर नैशनल बैंक से उसका चैक भी भुनवा दिया चैक के ऊपर उसने रुपया लेने के लिये दस्तखत भी एन० सी० मैकडोनाल्ड ही किये। मि० पांडे के साथ वह ईस्ट इंडिया काटन एक्सचेंज तक गया

और यह कह कर उसे वहां काफी देर हो गयी। पांडे को तथा गाड़ी को वापिस कर दिया।

मि० मैकडोनाल्ड जो एक प्रौढ़ मनुष्य है और जाति के अंग्रेज हैं। करीब ग्यारह बजे लाल कोठी पर घबराये हुये आये और उन्होंने आकर बताया कि वह जब जहाज पर सफर कर रहे थे तो किसी प्रकार उनकी जेब में से जहांगीर जी का लिफाफा गायब हो गया और ठीक वैसा ही एक खाली लिफाफा उन्हें अपनी जेब में मिला। जिस कमरे में पहले वाले सज्जन ठहरे थे, उस कमरे में देखने पर मेज के ऊपर एक फीट लम्बे तीर में एक खूनी रङ्ग का खत लग रहा था। थोड़ी सी इबारत जो खत में सफेद रङ्ग में लिख रही थी, के बाद हस्ताक्षर वाली जगह पर एक हाथ के पंजे का निशान था और उसकी हथेली पर नील रङ्ग से स्वास्तिक बना हुआ था।

खत में कोई ऐसी खास बात न थी। केवल यही लिखा था कि हमें रुपये की जरूरत है, इसलिए रुपया लिये जाते हैं।"

सम्पादक ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में इस घटना पर बहुत कुछ आक्षेप किया था और सरकार से दल की खोज लगाने की प्रार्थना की थी। सम्पादक के शब्द बहुत जोशीले थे और उसके कुछ उद्धृत नीचे दिये जाते हैं:—

"अगर लाल कोठी जैसी विशाल तथा सुदृढ़ इमारत में धोखा देने में भी कोई संगठन सफल होगया। तो गरीबों के झोंपड़ों की रक्षा किस प्रकार हो सकेगी। जब धन तथा बल ही अपनी रक्षा करने में सर्वथा असफल होगया। तो यह कैसे होसकता है कि वह किसी प्रकार भी गरीब तथा निर्बलों की रक्षा कर सकेगा।

ईदुल जी जैसा धनवान तथा वैभवशाली मनुष्य भी धोखा खागया, तो निर्बलों की क्या गिनती है। गरीब लूटे जांयगे और मारे डाले जांयगे...सरकार का परम धर्म है कि वह ऐसे संगठन का अवश्य नाश करे कि जिसने मानव समाज की इज्जत पर हमला किया हो।

आक्रमणकारी संगठन नीच तथा खूनी है। ऐसे मनुष्यों को संसार में रहने की कोई जरूरत नहीं। उसका नेता दुष्ट, मेम्बर कमीन हैं। अतः वह देश के लिये शाप है।"

रुद्रकंठ सांस रोककर एक दम तमाम सम्पादकीय पढ़ गया और फिर एक दम बड़ बड़ा कर "मूक सम्पादक ने मौत को चुनौती दी है।" वह दिन भी किसी न किसी प्रकार कट गया और तीसरे दिन सुबह जब रुद्रकंठ चाय पीने बैठा तो उसने देखा कि मेज पर 'नवीन भारत' की जगह 'राष्ट्र' रखा है। नौकर से पूछने पर मालूम हुआ कि अखबार वाला कह गया था कि 'नवीन भारतआज बन्द है। रुद्रकंठ चाय पीने

के बाद अखबार लेकर अपने कमरे में चला गया। सिगरेट जलाई और अखबार खोलकर कुर्सी पर बैठ गया। हाथ में खोलते ही उसकी नजर मुख्य लाइनों पर पड़ी—

'नवीन भारत का सम्पादक आक्रमण कारी दल का शिकार'

शोक के साथ लिखना पड़ता है कि हृदयनाथ शर्मा सम्पादक 'नवीन भारत' कल रात के नौ बजे घर से टहलने के लिये बाहर निकले और घूमते हुये कम्पनी बाग तक गये। लेकिन जब रात के एक बजे तक घर वापिस न हुये तो नौकर उनको देखने के लिये निकला। जिसने उन्हें बाग के दरवाजे के बाँयी तरफ पेड़ों के पास मरा पाया। उनके सीने में एक फुट लम्बा तीर घुसा हुआ था और उसमें एक लाल खूनी रङ्ग का खत लग रहा था! जिस पर सफेद रङ्ग की स्याही से साफ लिख रहा था। 'आज की सम्पादकीय टिप्पणी में बिना सोचे समझे हम लोगों को लानत देते हैं! उसी का बदला दिया गया है। लोग नसीहत लें" हस्ताक्षर के स्थान पर वही हाथ का पंजा बन रहा था। जिस पर नीले रग का स्वास्तिक हथेली पर बना था।

मि० शर्मा की उम्र अधिक न थी। उनके निकट सम्बन्धियों में भी कोई न था। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि वह मृत को शान्ति प्रदान करे।"

रात के आठ बजे करीव रूद्रकंठ ने ज्योंही आकाश की तरफ देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा वह एक दम सर्र से जीना द्वारा छत पर पहुँचा । रात अन्धेरी थी और कहीं २ एक दो तारे दिखाई पड़ते थे । बांयी ओर बहुत ही चमकदार शब्दों में लिख रहा था:—

"लाल कोठी वाली घटना ने लोगों में कई प्रकार की निर्मूल धारणाएँ भर दी हैं । सम्पादकों ने बिना सोचे समझे हमें खूनी व मानव जाति का सबसे नीच शत्रु कह कर पुकारा है । लोग इतना ही समझ लें हमें मानव जाति में सुधार करना है और उन्हें सचाई के रास्ते पर लाने का प्रयत्न करना है जिसे लोग सतयुग कहते हैं । अपनी साधन पूर्ति के लिये हम साम, दाम, दण्ड भेद सब का प्रयोग करेंगे । हम देश द्रोही नहीं बल्कि समाज सुधारक हैं ।"

हस्ताक्षर के स्थान पर चमकदार हाथ का पञ्जा बन रहा था और बीच हथेली पर नीले रङ्ग से स्वास्तिक बना था । सन्देश इतना साफ था कि आसानी से पढ़ा जा सकता था । रूद्रकंठ ने कई बार पढ़ा और वह निरन्तर पढ़ता रहा जब तक कि घंटे भर बाद संदेश एकाएक गायब न होगया ।

रूद्रकंठ नीचे उतरकर तो चला आया परन्तु भारी मन से नीचे आकर सोचने लगा कि दल अत्यन्त प्रबल है और संचालक विद्वान एवम विज्ञान का भी पारंगत है । इसी

समस्या पर सोचते रहने के बाद वह सोया। आजका संदेशा पढ़ कर उसे सबसे अधिक कौतूहल हुआ।

आठवां परिच्छेद

नार्दन इन्डिया सैन्ट्रल बैंक में डांका

"मेरा नम्बर ७५८० है और नार्दन इण्डिया सैन्ट्रल बैंक, अमीनाबाद से बोल रहा हूँ।"

"हलो ! मैं सार्जेंट हरीसिंह ड्यूटी पर हूँ। कहिये"

"आप शीघ्र घटना स्थल पर आइये यहां के खजाने का सारा रुपया गायब है। शीघ्र आइये पूरा इन्तजाम के साथ" प्रतिवादी ने कहा।

अभी कुछ मिनटों में आप मुझे यहाँ देखेंगे" हरीसिंह ने टेलीफोन रखते हुये कहा।

थोड़ी देर ही में मय दो दर्जन जवानों के साथ सुपरिन्टेडेन्ट पुलिस हुकुमत राय, डिप्टी चांदसिंह, सार्जेंट हरीसिंह मौके पर आ उपस्थित हुये। मैनेजर जगदीश प्रसाद उन सब अफसरों को अपने कमरे में सम्मान पूर्वक ले गया और इस तरह इजहार किया:—

हर रोज की भांति कल हम अपना दफ्तर ठीक पांच बजे बन्द न कर सके। कारण यह था कि कल ही कानपुर ब्रांच

से चालीस लाख रुपया आया था इसलिये इस रुपये का हिसाब मिलाकर सेफट्रेजरी में बन्द करते २ सात बज गये और तब कहीं ताले वगैरह लग जाने के बाद लोग अपने २ घर गये। आज सुबह दफ्तर रोज की भांति खुला कोई भी किसी सूरत की बात न थी। सब क्लर्क अपने २ काम पर आगये।

करीब दस बजे मैं भी अपने दफ्तर में आगया था। इतने में हैंड कैशिर ने आकर मुझ से कहा कि कुछ रुपये की जरूरत है खजाने से दे दीजिये। अतः मैं इनके साथ तहखाने में गया तो मेरे आश्चर्य का पारावार न रहा। स्ट्रांग रूम की मोटी सलाखों को काट कर एक आदमी के जाने लायक रास्ता बना हुआ पाया। अन्दर जाकर देखता हूँ कि उसमें केवल सेयर्स या सिक्यूरिटी ब्रांड वाली अलमारी से तो कुछ नहीं गया था वरना स्ट्रांग रूम में कुछ न रहा था। केवल खाली संदूक, तिजोरियाँ, अलमारियाँ रखी थी। सब सामान को एक निगाह से देखकर मैं शीघ्र ही खजाँची के साथ वापिस आगया और आप लोगों को सूचना दी।"

"अच्छा हम जरा आपके स्टाफ वालों को देखना चाहते हैं और जिसका चाहेंगे ब्यान भी ले सकेंगे"? मि० राय ने कहा।

"इसमें क्या हर्ज है" मैनेजर ने कहा।

"तो आप हमें आफिस में ले चलिये यहाँ सब का बुलाना ठीक न होगा" मि० राय फिर बोले।

मैनेजर तीनों पुलिस अफसरों को लिए पहले बड़े हाल में गया। बैंक के बाबू काम करते रहे मि० राय ने आगे चलने को कहा और खजाने का कमरा देखा। वहाँ का स्टाफ देखकर वह फिर एकाउन्टेन्ट के कमरे में पहुँचे और फिर वापिस मैनेजर के कमरे में आ बैठे। मगर कोई ऐसा आदमी न दीखा कि जिस पर तनिक भी संदेह किया जा सके।

"जरा आप अपने नौकरों को तो बुलवाइये" मि० राय ने फिर कहा।

घंटी बजाते ही राय ने आकर मैनेजर को सलाम किया। मैनेजर ने उससे तमाम नौकरों को बुलाने का हुक्म दिया। थोड़ी सी देर में तमाम नौकर आ गये। मि० राय ने सब को विदा किया। केवल एक पहरेदार को रख लिया, जो शक्ल से जरा भयभीत और गवाँर लगता था।

"तुम्हारा क्या नाम है" मि० राय ने पूछा।

"मेरा नाम हजूर माधोसिंह जाट है।" पहरेदार ने उत्तर दिया।

"माधोसिंह कल तुम किस वक्त से किस वक्त तक ड्यूटी पर रहे।"

"शाम के आठ बजे ड्यूटी करके फिर रात के बारह पर आया और सवेरे चार बजे तक रहा।"

"सारी रात जागते रहे या सोते रहे।"

"जागता रहा हजूर और तमाम घन्टे मैंने ठीक समय पर बजाये थे। आज तक भी मैं ड्यूटी पर नहीं सोया।"

"किसी सूरत की तुमको आवाज या आहट सुनाई दी थी या नहीं।"

"नहीं सरकार"

"हम जानते हैं माधोसिंह तुम्हारा डाके में हाथ जरूर है, वरना क्या यह हो सकता है कि तुम पहरा देते रहो और अन्दर लोहे की सलाखें कट जांय, माल निकल जाय और तुम कुछ न जान सको। तुम ऐसे थोड़े ही बताओगे। कोतवाली में चल कर सारा हाल पूछ लिया जायगा। तुमको हिरासत में लिया जाता है।"

"न हजूर मैं तो मर जाऊँगा मेरे बाल बच्चे······।" कहते २ माधोसिंह चीखकर रो पड़ा।

मि० राय के कहने पर और मैनेजर की मर्जी पर सार्जेंट हरीसिंह ने एक कांस्टिबिल बुलाकर माधोसिंह उसके सुपुर्द किया।

"अच्छा मि० जगदीशप्रसाद हम लोग जाने से पहले घटना स्थल यानी स्ट्रांग रूम को देखना चाहते हैं।" मि० राय बोले।

आदमी अगर रास्ता पार करने की कोशिश करे तो उसको अधिकार था कि उसके, पास रखी बन्दूक की गोली का निशाना बना सके।

ठीक इसी कोठी के सामने दूसरी तरफ एक कोठरी थी, जिसमें होकर रास्ता दूसरी मंजिल को जाता था। इस कोठरी से उस कोठरी तक तक जाने के लिये कोठरीवाले दरवाजे से कुछ दूर हटकर एक छोटी मोटर खड़ी थी। जिस में केवल दो आदमी बैठ सकते थे। क्योंकि सहन की चौड़ाई कम से कम एक फर्लांग होगी! इसलिये यह सहन रखा गया था, ताकि जाने आने में वक्त कम लगे। इस प्रकार की आठ मोटरें सहन में रखीं थी! यह मोटरें पेटरोल से नहीं चलती थी, वरन् इसमें कमानी लगे थे, जिसके चलने से किसी सूरत की जरा भी आवाज नहीं होती थी। रोशनी के लिये हर कमरे में बिजली लग रही थी और आंगन में चारों तरफ खम्भे लग रहे थे और उन खम्भों के सहारे तारों पर करीब पचास बल्ब लग रहे थे, जो रात को दिन बनाये रहते थे। तमाम कोठरी व आंगन बिल्कुल साफ रहता था और कमरे भी रहने वालों के सामान से पूर्ण सुसज्जित रहते थे।

आंगन के बीचो बीच और कुये की सीधी तरफ एक छोटा सा गोल कमरा था। जिस पर हिन्दी में लिखा था— कार्य

संचालक भवन न० १ राजगढ़' इस कमरे के बीच में एक बड़ी सी मेज रखी थी और एक कुर्सी रखी थी। सामने एक तालिका टंग रही थी जिस पर एक से लेकर सवा सौ तक नम्बर लिख रहे थे। मेज पर लाल खूनी रङ्ग का कपड़ा बिछ रहा था। एक कलमदान रखा था और कुछ कागज। कमरे में चारों तरफ लोहे की मजबूत अलमारियाँ लग रही थीं और कुर्सी के ठीक पीछे दीवाल के ऊपर व दरवाजे के ठीक सामने एक लाल खूनी रङ्ग का दो फुट लम्बा व दो फुट चौड़ा तख्ता लग रहा था। जिस पर सोने का बना चमकदार एक हाथ का पंजा बना था और उसकी हथेली के बीचो बीच नीलम का स्वास्तिक बन रहा था। उसके नीचे सफेद रङ्ग से लिखा हुआ था—'ताक़त व सामाजिक एकता संसार विजयी है।' कमरे का दरवाजा सङ्गीन लोहे का बना था और दरवाजे पर एक सिपाही हमेशा पहरा दिया करता था।

दूसरी मंजिल के जाने के लिये दो रास्ते थे एक आम रास्ता तो कोठरी में होकर जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है और दूसरा रास्ता गोल कमरे में मेज की सीधी तरफ वाले हरे रङ्ग की अलमारी में होकर। इस रास्ते को केवल उच्च पदाधिकारियों के सिवाय कोई भी नहीं जानता पहले वाला आम रास्ता नीचे जाकर एक कमरे में निकलता है जिसमें से एक रास्ता तीसरी मंजिल की ओर जाता है। ऊपर वाला रास्ता बाँयी तरफ आकर निकलता है। और नीचे के लिये

रास्ता सीधी तरफ वाले कोने में होकर जाता है। इस कमरे से निकल कर एक गली सी मिलती है जिसमें होकर दो रास्ते जाते हैं। बांया ओर आने वाले रास्ते के दरवाजे पर एक औरत सिपाही चाकापद्रा दल की फौजी पोशाक में खड़ी पहरा देती है और सीधी तरफ वाले दरवाजे पर एक आदमी खड़ा पहरा देता है। केवल स्त्री ही अपने वार्ड में जा सकती है। कारण यह है कि इस मंजिल में एक तरफ आदमियों के तथा दूसरी तरफ औरतों के रहने के लिए क्वार्टर बने हुए हैं। हालांकि संघ के अन्दर स्त्री व पुरुषों में कोई भेद नहीं है मगर उनके रहने के स्थान अलग २ हैं। दोनों ओर के हिस्से बिल्कुल एक से बने हैं और उनमें किसी सूरत का कोई फर्क नहीं है। यह मंजिल खास तौर से उन मेम्बरों के लिए हैं जो अपनी स्त्री के साथ रहते हैं। उनके निवास स्थान अलग हैं मगर वह एक दूसरे से मिल सकते हैं एक दूसरे के वार्ड में अपना सही परिचय देकर आ जा सकते हैं। केवल स्त्री वार्ड में वही मेम्बर आ जा सकते हैं जिनकी स्त्रियाँ वहां हैं और दूसरे नहीं।

दरवाजे से निकलते ही एक छोटा सा बाग मिलता है जिसके अंदर बहुत फूलदार पेड़ तरह २ के लगे हुए हैं। घास के कोमल मैदान भी अपनी अलग शोभा दे रहे हैं। बाग की सुन्दरता आदमी के चित्त को एक दम मोह लेती है और स्वच्छता इतनी है कि तबीयत हरे भरे घास के मैदान में बैठने

के लिये विचलित हो उठती है। रोशनी के लिये तरह २ के पेड़ों पर बिजली के बल्ब लगा रक्खे हैं और हवा के लिये एक ऐसी मीनार सी करीब छः गज लम्बी खड़ी कर रक्खी है जो लगोतार हवा देती रहती है। इसमें एक ऐसा आला लग रहा है जिसके नीचे ऊपर करने से मन्द-मन्द व तेज आंधी जैसी वायु चलने लगती है। बीचो-बीच बाग में चार खम्भों के आधार पर एक बड़ा सा चौकोर दो फुट लम्बा व इतना ही चौड़ा दुधिया रङ्ग का शीशे का फ्रेम सा लग रहा है। जब सूरज की जरूरत होती है तो यह दिन में रोशनी व गर्मी देता है। पेड़ों को इसकी गर्मी व रोशनी मदद देती है और इस प्रकार सूरज का काम आदमी की अद्‌भुति कृति से लिया जाता है।

बाग से निकल कर तीनों तरफ छोटे २ कमरे बने हैं। यह कमरे दुमंजिला हैं। हालांकि इनका पटाव काफी ऊँचा है, मगर ऐसा भी नहीं है कि किसी सूरत की असुविधा हो सके। कमरों के आगे पक्का चौतरा बना है, जो काफी चौड़ा है और लग-भग दो फुट धरातल से भी ऊँचा है। बाग के अन्दर कई कुञ्ज बने हैं। कमरों के अन्दर रोशनी के लिये बिजली लग रही है और हर कमरे में एक बिजली का पंखा लग रहा है। बाहर चौतरे की रोशनी के लिये भी बिजली का ही उचित प्रबन्ध है। कमरों में सामान उचित ढंग से सजा रखा है। ठीक इसी प्रकार की बनावट स्त्री विभाग की भी है।

तीसरी मंजिल में जगह २ सात चौकीदार बैठे रहते हैं। नीचे की मंजिल में जाने के लिये एक विशेष प्रकार के पास की जरूरत होती है यह विशेष पास डार्लिंग या हर मैजेस्टी ही देते थे। उस पास पर आदमी का नम्बर जाने का कारण व अवधि भी दी हुई होती थी। उसके नीचे डार्लिंग अपने दस्तखत करती है। यह द्वार दो सिंहों के सन्मुख जाकर निकलता है। बांये हाथ वाले सिंह के कान पकड़ कर खींचने से जमीन में एकाएक दरवाजा निकल जाता है। पाँचवी सिढ़ी पर पैर लगते ही यह दरवाजा स्वयम् बन्द होता है। जीने में रोशनी के प्रबन्ध के लिये बिजली लग रही है और इसके कारण किसी प्रकार की चोट इत्यादि लगने का डर बिल्कुल जाता रहता है। यह जीना थोड़ी दूर पर जाकर खतम हो जाता है और नीचे एक अति सुन्दर आम भवन में पहुंचा देता है। यह भवन पूर्ण रूप से सुसज्जित है, चारों ओर अलमारियों में किताबें लग रही हैं। बीच में बहुत सी छोटी मेजें व आराम कुर्सियाँ पड़ी हैं। रोशनी के लिए अनेकों बिजलियाँ लग रही हैं और बिजली के पंखे हवा के लिये हैं। मालूम यह होता है कि लाइब्रेरी है। इसमें कई दरवाजे हैं पर सब पर काले रङ्ग के मखमली पर्दे लटक रहे हैं सीधी तरफ वाले बीच के दरवाजे में होकर जाने से हम एक चौकोर सहन में पहुँचते हैं। जिसके तीनों तरफ विशाल कमरे बने हैं, जिन पर लिखी पटियायें बता रही हैं कि सामने वाला कमरा प्रयोग भवन है, बांये हाथ वाला संचालक का आफिस है और

सीधे हाथ वाला संचालक का परामर्श गृह है। लाइब्रेरी के बांये हाथ वाले दरवाजे से होकर भी ऐसे ही तीन कमरे मिलते हैं, जो दोनों मजेस्टी और डार्लिंग के सामने बैठने तथा अन्य कामों के लिये हैं। इन तमाम कमरों में सब चीज करीने व कायदों से लग रही हैं। इस प्रकार दुर्गम दुर्ग का रूप रेखा कही जा सकती है। अन्य तमाम गुप्त रास्ते व बातें स्वयम् कहानी के साथ ही खुल जाँयगी।

झुरमुट से गुजरते हुए मजेस्टी व डार्लिंग दोनों दुर्ग के फाटक पर आये और दरवाजे में घुसकर अन्दर पहली मंजिल में दाखिल होना ही चाहते थे कि चौंकीदार ने दपट कर पूछा 'नम्बर'।

'राजगढ़ व सिंहगढ़ एक और दो' मजेस्टी ने कहा।

ड्यूटी वाले सिपाही ने सिपाहियाना ढङ्ग से सलाम किया और रास्ता छोड़ दिया। मजेस्टी के सहन में पहुँचते ही सब लोग जहाँ के तहाँ खड़े रह गये और सिपाहियाना ढङ्ग से उनका अभिवादन किया। पास खड़ी छोटी मोटर में दोनों जने सवार होकर सामने वाली दूसरी मंजिल के द्वार पर पहुँच गये और चौकीदारों के सवाल का जवाब देते हुये तीसरी मंजिल में पहुँचकर मजेस्टी अपने निजी कमरे में डार्लिंग के साथ पहुंचा। डार्लिंग ने पूछा कि उस पुर्जे में क्या लिखा था। जिसे आप अब तक सोच रहे हैं।

"इस पुर्जे में नम्बर सनातन ने लिखा है कि आपके आदेशानुसार मैं गङ्गादीन के यहाँ गया था। मगर खेद है कि केवल पौने दो लाख ही मिले। तमाम नोट मैंने लाहौर आफिस से कैश करा लिए हैं और आपकी आज्ञा का इन्तजार है।" पढ़ते हुए मजेस्टी ने कहा।

"तो इसमें चिन्ता जनक क्या बात है, जिसके लिये आप इतनी चिन्ता कर रहे हैं" डालिंग बोली।

"तुम यह तो ठीक कहती हो मगर मुझे गङ्गादीन से कम से कम पाँच लाख पाने की उम्मीद थी? मैं यही सोच रहा हूँ कि क्यों न ऐसी तद्बीर की जाय कि ज्यादा धन हाथ आवे।" हँसते हुये मजेस्टी ने कहा।

"हाँ? यह तो मैं ठीक समझ गई। मगर यह बात मेरी समझ में आज तक न आई कि उस आदमी को धन की क्या चिन्ता है, जो मिट्टी से कंचन बना सकता है। जिसकी मिट्टी का बनाया हुआ सोना बाजार में अच्छे दामों बिकता है" डालिङ्ग ने मुस्कराते हुये कहा।

यह तो तुम ठीक कहती हो मगर तुम यह नहीं जानती कि उसके बेचने के लिये ही मुझे रुपये की जरूरत है। इस तरह बिना किसी छल कपट के बेचने से तुम नहीं समझ सकतीं कि क्या २ मुसीबतें उठ खड़ी होंगी' मजेस्टी ने समझाते हुये कहा।

"मैं अगर इतना समझ ही लेती तो क्यों बेकार विवरण पूछ कर कष्ट देती' डार्लिङ्ग बोली।

'मैं यह चाहता हूँ कि पाँच करोड़ रुपये के मूलधन से एक बैंक खोली जाय और उसकी शाखायें तमाम संसार में रखी जांय। तब अपना सोना उन शाखाओं द्वारा बेचा जाय। तब हमें कोई शक की दृष्टि से न देख सकेगा और हमें निरन्तर रुपया मिलता रहेगा। इस समय तक मेरे पास करीब ढाई करोड़ रुपया हो गया है, केवल एक करोड़ और होते ही बैंक खोल दूँगा' मेजेस्टी बोला। इतने में उसे कुछ सूझ पड़ा और वह शीघ्र ही तेजी के साथ अपने सचालन आफिस में जा बैठा और एक टेलीफोन का चोंगा हाथ में लेकर बैठ गया। कुछ घन्टी की सी आवाज जब सुनाई पड़ी तो इसने कहना शुरू किया:—

'मैं नं० २८ सिंहगढ़ से बातें करना चाहता हूँ और समझता हूँ कि वही इस समय बोल रहे हैं।' मजेस्टी ने पूछा।

'जी हां! मैं नं० २८ सिंहगढ़ की बातें कर रहा हूँ। कमरा बिकुल्ल एकान्त है कहिये। प्रतिवादी ने कहा।

'नं० ५६ से कहो कि वह नं० २३ से अदन जाकर मिले और उसके कहे अनुसार काम करे जिस प्रकार भी हो यह पन्द्रह लाख रुपया जरूर आना ही चाहिए। यह निहायत

जरूरी । नं० ८१ से कहिये कि वह राजगढ़ १०२ के पास जाकर कहे जो इस समय लखनऊ के किसी अन्य होटल में ठहरा है कि जिस प्रकार हो उनका काम भी पूरा उतरना चाहिये, समय केवल एक चौदह दिन इस काम के लिये दिये गये हैं। इन दिनों के अन्दर काम खतम न होने पर कड़ी से कड़ी सजा भी दी जा सकती है। अब काम इसी समय सब को समझा देना" कहकर उसने टेलीफोन रखदिया और डालिंग को साथ लिये प्रयोगशाला में घुसगया और अन्दर जाकर एक बटन दबा दिया। जिसके दबते ही तीसरी मंजिल के प्रत्येक भाग में विद्युत का प्रभाव होगया और कोई जीव भी मृत या जीवित अन्दर आने की कोशिश करता तो वह जल कर भस्म हो जाता।

दसवाँ परिच्छेद

रूद्रकंठ की तहकीकात व हस्तक्षेप

"हलो" मि० कंठ ने टेली फोन का चोंगा उठाते ही पूछा।

"जी मैं हूँ मि० हुकूमत राय सुपरिन्डेंट पुलिस आप से यह कहना चाहता हूँ कि नार्दन इन्डिया सैन्ट्रल बैंक में आज एक अजीव चोरी हुई है, अतः आप से

अनुरोध है कि आप एक बार उसे देखने का कष्ट करें और उचित प्रबन्ध करें" मि० राय ने विनीत शब्दों में कहा।

"मैं शीघ्र ही मौके पर जा रहा हूँ, चिन्ता मत करिये" मि० कंठ ने जवाब देकर फोन रख दिया और कुर्सी पर से उठा कर कोट पहना और कमरे से बाहर पोटिको में आकर शीशे के सामने बाल संभाले और टोप लेकर मोटर में जा बैठे। ड्रायवर से नार्दन इन्डिया सैंट्रल बैंक अमीनाबाद ले चलने का हुक्म दिया। गाड़ी शीघ्र ही रास्ता तय करने के बाद बैंक के नीचे जा खड़ी हुई। रूद्र कंठ सीधे मैनेजर के दफ्तर में जा पहुँचे। जहाँ उनका उचित रीति से स्वागत किया गया। उन्होंने अधिक समय बरबाद न करके शीघ्र ही जेब में से अपना कार्ड निकाल कर मैनेजर के हाथ पर रख दिया। कार्ड में लिखा था :—

मि० रूद्र कंठ वर्मा,

डाईरेक्टर जनरल सी० आई० डी० यू० पी०

"मुझे आप से मिलकर अत्यन्त खुशी हुई मि० वर्मा।" मैनेजर ने कृतज्ञता प्रकट कर करते हुये।

"आपके केशने मुझ पर बड़ी कृपा की जो आप से भेंट करा दी मुझे हार्दिक खुशी है। कृपया मामले का खुलासा मुझे बताने का कष्ट करेंगे" मि० वर्मा ने कहा।

"क्यों नहीं" कह कर मि० प्रसाद उन्हें शुरू से लेकर आखिर तक वही बातें बता गए, जो उन्होंने मि० राय से कहीं थी। साथ साथ यह भी बता दिया मि० राय एक चौकीदार माधौसिंह को भी अपने साथ पकड़ कर ले गए हैं और मामले की देख भाल कर गए हैं। सब बातें शान्ति से सुनने के बाद मि० वर्मा बोले 'क्या आप मुझे मौका दिखाने का कष्ट करेंगे।'

"आईये यह भी आपने क्या कहा" कह कर मैनेजर जगदीश प्रसाद वर्मा साथ लेकर मौका दिखाने चल दिये।

खास सड़क के ऊपर बैंक था। दरवाजे के पार करने के बाद एक बरामदे में आते हैं। बरामदा सारा खुला पड़ा है और उसमें बड़ी २ बेंच पड़ी हैं और वहां पर लिखा टंगा रहता था कि कृपया शान्ति से बैठिये' यह स्थान बैङ्क ने अपने अमूल्य ग्राहकों के लिये बनवा रखा था ताकि ग्राहक उस स्थान पर बैठे रह सकें जब तक कि उनका काम बैंक के अधिकारी शान्ति पूर्वक कर न लें बरामदे के आगे एक छोटी सी बगिया थी, जिसमें बैठने के लिए स्थान तो न था मगर फूलों के अमूल्य पौधे लग रहे थे। इस बगिया के खतम होते ही एक दूसरा बरामदा था, जिसमें से बांये हाथ को एक रास्ता खजाने को जाता था और दूसरा सीधे हाथ वाला मैनेजर के रहने के स्थान के लिये जो बैंक के ऊपरी दोनों मंजिलों पर रहता था।

बरामदे के सामने ही तीन रास्ते बड़े हौल के लिये जाते थे जहाँ पर तमाम क्लार्क अपने २ काम करते थे। हाल के बाँयी तरफ होकर एक रास्ता मैनेजर के कमरे को जाता था और सीधे हाथ वाला एकाउन्टेन्ट के कमरे के लिये। बरामदे के बांये हाथ वाला रास्ता करीब दस गज जाने के बाद एक छोटे से हौल में जाकर खतम होता था। जहाँ पर लोहे के कटहरे में बैठकर खजाँची लोग काम करते थे। इस हौल के दरवाजे पर एक आदमी संगीन का पहरा सदा देता रहता था। सामने ही एक छोटे से लोहे के कटहरे में हैड खजांची बैठा रहता था। हौल के सीधी ओर दीवार से लगी हुई एक लोहे की छोटी सी टटरी पड़ी थी। पर टटरी देखने में तो दूर से मामूली सी दीखती थी मगर पास से देखने पर उसकी मजबूती का पता स्वयम् लग जाता था।

बैंक के हर कमरे में एक २ बिजली के पंखे का इन्तजाम था और रोशनी के लिये लगे बल्ब यह बताते थे कि रात भी दिन के समान दीखती होगी। बाकी सब हिस्सों के ऊपर तो कुछ बना था मगर बगिया के ऊपर कुछ न था और खुला आसमान यहीं दीखता था। बरामदे के सीधे हाथ वाले रास्ते में जाकर कुछ ही दूर पर एक संगमरमर का जीना सीधे हाथ से मुड़कर ऊपर की मंजिल को निकल गया था। जिस मंजिल में मैनेजर जगदीश प्रसाद अपने परिवार समेत रहते थे।

मि० वर्मा मैनेजर के कमरे से निकल कर बड़े हाल में आये। जहाँ पर क्लार्क शान्ति पूर्वक अपने काम में मगन थे। हाल से निकल कर बरामदे में होते हुये बांये हाथ वाले रास्ते से निकल कर खजाने में जा खड़े हुये। मि० प्रसाद ने हैड खजाँची को बुलाया और फिर तीनों जने लोहे की टटरी वाले रास्ते से निकल कर नीचे तहखाने में जा पहुँचे जो बैंक स्ट्राँग रूम कहलाता था। सारा सामान ज्यों का त्यों ही पड़ा था जैसे कि मि० राय देख गये थे।

एक बार सब बातों को सरसरी निगाह से देखने के बाद मि० वर्मा बाहर निकल आये और बोले कि "मैं थोड़ी देर बाद इसे गूढ़ता से देखूँगा जब मेरा सरकारी सुनील मेरे आवश्यक सामान को लेकर आ जायगा। यह सबसे अजीब डांका है जैसा कि मैंने आज तक अपने नौकरी के बीस साल तज्जुर्बे में कभी नहीं देखा।"

मि० वर्मा और मि० प्रसाद कमरे में आ गये जहां से वह गये थे। मि० वर्मा ने पास ही रखी छोटी सी मेज पर रखे टेलीफोन को उठा लिया और अपने सहकारी सुनील को समझा कर कह दिया कि वह शीघ्र ही समस्त सामान जो कि जरूरी है, लेकर चला आये। यह कह कर वह चुप-चाप बैठे रहे और कुछ देर बाद बोले:-

"मि० प्रसाद मेरी समझ में यह रहस्य नहीं आ रहा है कि जिस शख्स ने स्ट्रांग रूम की इतनी मोटी सलाखें काटीं

होगी तो समय काफी लगा होगा और यह बात निश्चय है कि इसमें कुछ न कुछ आवाज अवश्य हुई होगी। चाहे आरी ही से क्यों न काटी गई हो। अगर यह आरी से काटी गयी होती तो नीचे लोहे का बुरादा जरूर मिलता मगर वहाँ तो बुरादा बिल्कुल ही नहीं है। माना कि वह बुरादे को इकट्ठा कर के भी ले गया होता या झाड़ कर स्थान साफ कर गया होता तो जरूर कटे हुए स्थान पर कुछ न कुछ निशान होते। मगर वहाँ तो निशान तो अलग गये कटा हुआ सिरा ऐसा लगता है। जिस प्रकार बुझी हुई मोमबत्ती के ऊपर का मुँह। जो जलने से चिकना व गोल हो जाता है न वहाँ पर कटे हुये हिस्से ही नजर आते हैं। ले जाने वाला धन ले गया होगा या लोहे के कटे हुए टुकड़े। कुछ समझ में नहीं आ रही है विकट पहेली है।' मि० वर्मा बोले।

"मामला बहुत ही बे ढङ्गा है समझ में नहीं आता कि क्या कहा जाय। इस डाके ने तो मेरी अक्ल निहायत परेशान कर दी है।' मि० प्रसाद बोले।

"तमाम अब तक की घटनायें देखने से तो यही पता लगता है कि डाकू ऐसा वैसा आदमी नहीं है। हिम्मतवर, होशियार, होने के साथ ही वह अवश्य ही वैज्ञानिक भी है। कारण यह है कि माना कि डाकू किसी सूरत से स्टांग रूम तक पहुँच भी जाता तो यह सरास कठिन में कि वह सलाखें काट कर दरवाजा बनाता और उसके काम का कुछ भी निशान बाकी

न रहता। मैं इस बात पर विश्वास करने के सर्वथा खिलाफ हूँ। जरूर सलाखें गलाने के लिये कोई न कोई ऐसी चीज का प्रयोग किया गया होगा जिससे कि काम सहज ही और शान्ति पूर्वक हो गया हो। यह बहुत ही विचित्र बात देखने में आई है' मि० वर्मा फिर बोले।

इतने ही में नौकर ने आकर सूचना दी कि ० सुनील कुमार अन्दर आना चाहते हैं मैनेजर के आदेश पाते ही एक पचीस वर्षीय नवयुवक जिसका चहरा गोरा, कद लम्बा व शरीर सुडौल था, कमरे में घुस आया। उसके शरीर पर एक सफेद कमीज खाकी नेकर पैरों में जूते मोजे इस बात का सबूत दे रहे थे कि वह हमेशा चुस्त और चालाक रहता है। उसके बायें हाथ में चमड़े की खूबसूरत अटैची व सीधे हाथ में टोप था। उसने आते ही कमरे में बैठे दोनों सज्जनों को प्रणाम किया और मि० वर्मा के इशारे से वह पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

"सुनील, तुम सारा सामान ले आये न। यहां का डाका बहुत ही विचित्र तथा वैज्ञानिक है। खैर इस मामले के लिये हम अभी चलकर पूरी परीक्षा करेंगे तुम जब तक थोड़ी देर सस्ता लो' मि० वर्मा बोले।

मि० प्रसाद ने मेज पर लगे हुये घन्टी के बटन पर हाथ रखा कि थोड़ी ही देर में बाय ने कमरे में आकर सलाम किया।

"चाय शीघ्र मंगवाओ" मि० प्रसाद ने आदेश दिया।

थोड़ी ही देर में चायलेकर बैरा उपस्थित हुआ और तीनों जनों ने चाय पी। इसके बाद मैनेजर साहब उन दोनों को फिर स्ट्रांग रूम में लेगए। वहां पहुंच कर मि० वर्मा ने मैनेजर को विदा किया और सुनील को लेकर स्ट्रांग रूम के अन्दर घुसे और प्रत्येक वस्तु का गौर से निरीक्षण करते रहे।

तहखाना जमीन के अन्दर तो था मगर वह संगमरमर का बना था और इसके अन्दर हवा आने के लिये रोशनदान इत्यादि भी थे। इसके अन्दर नमी का तो नाम न था और रोशनी के लिये कई ऊँची २ पावर के बिजली के बल्ब लगा रखे थे। जिनके जलाते ही एक दम तहखाने में रोशनी हो गई और प्रत्येक वस्तु साफ दीखने लगी। मि० वर्मा ने खुर्दबीन लेकर आँख पर लगाई और गौर करके छड़ों के कटे हुए मुंहों को देखने लगे। छड़ों के मुंह ठीक इस प्रकार होगये थे जैसे कि एक मोमबत्ती जो कुछ देर से जल रही हो और यकायक वायु के झोंके किसी अन्य कारण से बुझ गई हो। उसका सिरा चिकना व कुछ २ गोल होजाता है। उनके सिरों का निरंतर कई बार निरीक्षण करने के बाद भी मि० वर्मा को कोई खरोंच या किसी प्रकार का कोई भी ऐसा चिन्ह न मिल सका जिससे यह तय पाया जाय कि यह छैनी आरी या किसी अन्य ओजार से काटा गया हो।

सुनील ने भी परीक्षा की मगर वह भी असफल रहा। सब विधि से निष्फल हो जाने के बाद मि० वर्मा ने सुनील को एक फीट लम्बी कटी हुई छड़ के बाकी हिस्से में से काटने को कहा। सुनील ने आरी से छड़ को काटना शुरू किया ही था कि एका एक चांदनी खपच्ची की तरह वह छड़ चटक कर टूटने लगी। थोड़ी सी कोशिश के बाद छड़ टूट कर हाथ में आगई। पक्के लोहे को इस प्रकार टूटना देखकर सुनील व मि० वर्मा दोनों ही आश्चर्य में आगये।

"यह सबसे अजीब बात है जो मैंने लोहे को इस प्रकार टूटते हुये देखा है। जरूर लोहे पर किसी वैज्ञानिक रसायन का प्रयोग किया गया है, तब ही तो यह इतना कम जोर होगया है। अच्छा सुनील दूसरी साबित छड़ में से भी इसके बराबर हिस्सा तो काटो।" मि० वर्मा ने उस कटी हुई छड़ को गौर से देखते हुए कहा।

सुनील आरी लेकर दूसरी पूरी छड़ को काटने लगा। काफी मेहनत के बाद लग-भग डेढ़ घंटे में कहीं वह छड़ काट पाया। छड़ पक्के लोहे की व चार इंच मोटी थी। उसके काटने में उसके दोनों हाथ लाल होगये और पसीनों से वह तर होगया। खैर किसी प्रकार वह छड़ काट कर निश्चिन्त हुआ इधर मि० वर्मा ने स्ट्रांग रूम की खोज प्रारम्भ की तमाम लोहे की तिजोरियाँ और अलमारियाँ सब तरफ से साफ थीं। उनके ताले ठीक लगे थे केवल ऊपर के भाग इस प्रकार काटे

गये थे मानो डिब्बे के ऊपर लगे ढकने को उठा लिया गया हो। मगर अलग करने पर मालूम हुआ कि उन डिब्बों के ढक्कन भी पूर्णतया गायब हैं। मि० वर्मा ने देखा कि कटे हुये किनारे ठीक सलाख यानी छड़ों के सिरे की तरह हैं। उनका यह पक्का अनुमान हो गया कि मुलजिम अवश्य किसी वैज्ञानिक ढङ्ग का प्रयोग करता है।

स्ट्रांग रूम के बांये हाथ वाले कोने में एक कच्चे टीन का सन्दूक रखा था उसकी दशा को देखने के लिये जैसे ही मि० वर्मा ने हाथ से उसे उठाने की चेष्टा की तो सन्दूक राख होकर मि० वर्मा के पैरों के पास गिर पड़ा। इस हैरत अंगेज बात ने उनको अधिक विस्मित कर दिया। सुनील ने एक थैली में सन्दूक की राख रखली। मि० वर्मा ने घड़ी में देखा तो उनको मालूम हुआ कि पांच बज चुके हैं। अतः उन्होंने सुनील से काम बन्द करने के लिये कहा और अपना कोट पहनने लगे। सुनील ने दोनों सलाखों के टुकड़े व सन्दूक की राख वाला थैला अटैची में अपने सामानों के पास रख लिया तब दोनों जने स्ट्रॉग रूम से बाहर आये।

"सुनील जब तक मैं मि० प्रसाद कमरे में जाकर बैठता हूँ, तब तक तुम स्ट्रांग रूम के रास्ते के दरवाजे पर लगे हुये ताले पर सील लगा आओ ताकि कोई शख्स भी बिना हमारी मर्जी के अन्दर न जाय और न किसी चीज को नुकसान पहुंचा सके।" मि० वर्मा यह कह कर मैनेजर के कमरे की

तरफ चले गये और सुनील दरवाजे पर सील लगाने की तय्यारी करने लगा। मि० वर्मा जिस समय मैनेजर के कमरे में पहुँचे उस समय वह एकाउन्टेन्ट व खजांची की सहायता से चोरी का हिसाब लगा रहा था। मि० वर्मा को कमरे में आते देखकर बोला:—

"आइये मि० वर्मा तशरीफ रखिये नाहक में आपको इतनी परेशानी उठानी पड़ रही है। देखिये न मैं भी चोरी का हिसाब लगाने में लग रहा हूँ।"

'जी ! हिसाब लगा कर बताइये तो कितना रुपया गायब है' मि० वर्मा कुर्सी पर बैठते हुए बोले।

सामने रखे बहुत से रजिस्टरों व फाइलों को देख कर हिसाब इकट्ठा किया जा रहा था। लग-भग आध घण्टे बाद एक लम्बा सा जोड़ लगाने के बाद एकाउन्टेट ने बताया कि कुल नुकसान लग-भग एक करोड़ ग्यारह लाख का है। इतनी बड़ी रकम को सुनकर मैनेजर मि० प्रसाद ने एक ठंडी आह खींची और कुछ देर के लिये शान्त होकर बैठ गये।

'मि० वर्मा बैंक इतने बड़े नुकसान को शायद ही बरदास्त कर सके।' एक करोड़ ग्यारह लाख रुपया कुछ कम नहीं होता है।' मि० जगदीश प्रसाद ने कुछ देर बाद मि० वर्मा को समझा कर कहा।

"मि० प्रसाद यह बात मेरी समझ में न आई कि तुम्हारा सारा रुपया खजाने ही में पड़ा रहता है ब्याज कहाँ से देते हो। पूरा रु० नकदी ही में होगा क्योंकि मुलजिम ने शेयर्स और सिक्यूरिटी से तो हाथ लगाया ही नहीं।' मि० वर्मा बोले—

"कुछ पचास लाख रु० नकद था। क्योंकि कल ही करीब चवालीस लाख रु० ब्रांचों से आया था और पाँच छः लाख रु० हेरफेर को पड़ा रहता है। बाकी रकम की सोने की छड़ें थीं। बेंक के डाइरेक्टरों को उम्मीद थी कि सोने का भाव इसी महीने काफी बढ़ेगा। इसलिये सोना खरीदा गया था और सचमुच इसी हफ्ते में ३५) से ३६) रु० तो हो ही गया है। इसलिये पचास लाख नकदी व इकसठ लाख का सोना चोरी गया है।' मैनेजर ने समझाते हुए कहा।

इतनी देर में सुनील भी काम से छुट्टी पाकर आ गया और मि० वर्मा के इशारे से पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया एकाउंटेंट व खजांची अपने २ कमरों में चले गये। चपरासी आकर रजिस्टर उठा ले गया। मि० प्रसाद ने चपरासी को शीघ्र चाय इत्यादि भेजने के लिये कहा।

मि० प्रसाद आपके बैङ्क पर पहरा भी काफी रहता है। और है भी खास सड़क पर जहाँ दिन रात आवा जाही लगी रहता है, अतः सोच इस बात का है कि मुलाजिम किस प्रकार

इतना सारा माल चौकीदारों की आँख बचाकर लेगया। वह लोग निश्चय ही कई आदमी होंगे। मगर सब आदमी किस प्रकार चौकीदार की निगाह से बच सके और इतना माल ले जा सके।" मि० वर्मा ने मि० प्रसाद की ओर देखकर ताका।

इतने ही में चाय व बिस्कुट इत्यादि बैरा लेकर हाजिर हुआ और तीनों मनुष्यों ने चाय इत्यादि पी।

'मेरी खुद समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसी भी क्या सफाई हुई। मुझे अपने कार्यकर्ताओं पर नाज है कि वह लोग निहायत ईमानदार हैं। मि० प्रसाद ने उत्तर दिया।

चाय इत्यादि पीने के बाद मि० वर्मा ने उठकर अपना टोप लिया और सुनील भी उठ खड़ा हुआ। मि० प्रसाद भी उन लोगों के साथ द्वार तक आये। द्वार पर आकर मैने-जर ने एक एक से हाथ मिलाया और वह लोग मोटर में बैठकर रवाना होने लगे।

"मि० प्रसाद एक बात तो मैं कहना भूल ही गया कि हम स्ट्राँग रूम के दरवाजे पर ताला लगाकर उसके ऊपर सील लगा आये हैं। अतः इस बात का ख्याल रखिये कि कोई साहब उसे नुकसान पहुंचाने का कष्ट न करें। मि० वर्मा ने खिड़की से सिर निकालते हुये मि० प्रसाद को समझाया।"

"आप पूरा इत्मीनान रखिये मैं चौकीदार को भी समझा दूँगा कि वह उसका ख्याल रखे। उम्मीद है कि कल आप फिर तशरीफ लायेंगे।" मि० प्रसाद ने पूछा।

"जी हाँ! आते समय सुबह टेलीफोन पर बता दूँगा। कहकर मि० वर्मा ने कार स्टार्ट करदी और बंगले खाद्‌गरोड की तरफ रवाना हो गये।

ग्यारहवां परिच्छेद

डार्लिंग की चतुराई

प्रयोगशाला में घुसते ही डार्लिंग तो पास ही पड़े हुए सोफे पर लेटी रही और थोड़ी देर तक शान्त रही। मजेस्टी तीसरे नम्बर की प्रयोगशाला वाली कोठरी में जाकर एक सफेद सङ्गमरमर की मेज के सामने जाकर बैठ गया। इस मेज पर एक छोटी सी अजीब तरह की मशीन रक्खी थी।। यह मशीन केवल एक फुट लम्बी थी और नौ इंच करीब चौड़ी थी। दूर से देखने पर यह बनावट में एक प्रकार की सोने की मशीन सी लगती थी। आगे के हिस्से पर करीब छः इंच लम्बा व तीन चौड़ा आयताकार काफ़ी मोटा सफेद काँच लग रहा था। शीशे का फ्रेम लोहे का सगीन बना हुआ था और शीशे समेत आगे का हिस्सा पाँच इंच चौड़ा और नौ इंच ऊँचा या लम्बा था या यूँ कहिये कि मशीन क्या थी एक फुट लम्बे नौ इंच चौड़े

लोहे के टुकड़े पर बीचो बीच में एक पाँच चौड़ा व नौ इंच ऊँचा था। उसके अगले भाग पर तीन इंच चौड़ा और छः इंच ऊँचा मोटा शीशा लगा था और पीछे की तरफ एक हाथ से सीने वाले मशीन का पहिया सा लगा था। शीशे के पीछे सन्दूक में एक काफी ताकत का बल्ब लगा था और पीछे से चिपटी हुई एक पक्के लोहे की छड़ लग रही थी। जिसका कनेक्शन अन्दर लगी हुई एक सुर्ख धातु वाली छड़ से था। पहिये के चलाने से सफेद लोहे वाली छड़ लाल रङ्ग वाली छड़ से निकलती थी और लंप की रोशनी का सहारा पाकर यही विद्युत किरणें मोटे शीशे से होकर बाहर निकलती थीं। बस यही किरणें आफत की बलायें थीं।

बिजली के बल्ब को रोशनी पहुँचाने के लिये एक ओर एक सग लगाने के लिये स्थान बन रहा था। मशीन की बनावट बड़ी मजबूत थी और उसके धातु के बक्से में कहीं भी किसी जोड़ का निशान नहीं था। उसपर काला रङ्ग पुत रहा था जो बहुत चमकदार था और उसके ऊपर चमकदार सुनहरी रङ्ग से एक हाथ का पंजा बन रहा था। जिसकी हथेली के बीचो बीच नीलेरङ्ग से स्वास्तिक बन रहा था। यह बहुत भला लगरहा था। वैसे वजन में यह मशीन भारी न थी और एक आदमी इसकोअटेची की भांति लटकाये आसानी से ले जा सकता था। ऊपर इस मशीन के रखने का डिब्बा बहुत ही

शानदार बन रहा था और ऐसा मालूम होता था कि सचमुच इस संदूकड़ी में कोई कीमती चीज के अलावा कुछ भी नहीं।

मजेस्टी काफी देर तक कुर्सी पर बैठा २ मशीन के प्रत्येक पुर्जे को गौर से देखता रहा। उसने फिर एक सफेद मखमल का टुकड़ा लेकर उसे साफ करना शुरू किया। तत्पश्चात् उसने संभाल कर मशीन को उठाया और एक ऊँची मजबूत टिखटी पर रख दिया। जिसकी ऊंचाई करीब आठ फुट होगी। फिर उसने एक लोहे का भारी तवा दीवार पर लटका दिया। तब उसने बिजली का प्लग लगा कर मशीन के बल्ब को जला दिया और मशीन को घुमाकर इस भांति रखा कि उसकी निकलती हुई किरणें ठीक तवे के ऊपर पड़ें। फिर उसने एक मेज का दरवाजा खोलकर एक नीले रङ्ग की मजबूत शीशी निकाली और एक फुरेरी बनाकर उसके अन्दर का तरल पदार्थ तवे पर लगा दिया। तत्पश्चात उसने मशीर के पीछे लगे गोल पहिये को घुमाना शुरू किया। जिसके घुमाने से पीले रङ्ग की किरणें निकल कर तवे पर जाकर टकराने लगीं और तवे का रङ्ग तपे हुये लोहे के मानिन्द हो गया। कुछ ही सैकन्डों में लोहे का तवा राख होकर नीचे गिर पड़ा। उसके गिरते ही उसका चक्कर चलाना बन्द कर दिया और प्लग निकाल कर मशीन के अन्दर की रोशनी बुझा दी।

इस मशीन को ज्यों ही रखकर मजेस्टी अपने अनुभव की बात बताने के लिये कमरे नं० एक में आया जहाँ पर वह

डालिङ्ग को छोड़ गया था मगर वह वहाँ न दिखाई दी। तब मजेस्टी ने एक २ करके प्रयोगशाला के सातों कमरे देख डाले तो भी डालिङ्ग का पता न लगा। तब तो हैरान होकर मजेस्टी कमरे नं० १ ही में आकर सोफे पर बैठ गया और डालिङ्ग के बारे में चिन्तित हो गया। सामने जो निगाह गई तो क्या देखता है कि एक चमकदार छुरी मेज की दराज में से निकल कर अपने आप मजेस्टी की तरफ आरही है। न तो किसी प्रकार का कोई तार या हाथ या अन्य लाने वाली वस्तु ही दीखती है। मजेस्टी इस बात पर बहुत चौंका और अपने बचाव के लिये पास ही रखी लोहे की चद्दर के टुकड़े को उठाने लगा कि उसने एक बहुत ही बारीक तेज हँसी सुनी और यकायक वह छुरी फिर मेज पर जा टिकी।

कुछ ही मिनटों के बाद उसने देखा कि उसके गाल पर हल्के से किसी ने नोच लिया मगर कोई चीज दिखाई न दी। मजेस्टी इस बात पर विस्मय कर ही रहा था कि यकायक सामने पड़ी कुर्सी की गद्दी उसके आकर लगी। मगर मारने वाले का कुछ पता न था। उसने हाथ में गद्दी लेकर उसको उलट पुलट कर देखना शुरू किया मगर कोई बात ऐसी न मिली जिस पर शक किया जाता। तब उसने हार कर गद्दी कुर्सी पर फिर बिछादी और अपनी कुर्सी पर आ बैठा।

"वैज्ञानिक बनकर चले हैं, संसार का सुधार करने मालूम नहीं कि प्रयोगशाला में घुस कर मैं उसकी अक्ल ठीक करने आ पहुंचा हूँ।" किसी ने आवाज को बनाते हुए कहा।

इस आवाज को सुनकर मजेस्टी चौकन्ना होगया और सचमुच उसने समझा कि कोई न कोई शत्रु आज प्रयोग-शाला में घुस आया है। उसी ने मेरी डार्लिङ्ग को लापता कर दिया है और अब मुझ पर भी हमला करके मेरा काम तमाम कर देगा। फिर मजेस्टी ने हिम्मत बाँधी और पिस्तौल जेब से निकाल कर हाथ में ले ली और बोला।

"अगर कुछ मर्दमी का बाना रखो तो मैदान में आकर दो २ हाथ करलो। मजेस्टी थोथा ही नहीं है या केवल नाम का ही नहीं है।

"अच्छा तो ले अपने तमंचे के चौदह फाइर मेरे ऊपर कर देखूं तो सही तू कितना बहादुर है। पहले अपने चौदहों वार करले क्योंकि तेरे तमंचे में इतनी ही गोलियाँ हैं फिर मेरा केवल इकला ही वार सह लेना।

"वाह यह भी खूब रही मैं तुझे देख तो सकता ही नहीं वार किस पर करूं दीवार पर या पर्दे पर। बहादुरी देखनी है तो सामने मुँह दर मुँह आ। तब देखूं कि तू कितने पानी में है। बराबरी के मुकाबिले पर हार जीत होगी ऐसे क्या कि तू तो मुझे दीखता तो नहीं। मैं वार करू तो कैसे करूँ।"

"यह भी खूब रही वैज्ञानिक जी! कहते थे कि संसार का सर्व श्रेष्ठ विज्ञान मेरे अन्तस्थल में है तो वह कहां गया। निकालो विज्ञान को और मेरे मुकाबले आओ। केवल खूनी

नीर था मृत्यु सेह का क्या पता लगा कि बन गये बड़े भारी विज्ञानाचार्य। यह नहीं मालूम है कि यह है संसार। परम पिता परमात्मा ने आदमी अपनी सर्व श्रेष्ठ कृति की है। इस लिये इस संसार में एक से ज्यादा एक विद्वान भरा पड़ा है। एक के लिये दूसरा बना है। गरज यह है कि यह कहना कि मुझे कोई नहीं जीत सकता था मैं संसार का सब से श्रेष्ठ मनुष्य हूँ उसकी कोरी कल्पना है। झूठा अभिमान करने वाले मेरी खोज करे तो जानू।"

इतनी बात सुनते ही मजेस्टी के माथे पर पसीना आगया और उसका सिर चक्कर खाने लगा अतः वह आँखें बन्द करके कुर्सी के तकिये का सहारा लेकर लेट गया-और सोचने लगा कि आज तो अजीब विकट से पाला पड़ा है। उसका चित्त स्थिर न रह सका और उसको आज अपने जीवन में सब से पहली बार कमजोरी महसूस हुई। उसने मन ही मन भगवान् के हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि भगवान् मुझे सुबुद्धि दो ताकि में शान्त चित्त रह सकूं। इस प्रकार कुछ उसके हृदय में दृढ़ सा बन्धा इसलिये उसने हिम्मत करके जैसे ही आँखें खोली तो देखता क्या है कि बड़ी मेज के सामने स्टूल पर डार्लिङ्ग बैठी उसकी ओर एक टक देख रही थी। पलक झपकते ही क्या देखता है कि स्टूल खाली पड़ा हुआ है और डार्लिङ्ग का कहीं पता नहीं। इस पर मजेस्टी और परेशान हुआ

और मन में सोचने लगा कि अभी हाल तो स्टूल पर डार्लिङ्ग बैठी ही थी मगर इतनी जल्दी वह क्योंकर गायब होगयी। अपना भ्रम मिटाने के लिये मजेस्टी ने जेब से रूमाल निकाल कर आंखें साफ कीं और डार्लिङ्ग को पाने की आशा से स्टूल की तरफ निहारा। उधर देखते ही किसी ने बहुत जोर से कहकहा मारा। इस पर मजेस्टी सहम गया और कुछ न बोला।

"मजेस्टी बस इसी बल पर जग के सुधार का बीड़ा खाया था। यह तो मेरा केवल एक ही अस्त्र है जिसके लगते ही तुम शिथिल होगये हो। बोलो इस समय मैं तुम्हारा क्या अनिष्ट नहीं कर सकता, तुम्हारी जिन्दगी मेरे हाथ में है मैं एक ही हाथ मे चाहूँ तुम्हारा काम कर सकना हूँ परन्तु तुम गोली चाहे कितनी ही चला लो मगर मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इसी बल बूते पर चले थे बस यही तुम्हारी शान थी आवाज ने सीधे हाथ की तरफ से कड़कड़ाती आवाज में कहा।

इस वार के तीनों से मजेस्टी की आंखें लाल होगई क्रोध से सारा तन कांपने लगा कुछ विचार कर वह बोला "ओ कमीने शेखी खोरें! आज तक मैंने कभी किसी बात की डींग नहीं मारी थी। मेरी ताकत का मुकाबिला तू क्या करेगा मैं पक्का ब्रह्मचारी हूँ। संसार जानता है कि मेरी शादी हो चुकी है मगर मैंने यह नहीं जाना कि स्त्री का उपभोग किस प्रकार किया जाता है। चीज होते हुये भी जो शख्स

किसी चीज को उपयोग नहीं करता तो अन्धे तू ही बता कि उससे अधिक संयमी कौन होगा । इसका यकीन न हो तो उसका प्रमाण डार्लिङ्ग दे सकती है । विज्ञान का सारा साहित्य मेरे उदर में भर रहा है । विज्ञान का तू नाम भी न जानता होगा । मैंने भी अदृश्य मशीन बनाई हुई देख उसी के सहारे मैं भी अभी अदृश्य हुआ जाता हूँ तब देखूँगा कि कितने पानी में है लेकिन मुझे कुछ देर लगेगी क्योंकि अभी उसका एक पुर्जा ठीक करना पड़ेगा ।'

यह कह कर मजेस्टी कुर्सी पर से उठा और दिवाल में लगी विशाल लोहे की अलमारी के पास पहुंचा । किवाड़ खोल कर उसने एक काठ का डिब्बा निकाला तो उसको खोलते ही वह खाली निकला । बस मजेस्टी ने अपना सिर पीट लिया । उसके चहरे का रंग क्रोध के मारे लाल सुर्ख हो गया और होंठ फड़क उठे दांत पीसते हुये आवाज में बोला ।

"ओ निर्लज्ज कमीने तूने मेरे हाथ काट डालने की भी खूब सोची कुछ न हुआ तो मेरी मशीन ही चुराली । मगर मुझ से बच कर कहाँ जायगा मैं अभी तुझे तलाश करके जहन्नुम रसीद करता हूँ' यह कहता हुआ मजेस्टी एक दम जोर के साथ कमरे नं० ३ में चला गया और शीघ्र ही मेज की दराज में से एक स्याह रंग का चश्मा निकाल कर जेब में रखा और बक्स को टिखटी पर रखा ताकि आसानी से घुमायी

जा सके। यह वही धुआँदार कारी मशीन थी जिसकी किरणों के प्रभाव से हर चीज भस्म होकर वायु मण्डल में मिल जाती थी। सब सामान को लेकर मजेस्टी फिर कमरे नम्बर एक में दाखिल हुआ। यह मशीन उसने कमरे के बीच में इस प्रकार रखदी। ताकि किरणें कमरे के हर एक कोने में पहुँच सके। बिजली का कनेक्शन लगाते ही मशीन के अन्दर का बल्ब जल उठा। जब काम से निश्चिन्त होकर उसने जेब से वह चश्मा निकाल कर लगाया और चारों तरफ उस अदृश्य व्यक्ति को देखने लगा मगर वह कहीं भी दिखाई न दिया तो उसने मेज के नीचे देखना शुरू किया और शीघ्र ही ज्योंही उसने सोफे के नीचे झाँककर देखा तो डार्लिङ्ग को सांस रोके बैठा पाया। जिसके बदन पर एक हल्के से रङ्ग का कपड़ा था, जिसको सूत के स्थान पर तांबे के तारों द्वारा बुना गया था। कमर में एक छोटी सी तीन इंच चौड़ी पेटी बंध रही थी, जिसके एक ओर एक छः इंच लम्बी व तीन इंच चौड़ी बैटरी लग रही थी इस बैटरी से एक तार निकल कर पेटी में गया था और पेटी का कनेक्शन बदन पर पड़े तारों के जाल से था और इसी प्रकार यह छोटी सी वस्तु आदमी को अदृश्य कर देती थी।

"अरे डार्लिंग तू! यह कारगुजारी आपने की थी और हमको मुफ्त में परेशान करके यह लुत्फ आपने ही उठाया था मगर यह मैं न समझ सका कि आप ही हैं। कुछ बोली भी न पहचान सका" मजेस्टी ने हँसते हुये कहा।

"यही वह मशीन है जिसकी कमी हमने पूरी करके उसके बनाने वाले को ही धोखे में डाल दिया क्या खूब है आप भी परेशान कितनी जल्दी हो जाते हैं। ब्रह्मचारी सन्यासी जी हैं। झूठी शान बघारना भी खूब आता है यह मालूम न था डार्लिंग ने उठकर सोफा पर बैठते हुये कहा।

"मगर एक बात तो बताओ कि किस प्रकार तुमने इस तारों वाले कपड़े से निकलती हुई हरी रोशनी को गायब करने में सफलता पाई।" मजेस्टी ने पूछा।

'इसमें क्या था! ऊपर वाला पेच खोलते ही रोशनी जाती रही। क्योंकि वह रोशनी पेच की वजह से रुक जाती थी पेच निकालने से हवा मिलने लगी इसलिये कारबन गैस का असर जाता रहा। मगर यह क्या ले आये थे?" टिक्टी की तरफ इशारा करके डार्लिंग ने कहा।

इतने ही में शीशे लगे अलार्म नं० ने हिलकर सूचना दी कि आफिस में किसी का टेलीफोन आने की वजह से घन्टी बज रही है। अतः शीघ्र ही मजेस्टी डार्लिंग को लिये कमरे से बाहर निकल कर आफिस में आया और टेलीफोन उठाकर बातें करने लगा।

नोट:—अलार्म नम्बर :—जहां पर कई स्थानों से सूचना लेने के लिये जरूरत होती है। तो हर कमरे में एक

घन्टी लगा दी जाती है जिसका कनेक्शन बिजली से कर दिया जाता है और इस प्रकार प्रत्येक स्थान की घन्टी उस स्थान पर इकट्ठी हो जाती हैं। जहाँ से तमाम कमरों की देख रेख या संचालन होता है। अतः इस बात को अधिक जानने के लिये व शीघ्र नतीजे पर पहुंचने के वास्ते एक काठ का डिब्बा बनवाया जाता है और प्रत्येक कमरे की घन्टी के कनेक्शन इसमें लगा लिये जाते हैं। घन्टी हटा कर तार कनेक्शन एक प्रकार के अर्धचन्द्र रूपित नम्बर लिखे या कमरों के चिन्ह लिखित टीन के ढांचे लगा दिये जाते हैं। जैसे ही किसी कमरे में से घन्टी बजती है त्यों ही संचालन गृह के बक्से में लगा उसी कमरे का नम्बर जोर से हिलाने लगता है और साथ २ घंटी भी बजने लगती है। इस प्रकार का प्रयोग मजेस्टी ने अपने प्रत्येक कमरे से प्रयोगशाला के लिये कर रखा था। किसी भी कमरे में तनिक सी आहट होने से उसी कमरे की घन्टी जोरों से हिलने लगती थी।

ग्यारहवां परिच्छेद

डार्लिंग की चतुराई

टेंडुल जी ने टेलीफोन पर बात कही तो उनका ही उत्तर मिलता था। अतः हैरान होकर वह थोड़ी देर तक बैठे रहे। इतने में मुनीम ने आकर इत्तला की कि नीचे सारे टेलीफोन

बेकार हो गये हैं जहां से भी नम्बर मिलाकर बातें करिये जवाब में वही मिलता है। समझ में नहीं आता क्या कारण है। लाइन भी ठीक है कहीं कटी नहीं दिखाई देती।

"अच्छा! तो जरा पास के होटल में जाकर टेलीफोन कम्पनी को लाइन खराब होने की खबर दो और साथ ही पुलिस की चौकी पर पन्द्रह लाख के डांके की खबर दो ताकि वह लोग ठीक समय आ सकें।" सेठ ने चिन्तित होकर कहा।

"बहुत अच्छा अभी आया" कहकर मुनीम पास वाले होटल से टेलीफोन करने चला गया।

"मि० मैकडोनाल्ड जो कुछ होना था सो होगया अब इस तरह कब तक बैठ रहोगे। आप उठिये नौकर के साथ जाकर कमरे में अपना सामान रखिये और फिर नित्यनेम से फारिग होकर खाना खाइये। बारह बजने में कुल बीस मिनट हैं।" कहकर मेज पर लगी घन्टी के बटन को दबाया और कमरे में नौकर दाखिल हुआ।

जाओ बाबू को लेजाकर गेस्टरूम में ठहरादो देखना किसी बात की तकलीफ न हो वहां के नौकरों से सारी हिदायत कर देना। सेठ ने नौकर को समझाते हुए कहा।

मि० मैकडोनाल्ड नौकर के साथ आठवीं मंजिल पर पहुँचे जहां पर गेस्टरूम था। वहां पर कमरे में उन्होंने अपना

सारा सामान ढङ्ग से रख पाया। अतः कुछ देर बाद सुस्ताकर अपनी नित्य क्रिया में निमग्न हो गये। थोड़ी देर बाद उसी मुनीम ने फिर कमरे में प्रवेश किया जो कि होटल के टेलीफोन से पुलिस चौकी व टेलीफोन कम्पनी को फोन करने गया था।

"सेठ ! हमारे क्या शहर भर के सारे टेलीफोनों की ही यह हालत है। सारे टेलीफोन बेकार पड़े हैं। और शहर भर का सारा कारोबार बन्द पड़ा है। टेलीफोनों के न तो तार ही काटे गये हैं और न कोई खास खराबी ही की गई है। इसलिये मैंने एक आदमी साइकिल पर पुलिस चौकी डाके की इत्तिला करने भेज दिया है। इंजीनियर टेलीफोनों की खराबी मालूम करने का प्रयत्न कर रहे हैं।" मुनीम ने आश्चर्य से कहा।

'बम्बई में कभी ऐसा देखने में न आया था कि एक दम सारे टेलीफोन खराब हो गये हों। बहुत ही रहस्य मयी घटना है मगर किया क्या जाय।' सेठ ने कहा।

थोड़ी ही देर बाद तीन सार्जेंट, एक पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट ने सेठ के कमरे में प्रवेश किया। सेठ ने आदर पूर्वक उन लोगों को कुर्सी पर बिठाया और नौकर को चाय लाने का आदेश दिया। चाय आने तक सब लोग बैठे सुस्ताते रहे इसके अनन्तर सब ने चाय पी।

"कहिये किस प्रकार डांका पड़ गया ? आपके यहां तो आज तक हमने कोई वारदात कभी नहीं सुनी थी आश्चर्य है कि आज आप पर भी हाथ साफ होगया और इतनी बड़ी रकम पन्द्रह लाख की।" सुपरिन्टेंडेन्ट विल्स ने शान्ति भङ्ग करते हुये सेठ से पूछा।

"क्या बताऊँ साहब मैं तो निहायत परेशान हूँ। इस घटना ने मुझे भौचक्का कर दिया डांका क्या था यूं कहिए सीनेजोरी थी। मुलजिम मेरे पास बैठा रहा, बात करता रहा और फिर भी रुपया लूट कर लेगया। यही तो अफसोस है कि मुलजिम के हाथ में रहते हुये भी मैं कुछ न कर सका।" सेठ ने पछताते हुये उत्तर दिया।

"वाह सेठ जी आपने खूब कहा। वह मुलजिम ही फिर क्या था जिसको तुम एक दम पकड़ लेते। तब तो न तो तुम रुपया देते ही और न वह लेही जाता और न तुम उसे मुलज़िम कह पाते। उसने रुपया तुम से ठग कर लिया है। अतः आप उसे मुलजिम कह रहे हैं; वरना यह भी न कह पाते। हँसकर मि० विल्स बोले।

"आप के ही कहे अनुसार मुझे उसे मुलजिम कहने का अखित्यार है। क्योंकि मैंने उसे पंद्रह लाख रुपया ठगाया है। अतः आपको भी उसके पकड़ने का अखित्यार है क्यों कि आपका काम ही मुलजिम पकड़ना है मेरा काम खतम होगया

कि मैंने उसे मुलजिम करार दिया अब आपका काम शुरू होता है कि आप उसे पकड़ें।" सेठ ने हल्की सी मुस्कराहट चहरे पर लाकर जवाब दिया।

इतने ही में मि० मैकडोनाल्ड साफ कपड़े पहने हुये कमरे में आये। उन्होंने आते ही आगन्तुकों से हाथ मिलाया और एक कुर्सी पर विल्स के पास बैठ गये।

"आप हैं मि० सी० एम० विल्स, सुपरिन्टेंडेंट पुलिस बाम्बे नं० २।" कहकर सेठ ने मैकडोनाल्ड को मि० विल्स का परिचय दिया "और आप हैं मि० एन० सी० मैकडोनाल्ड जनरल मैनेजर मेसर्स जहाँगीर जी फ्रास जी, अदन"। कहकर मि० विल्स को मैकडोनाल्ड का परिचय दिया।

"मुझे आप से मिलकर अत्यन्त खुशी हुई।" हाथ मिलाते हुये मि० विल्स ने मि० मैकडोनाल्ड से कहा।

धन्यवाद! मैं अपने को आप से मिलकर अहो भाग्य समझता हूँ।" मैकडोनाल्ड ने उत्तर दिया।

"आप ही की ओट लेकर और आप ही से मेरे नाम का पत्र चुरा लाकर मुलजिम रुपया ठग कर ले गया।"

मि० विल्स "सेठ जी न जाने आपने क्या पहेली सी समझा दी है। कृपा करके साफ साफ सारा हाल कहिये। मैं आपके कहे को बिल्कुल न समझा।"

यह सुनकर सेठ ने शुरू से लेकर सारा हाल मुख्तसिर तौर पर मि० विलस को सुनाना शुरू किया। मि० विलस के कहने पर सार्जेंट काशीराम ने सेठ के बयान को रिपोर्ट के तौर पर लिखना शुरू किया। सेठ ने आदि से लेकर अन्त तक सारा हाल सुना दिया और सार्जेंट ने शब्द सहित लिख लिया। सेठ के बयान खतम हो जाने पर मि० विलस ने सार्जेंट वाली लिखी रिपोर्ट पर एक नजर डाली और फिर उसको सेठ के आगे रख दिया और कागज पर हस्ताक्षर करने को कहा। सेठ ने एक सरसरी निगाह से रिपोर्ट को पढ़ा और फिर अपने दस्तखत कर दिये।

"यह हमने आपके बयान की रिपोर्ट कर ली है और इसको दफ्तर ले जाकर जाँच पड़ताल के लिये कार्यवाही करेंगे, तब फिर जासूसी विभाग में उसकी नकल करके भेजेंगे, तब वहां से आज ही कोई न कोई इस कार्य के लिये नियुक्त होकर आपके पास आयेगा। अब आप मुझे जाने की इजाजत दीजिये।" कहकर मि० विलस खड़े हुये और चलने को तय्यार हुये।

उनके उठते ही तीनों सार्जेंट भी उठ बैठे और चलने लगे। सेठ ने आगे बढ़कर सब से हाथ मिलाये तब मैकडोनल्ड से हाथ मिलाकर सब पुलिस अफसर कमरे के बाहर होगये। नौकर ने उन सब लोगों को लिफ्ट द्वारा सबसे नीची मंजिल में पहुँचा दिया। जहाँ से वह बाहर खड़ी हुई पुलिस की मोटर

वे चढ़कर कोतवाली पहुँचे। मि० विल्स ने कोतवाली पहुंचते ही रिपोर्ट की खाना पूरी कर दी और रिपोर्ट एक साइकिल सवार द्वारा डाइरेक्टर सी० आई० डी० विभाग के दफ्तर में पहुँचवादी। डी० जी० ने रिपोर्ट को अपने असिस्टेन्ट जितेन्द्र प्रताप को तहकीकात के लिये दे दी।

जितेन्द्र प्रताप पहले एक मामूली सिपाही थे, परन्तु अपनी योग्यता से बढ़कर डिप्टी डाइरेक्टर जनरल के पद तक पहुँच सके थे। उन्होंने रिपोर्ट पाते ही उसे गौर से पढ़ना शुरू किया और वह ज्यों ही तीर व खत के ब्यान को पढ़ने लगे उनका हृदय एक दम आनन्द से भर गया क्यों कि उनको उम्मीद हो गई कि यह मुकाबिला किसी भयङ्कर दल से पड़ेगा और कामयाबी होने पर उच्च पद व वाहवाही मिलने की उन्हें पूर्ण आशा थी। अतः अधिक समय न नष्ट करके वह कमरे से बाहर निकले और मोटर में बैठकर लाल-कोठी पहुंचे। नौकर के हाथ उन्होंने अपना कार्ड भिजवाया और शीघ्र ही सेठ के कमरे में घुसे जहाँ सेठ ने उठकर उनका उचित सम्मान किया। मि० मैकडोनाल्ड ने भी उनसे हाथ मिलाया। तत्पश्चात कुर्सी पर मेज के पास ही बैठ गये।

"मैं आपके यहाँ उस डाके के बारे में तलाशी व कुछ जरूरी बातें तहकीकात करने आया हूँ जिसके लिये आपने मि० विल्स को रिपोर्ट की थी। मैं समझता हूँ कि मैं श्रीमान् ईदुल जी से ही बातें कर रहा हूँ।" मि० प्रताप ने सेठ से पूछा।

"ओहो ! मैं तो बड़ा शर्मिन्दा हुआ सा हूँ । जिसने स्वयम् अपना रुपया अपने हाथों से मुलजिम को दे दिया था । मैं आपके पूछे हुये सवालों का पूरी तरह साफ २ जवाब दूँगा । मुझे हर्ष है कि आपने मेरी इतनी मदद किया जी मैं किन शब्दों से आपको धन्यवाद दूँ ।" सेठ ने विनीत स्वर में कहा ।

"यह तो हमारा काम है, आप नहीं तो कोई दूसरा ही पड़ता । मुलजिम का पता जल्द से शीघ्र लगा लेना ही अच्छा है । इसमें हमें मुनाफा होने की क्या जरूरत है ।" मि० प्रताप बोले ।

मैंने अपनी जिन्दगी में इतना बड़ा धोखा कभी नहीं खाया जैसा कि इस बार खाया है । इस बार केवल धोखा ही नहीं वरन् नुकसान भी काफी हुआ है । नुकसान में गये हैं पूरे पन्द्रह लाख—इतनी बड़ी रकम जितनी करोड़ों आदमी जिन्दगी भर में न कमा पाते उतनी इस बार नुकसान में चली गई है ।" सेठ ने कहा ।

"जो आदमी नकली मि० मैकडोनाल्ड बनकर आया था । उसकी सूरत शकल कैसी थी और वह कुछ न कुछ असली मि० मैकडोनाल्ड से मिलती थी या नहीं ? ।" मि० प्रताप ने पूछा ।

"आपकी बाईं हाथ की कुर्सी पर असली मि० मैकडो-नाल्ड बैठे हैं । देखिये न आप अंग्रेज हैं, आपकी चाल ढाल,

नाक नकशा व बोली ही आपके अस्तित्व का पूर्ण परिचय दे रही है आप न तो ठीक प्रकार अँग्रेजी बोल ही सकते हैं और न समझ ही सकते हैं मुलजिम का रङ्ग बिल्कुल साफ शक्ल सूरत देखने में अच्छी थी, साफ हिन्दी बोलता था और समझता भी था। उसकी चाल ढाल और कायदे केवल उसके विधर्मी होने का सबूत देते थे। मैंने समझा कि वह क्रिश्चियन महोदय हैं, अतः अधिक ध्यान न दिया। यह नाम नहीं बताया कि कौन क्रिश्चियन व कौन पूर्ण विदेशी है! इसकी उम्र केवल तीस साल की होगी। जब कि आपको (मैकडोनाल्ड की तरफ इशारा करके) लगभग पचास साल के हैं। असली व नकली का फर्क यूं नहीं कर सका कि नकली के बाद मैंने असली को देखा है।" ईदुल जी ने मि० प्रसाद को समझाया।

"जब आप मि० मैकडोनाल्ड को जानते ही न थे तो किस वजह से आपने इतनी लम्बी रकम के लिये उसका इत्मीनान कर लिया।

"जब मैंने उससे बातें कीं तो मैंने उससे पूछा कि किस प्रकार मैं उन्हें रुपये दे सकता हूं। इस पर मुलजिम ने मेरे भाई का लिखा हुआ लिफाफा जिसके अन्दर खत काफी हिफाजत से रखा था और जिसके ऊपर अनेक स्थान पर मुहरें लग रहीं थीं, ताकि खत खोलने पर मालूम हो जाय कि किसी ने रास्ते में खोला है मुझे दिया। मैंने बारीकी से उस लिफाफे की हालत को जाँचा तो उसकी सारी मुहरें ठीक थीं, तब मैंने

लिफाफा खोला और अपने भाई जहांगीर जी का खत निकाल कर पढ़ा जिसमें उन्होंने मि० मैकडोनाल्ड को विश्वास-पात्र बताया था और रुपया सौंप देने के लिये खुले शब्दों में आज्ञा दे दी थी। अतः मैंने उसका विश्वास किया और चुपचाप बिना ही हुज्जत किये रुपया सौंप दिया।" कह कर सेठ ने दराज से जहांगीर जी की चिट्ठी निकाल कर दिखलाई।

"आपने रुपया नकद दिया या चैक से।"

"मैंने उसे नेशनल बैंक का चैक दिया था और साथ में अपने एक आदमी को भेज कर उसे कैश भी करा दिया था ताकि दिक्कत न हो। वहां पर भी उसने चैक के ऊपर बड़े इत्मीनान के साथ ए.न० सी० मैकडोनाल्ड के दस्तखत बना दिये थे।" सेठने उत्तर दिया।

"तब तो वह पूरा ही उस्ताद निकला। अच्छा यह खत किसको और कहां मिले?।" मि० प्रसाद बोले।

सेठ ने मेज पर लगी घंटी के बटन से हाथ लगाया ही था कि शीघ्र नौकर ने कमरे में प्रवेश किया। सेठने उसे गेस्ट रूम वाले नौकर को बुलाने का आदेश दिया जो कुछ ही मिनटों में आकर खड़ा होगया।

"तुमको यह तीर और खत कहां और कैसे मिले।" मि० प्रताप ने नौकर से पूछा।

"जब मैंने सुना कि जो साहब आये थे वह सेठ का रुपया लेकर भाग गये हैं तब मैंने अन्दर घुसकर आकर देखा कि उनका कितना सामान है। देखता क्या हूँ कि बालक पढ़ने वाली मेज के बीच में एक लाल खत एक तीर से दबा रखा है, अतः मैंने दोनों चीजें लाकर सेठ को दे दी" नौकर ने कहा।

"उसके सामान का तुमने क्या किया।"

"उस सामान को मैंने स्टोर में ताला लगाकर बन्द कर दिया ताकि समय पर हिफाजत से मिल सके।"

"अच्छा चलो पहले तुम हमें उनका नाम दिखाओ कि उसमें क्या है शायद कुछ पता उनकी किसी न किसी चीज से जो सामान में बरामद हो लग सके।" कहकर मि० प्रताप खड़े हो गये उनके साथ मि० मैकडोनाल्ड व सेठ ईदुल जी भी उनके साथ चलने लगे।

नौकर लिफ्ट से सब को ऊपर आठवें मंजिल पर ले पहुंचा जहां पर कि गेस्टरूम के पास ही उसका 'स्टोर रूम' था। इसमें एक अटैची एक सूटकेस, एक बिस्तर व एक चार-खानेका टिफन केरियर था। सन्दूक वगैरा खोलने पर कुल घास मिट्टी के अलावा कुछ न मिला। बिस्तर के अन्दर एक छोटी सी दरी, एक सफेद चादरा व एक ओढ़ने के चादर के अलावा कुछ न था। टिफन केरियर में कुछ खाने का सामान एक अखबार में रखा था।

मि० प्रताप ने अखबार उठाकर जेब में रख लिया और सेठ के साथ कमरे की ओर चले आये। सेठ ने नौकर को चाय इत्यादि लाने का आदेश दिया। चाय पीने के बाद मि० प्रताप दूसरे दिन आने का वायदा करके अपने दफ्तर चले गये सेठ ने उन्हें सम्मान पूर्वक विदा किया और उनको धन्यवाद दिया।

दूसरे दिन बम्बई से निकलने वाले समाचार पत्र 'राष्ट्र' के मुख पृष्ठ पर ही बड़े २ अक्षरों में छपा था :—

"आताताइयों को दबाने के लिये सरकार ने बीड़ा उठाया।

पन्द्रह लाख का डाँका जो लाल-कोठी में कुछ ही दिन पहले ईतुलजी के यहाँ पड़ा था और आताताइयों का कुछ पता न लगा इसलिये बम्बई सरकार ने अपने सरकारी गुप्तचर विभाग के डिप्टी डाइरेक्टर जनरल मि० जितेन्द्रप्रताप सिंह को इस काम के लिये नियुक्त किया है। मि० प्रताप सरकार के गुप्तचर विभाग के कुछ चुने हुये व्यक्तियों में स्थान रखते हैं। आप यू० पी० के एक सम्पन्न सक्सेना कायस्थ जेल के मैडीकल आफिसर साहब के सुपुत्र हैं। बचपन ही से आपकी रुचि विज्ञान की तरफ विशेष थी अतः आप विज्ञान के लिये लन्दन अमरीका तक हो आये हैं। आपने विज्ञान के ही आधार पर और उसकी पूरी मदद से ही उन्होंने अपने समय का सब से

बड़ा वैज्ञानिक दल जिसको लोग 'खूनी डकात' कहते थे पकड़ा और तहस-नहस कर डाला। अतः अब आप से यही आशा है कि आप शीघ्र ही इस 'भयानक पंजे वाले दल को शीघ्र नाशकर डालेंगे। हमारी सारी जनता की भगवान् से यही प्रार्थना है कि भगवान आपको उनके काम में शीघ्र सफल कर सकें।"

मि० रुद्रकण्ठ वर्मा ने यह खबर अपनी चाय की मेज पर बैठे २ ही पढ़ डाली और इसके पढ़ते ही हर्ष का सञ्चार हुआ क्योंकि मि० प्रताप व मि० वर्मा एक ही जाति के थे और दोनों ने साथ ही शिक्षा पाई तथा दोनों वंशों में काफी मेल था। अतः उनको यह तो उम्मीद होगई कि चलो एक साथी इस कार्य के लिये मिला जो उनके बराबर ही हर बात का ज्ञाता था।

तेरहवां परिच्छेद

उड़ने वाली मोटर

नकली मि० मैकडोनाल्ड ने ज्योंही देखा कि कार आँखों से ओझल हो गई है त्यों ही व ट्राम के ठहरने के स्थान पर आ खड़े हुये और जैसे 'किङ्ग सर्किल' वाली ट्राम गाड़ी आकर रुकी त्योंही उसपर सवार होकर किङ्ग सर्किल जा उतरे। वहाँ से आप धीरे धीरे टहलते हुये एक छोटी सी सड़क

के ऊपर जाकर नं० १५७ बंगले में घुस गये । बंगला निहायत छोटा था पर उसकी बनावट बहुत ही सुन्दर थी । इसके बाग में भी तरह २ के खुशबूदार फूल लग रहे थे और फलों के भी पेड़ थे । हर वक्त फूलों की खुशबू में बाग व कोठी का कोना२ महकता था । इस कोठी का नाम था 'चन्द्रविलास' । बटन दबाते ही एक दूसरे युवक ने दरवाजा खोला तब दोनों आदमी अन्दर जाकर बैठ गये ।

"सूरज आज का दिन तो बड़े महत्व का था कहो कैसे कहा । मुझे सफलता पर विश्वास तो था मगर साथ यह भी खटका था कि कहीं दशा बदलने से कुछ बिगाड़ हो न जाय ।" दूसरे युवक ने आने वाले से पूछा ।

"राधेश्याम आज का काम तो विशेष महत्व का था ही मगर मुझे यह उम्मीद न थी कि भगवान भी इतनी सहायता करेगा कि जो कुछ हम चाहेंगे वही होगा । हर काम में कामयाबी हमारी दासी रही और जो कुछ चाहते रहे वही हुआ । न तो सेठ ही ने कुछ आना कानी की और चुप चाप चैक निकाल कर लिख दिया कि पन्द्रह लाख रुपया फौरन मिल जावे । सूरज ने राधेश्याम से समझा कर कहा ।

"अच्छा भाई यह सब बात यों न मानी जायगी । काम तो हो ही गया है अब शीघ्र ही हम दोनों को यहाँ के काम से निवृत होकर पैलिस्टाइन चलना चाहिये ताकि मजेस्टी को

यह खुश खबरी सुना सकें और रुपये को भी जमा कर आयें।" राधेश्याम बोला।

यह बातें करते ही दोनों युवक कुर्सियों पर से उठ खड़े हुये और सूरज अन्दर जाने वाले किवाड़ खोल कर कोठी में चला गया। राधेश्याम भी पास वाले कमरे में चला गया और अटैची को लोहे की बड़ी तिजोरी में रख आया। और कुछ ही देर में सूरज के पास पहुंच गया जोकि कपड़े बदल चुका था।

"मेरी राय यह है राधेश्याम कि इन कपड़ों को जला डालना चाहिये न जाने किस दुर्भाग्य का यह कारण बनजाय।"

"बात तो सलाह की है।" न कपड़ों को निकाल कर सामने वाले चौके के चूल्हे में रख आ मैं अभी दियासलाई लाया सालों में तेल लगा कर आग लगा दो।

"दियासलाई तो मेरे पास है। कहकर सूरज ने कपड़े उठा लिये तब राधेश्याम ने बाकी बचे कपड़े उठा लिये। दोनों ने चौक में जाकर रख दिये। इन कपड़ों में वही दोनों सूट थे जिनको पहने हुये सेठ जी या सेठ जी के किसी आदमी ने भी देखा था। टोप तक में आग लगा दी। सब कपड़ों को पूरी तरह खाक करके दोनों कमरे से बाहर आये और बैठक में आकर बैठ गये।

"राधेश्याम कुछ खाना है या नहीं, न हो तो होटल ही चलो भूख लगी है करीब बारह बजने आये।

'जब से मजेस्टी ने नं० २४२ को अपने पास बुला लिया है तब से खाने पीने की निहायत तकलीफ है। अच्छा होटल में चलते हैं मगर पहले तुम अपना मि० मैकडोनाल्ड का मेक अप तो साफ करो वरना क्या अपने साथ मुझे भी सुसराल ले चलोगे।' राधेश्याम ने मुँह की तरफ इशारा किया।

सूरज ने फौरन ही कानों के पास से झिल्ली की तनी खोल दी और झिल्ली उतार डाली। इस समय सूरज की शक्ल पूर्णतया बदल गई थी। उसका सांवला चहरा भरा हुआ था और देखने में सुन्दर लगता था। शीघ्रता से उसने श्रृङ्गार मेज के पास जाकर अपने ऊपर को कढ़े हुये बाल पहले की तरह बांयी तरफ काढ़े अब उसको देख कर यह कहना बिल्कुल मूर्खता की बात थी कि यही युवक चार घण्टे पहले पूर्ण रूप से अंग्रेज लगता था। मेज पर रखे हुये दूधिया रङ्ग के तरल पदार्थको हाथमें लेकर उसने उन सारे स्थानों पर लगाया जहां पर उसने अंग्रेज बनने के लिये अपना रंग गोरा कर रखा था। तौलिये से पौंछते ही रङ्ग फिर से जैसे का तैसा होगया और इस प्रकार पुनः अपनी पुरानी दशा पर आगया जो हालत उसकी स्वरूप भरने से पहले थी। अतः सब प्रकार से संतुष्ट होकर वह दोनों जने कोठी का ताला लगाकर बाहर निकले और पास ही वाले होटल में खाना खाकर लौट आये।

घड़ी देखते ही राधेश्याम बोला "धीरे २ डेढ़ बज ही गया है। हम लोगों को चाहिये कि पांच बजे तक यहां से चल

निकलें ताकि आठ बजे तक चलने के बाद हम उड़ कर रातों-रात पैलिस्टाइन पहुँच सकेंगे। इसलिये मैं गैरेज में जाकर मोटर की देख-रेख करता हूँ और तब तक तुम यात्रा का सारा सामान बाँध कर ठीक कर लेना जरूरत की सारी चीजें अवश्य बाँध रखना। समय कम है शीघ्रता करना।"

"अच्छा यह ठीक है। खाना भी टिफिन में रख लूँगा कपड़ों के सिवाय सामान क्या ले जाना है मेरा काम तो पूरा समझो अपनी फिक्र करो। शीघ्रता से यहाँ से चल दो न जाने कब खतरा हो सकता है।" सूरज ने उत्तर दिया ?

कील पर से गैरेज की चाबी उतार कर राधेश्याम कमरे से निकल कर गैरेज में चला गया और मोटर की सफाई इत्यादि के साथ उसकी मशीन की भी जाँच करने लगा ताकि रास्ते में कष्ट न हो। उधर सूरज ने भी तमाम जरूरत के कपड़े एक बड़ी अटैची में संभाल कर रखे तत्पश्चात नोटों वाली अटैची निकाल कर काली रङ्ग डाली ताकि पहचान में न आ सके कि यह वही अटैची है जिसमें मुलजिम रुपये रख कर ले गया था। दोनों अटैची ठीक करके मोटर का 'स्पेयर पार्टस व टूल बक्स' भी एक स्थान पर रख लिया और दूसरे कपड़े पहन के या. । के लिये पूर्णरूप से तय्यार हो गया। इतने ही में राधेश्याम ने गाड़ी ठीक करके बरामदे में ला खड़ी की। राधेश्याम ने भी दूसरे कपड़े पहन कर यात्रा के लिये तयारी करली। पूर्ण रूप से तय्यार होकर दोनों ने सारा सामान मोटर के अन्दर ला रखा

और कोठी का ताला लगाकर मोटर में आ बैठा। राधेश्याम ने बरामदे से मोटर निकाल कर सड़क पर खड़ी की तब तक सूरज भी फाटक का ताला लगाकर मोटर में आ बैठा।

राधेश्याम ने गाड़ी परेल की तरफ मोड़ी और वहाँ से संध्या के लिए खाना लिया और फिर गाड़ी वापिस करके सीधे चले गये। इस समय पूरे चार बज चुके थे जब कि मोटर यात्रा के लिये पूरी तरह रवाना हुई थी। बम्बई की आस पास की सीमा पार करने के बाद मोटर एक जंगल में पहुँची। यह स्थान अत्यन्त रमणीक था, पास ही सड़क के बायीं तरफ कुछ ही गज की दूरी पर एक स्वच्छ नदी बह रही थी। मील मीटर देखने पर मालूम हुआ कि करीब .०० मील निकल आये थे। समय की घड़ी में उस समय सात बज कर पन्द्रह मिनट हुये थे।

"इससे अधिक उपयुक्त स्थान आगे मिलने की सम्भावना बिलकुल नहीं है। नदी भी पास है समय भी हो चुका अतः पहले खाना खालेना चाहिये फिर अंजिन ठंडा होने पर उसे ठीक करने के बाद यहाँ से सीधे उड़ चलेंगे। जब तक पूर्ण रूप से अन्धेरा भी हो जायगा। हमारा काम भी पूरा हो जायगा कुछ घिस-घिस न रहेगी।

"मेरी भी समझ यही कहती है। यही स्थान ठीक रहेगा। सूरज ने भी समर्थन किया।

एक चौड़े से स्थान पर जाकर राधेश्याम ने गाड़ी खड़ी कर दी और दरवाजा खोलकर नीचे उतर आया। सूरज ने भी दरवाजा खोला और नीचे उतर आया। दोनों थोड़ी देर तक गाड़ी के आस-पास टहलते रहे फिर राधेश्याम ने इंजिन का बौनट खोलकर गाड़ी की हालत मालूम की तब तक सूरज ने गाड़ी में रक्खी हुई बाल्टी को निकाला और नदी पर जाकर भर कर लाया। तत्पश्चात राधेश्याम ने बाल्टी के पानी को लेकर अंजन में डाल दिया और तब फिर सूरज ने दो बाल्टी पानी कपड़े की मुशक में भरा ताकि रास्ते में पानी की जरूरत पर काम आ सके। इसके बाद चौथी बाल्टी भरकर वह मोटर के पास ही घास के हरे मैदान में पड़े पत्थर के पास ले आया जिसको राधेश्याम ने अब तक साफ कर रखा था।

भारी बाल्टी रखने के बाद सूरज ने गाड़ी में रखा टिफन बक्स उठाया और खोलकर पत्थर पर सब सामान रख लिया। शीघ्र ही दोनों आदमी खाना खाने लगे और थोड़ी ही देर में खाना खाकर फारिग हो गये। जेब में से निकाल कर राधेश्याम ने दो सिगरेट जलाईं एक खुद पीने लगा और दूसरी सूरज को पीने के लिये दी। घड़ी की तरफ देखा तो आठ बज चुके थे।

"अब हम दोनों को अपनी फौजी पोशाकें पहन लेनी चाहिये।" यह कहकर सूरज ने बड़ी अटैची खोलकर दो काली पोशाकें निकालीं जो दुर्गम दुर्ग का प्रत्येक कार्य कर्त्ता पहनता था बिना इस पोशाक के पहने किले में घुसने के लिये या तो

मजेस्टी या और कोई बड़ा अफसर जिसे स्वयम् संचालक नियुक्त कर दे यहाँ-वहाँ अपने सवालों के उत्तर पाने पर घुसने देता है।

सिगरेट पी चुकने के बाद दोनों आदमियों ने अपनी पोशाकें बदल डाली और अब कुगम संघ के पूरे सैनिक बन गये थे। राधेश्याम ने एक बार फिर मशीन की जाँच की और तब यान वाला इंजिन खोलकर गाड़ी में आ बैठा। गाड़ी स्टार्ट होते ही करीब दो फर्लाङ्ग तो गई होगी और तब फिर उसके बाद धीरे २ हवा में उठने लगी और लग-भग पांच मिनट बाद ही मोटर ने बताया कि वह जमीन से छः सौ मील ऊपर जा चुकी है। राधेश्याम ने ऊपर उठाने वाली कल बंद कर दी और आगे चलाने वाली कल को दबाते ही गाड़ी सवा दो मील की रफ्तार से हवा में भागने लगी।

बिना किसी प्रकार की तनिक भी आवाज किये गाड़ी उत्तर-पूर्व की तरफ भागने लगी। कुतुबनुमा की छोटी सी घड़ी ठीक बता रही थी कि गाड़ी उत्तर-पूर्व दिशा को जा रही है। सूरज ने जो नीचे धरती की ओर नजर डाली तो शीघ्र ही पता चल गया कि इस समय अन्धेरे में केवल अन्धकार के कुछ भी दीखना सर्वथा मुश्किल है। गाड़ी के अन्दर की रोशनी जल रही थी, खिड़की वगैरह सब के कांच बन्द थे ताकि ठंडी समीर न लग सके। गाड़ी में पूर्ण शान्ति थी राधेश्याम का ध्यान प्रत्येक मिनिट गाड़ी के ऊपर ही रहता था क्योंकि जरा भी

ध्यान घट जाने से बहुत बड़े नुकसान होने की सम्भावना थी। मोटर ने शीघ्र ही बता दिया कि करीब पाँच सौ मील रास्ता तय किया जा चुका है और घड़ी ने दस बजाये। यकायक गैस मीटर ने डिसचार्ज होकर बताया कि गाड़ी की रफ्तार तेज होने की वजह से गैस ठीक समय पर नहीं पहुँच पा रही है इसलिये राधेश्याम ने स्पीड लीवर पर हाथ रख कर रफ्तार कुल सवा सौ मील फी घंटा करदी।

"क्यों स्पीड कैसे कम हो गई क्या जान पूछकर कम की है ?" सूरज ने पूछा।

"हाँ! क्योंकि गाड़ी में गैस कम रह गई है और गाड़ी इतनी तेज रफ्तार पर चलाने से खतरा था कि कहीं एकाएक बन्द न हो जाय इसलिये रफ्तार कम कर दी है। ताकि देर ही में सही मगर सही सलामत घर तो पहुँच जायें।" राधेश्याम ने उत्तर दिया।

अच्छा पांच सौ मील के करीब तो आ गये हैं और कुल आठ सौ मील और जाना है। इस रफ्तार से तो कहीं सुबह चार-पांच बजे दुर्ग में पहुँच पायेंगे।" सूरज ने हिसाब लगाते हुये राधेश्याम की ओर देखकर कहा।

नहीं हम लोग चार बजे से पहले ही पहुँच जायेंगे। वह ऐसे कि निरन्तर एक रफ्तार से गाड़ी चलने के बाद उसकी रफ्तार स्वयम् ही तीस मील फी घन्टा के हिसाब से

"अच्छा अन्दर आओ अभी खुलवाता हूँ।" कह कर नायक ने टेलीफोन उठा लिया और १० नम्बर मिला दिया।

थोड़ी देर के बाद मजेस्टी ने पूछा "हलो? कौन बात कर रहा है।"

"मैं हूं नम्बर १४ सिंहगढ़ समझता हूं कि नम्बर एक राज गढ़ से बातें कर रहा हूँ।'

'हाँ! मै हूं नं० १ राजगढ़ व सिंहगढ़, कहो क्या कहना है।'

'नं० ५६ आ गया है वह चाहता है कि पीछे वाला बड़ा दरवाजा खोल दिया जाय ताकि उसकी मोटर अन्दर आसके कृपा करके यह काम करने का कष्ट करिये।'

'दरवाजा मैं खुलवा रहा हूँ। नम्बर ५६ से कहो कि मोटर अन्दर ले आने के बाद वह और नं० २३ राजगढ़ दोनों अभी आकर मुझ से लाइब्रेरी में मिले मुझे मिलने की अधिक उत्कण्ठा है मै उनका इन्तजार देखूँगा।' मजेस्टी ने फोन पर कहा और फोन रख दिया।

मजेस्टी के कहे अनुसार नायक ने नम्बर ५६ को खूब समझा दिया और बाहर आकर छोटी मोटर पर सवार होकर दुर्ग के दक्षिणी भाग में चल दिया वहाँ तक पहुँच भी न पाया था कि सामने की लाइन वाले चार कमरे उठकर अपने पास

वाले कमरों के ऊपर जा धरे और वह कमरे दुमंजिला मालूम देने लगे। एक काफी चौड़ा रास्ता निकल आया और सामने खड़ी मोटर साफ दीख रही थी। राधेश्याम मोटर के पास पहुँच कर छोटी मोटर से उतरा और तब बड़ी मोटर में बैठकर उसे अन्दर ले आया। सूरज बड़ी से उतर कर छोटी में जा पहुँचा और वह उसे ले आया। तब अपने आप ही दरवाजा बंद हो गया और वह कमरे फिर अपनी जगह आकर ठीक वैसे ही लग गये जैसे थे।

राधेश्याम ने मोटर लेजाकर गोल कमरे के पास जाकर खड़ी करदी और तब फिर दोनों आदमी छोटी मोटर में बैठ गये सूरज ने बड़ी मोटर में से छोटी अटैची केस निकाल लिया और अपने पास रख लिया। इस छोटीमोटर में बैठकर दोनों आदमी नीचे जाने वाले रास्ते के पास आये और चौकी-दारों के प्रश्नों का जवाब देते हुये तीसरी मंज़िल में मजस्टी की लाइब्रेरी में पहुँचे जिसके दरवाजे पर मजेस्टी खड़ा हुआ उन दोनों का इन्तजार देख रहा था। उन दोनों से बातें करने के लिये वह काफी इच्छुक था। अतः वह दोनों को अन्दर ले गया और मेज के पास पड़ी कुर्सी पर खुद बैठ गया और उन दोनों को भी अन्य कुर्सियों पर बैठने का इशारा किया। डार्लिंग पहले से ही मेज के पास मजेस्टी बांये हाथ पर रखी हुई कुर्सी पर बैठा था। सूरज ने अटैची खोल कर पन्द्रह लाख के नोट मजेस्टी के सामने रखी मेजपर रख दिया। मजेस्टी ने एक बार नोटों की तरफ देखा और फिर डार्लिंग की तरफ सरका दिया।

"अच्छा रुपया तो ले ही लिया। शाबाश सूरज! खूब काम किया मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। मगर राधेश्याम सब से पहले यह बताओ कि तुमने उड़ने वाली मोटर की मशीन का प्रयोग करके देखा या नहीं मजेस्टी ने पूछा।

"उसी की मोटर पर हम तो सवार होकर आये ही हैं, देखिये न गोल कमरे के पास खड़ी करके आया हूँ। काम ठीक देती है। यह हमारे लिये बहुत उपयोगी साबित हुई है देखिये न जरा चल कर। राधेश्याम, ने उत्तर दिया।

"डार्लिङ्ग आओ उड़ने वाली मोटर देख आयें। यह कहकर मजेस्टी उठ खड़ा हुआ और राधेश्याम व सूरज भी खड़े हो गये। डार्लिङ्ग भी साथ चलने लगी। मजेस्टी व डार्लिङ्ग आगे २ चल रहे थे और वह दोनों पीछे। सीढ़ी पार करने के बाद मजेस्टी ने दीवाल में लगी खूंटी पर हाथ रख दिया और विजली का करेंट पूरी मंजिल में दौड़ गया। चौकीदारों ने मजेस्टी को सलाम किया वह तमाम रास्ता तय करके पहली मंजिल में आ पहुँचा। यहां से चारों आदमी खड़ी हुई दोनों छोटी मोटरों में बैठकर गोल कमरे के पास पहुंचे जहाँ पर राधेश्याम उड़ने वाली मोटर खड़ी कर गया था।

मजेस्टी ने देखा कि मोटर की बौडी काफी लम्बी है। मगर उसकी खूबसूरती में कोई फर्क न आ सका। बौनेट के अन्दर राधेश्याम ने दोनों अंजन बड़ी सफाई से फिट कर रखे

थे। मोटर का इंजन तो मोटर का था ही और उड़ने वाला इंजन वह तुर्ग से लेगया था। इंजनों के फिटिंग में राधेश्याम ने बहुत चतुराई दिखाई थी। हालांकि दोनों इन्जन बिलकुल पास २ व एक साथ ही थे, परन्तु उनमें से कोई भी एक दूसरे के कार्य में बाधा नहीं डाल रहा था। गाड़ी में से पेट्रोल सिस्टम निकाल कर गैस सिस्टम बिलकुल ठीक था। गाड़ी का रङ्ग खूनी लाल था और हाशिये की जगह पर चौड़ी २ काली लाइन थी। अन्दर बैठन के लिये बढ़िया स्प्रिङ्गदार गद्दियां थीं जिन पर लाल रङ्ग की ही मखमल चढ़ रही थी। पैर रखने के स्थान पर जूट का गलीचा पड़ा था। अन्दर कई बत्तियां थी, जो रात के वक्त जलाई जासकती थीं। दरवाजे व खिड़कियों के कांच चढ़ने उतरने वाले थे और अन्दर की तरफ नीले रङ्ग की मखमल के पर्दे लटक रहे थे जो इच्छानुसार लगाये व गिराये जा सकते थे गरज यह कि मोटर बढ़िया थी।

"अच्छा हम कल इसकी परीक्षा लेंगे, जो कुछ करना हो ठीक कर देना।" कह कर मजेस्टी अपने स्थान के लिये जाने लगा त्यों ही राधेश्याम व सूरज दोनों ने उनको उसी सिपाहियाना ढंग से सलाम किया।

चौदवां परिच्छेद

सेठ गंगादीन की चिन्ता जनक दशा

सेठ की चीख सुनते ही कमरे के बाहर खड़ा हुआ नौकर एक दम कमरे में घुस आया। उसने देखा कि सेठ मेज

के पास ही ज़मीन पर बेहोश पड़े हैं। नौकर यह दृश्य देखते ही एकदम बाहर निकल आया और तब फिर उसने नौकरों को इस बात की सूचना दी। जमादार सब नौकरों को साथ लिये सेठ के कमरे में पहुँचा और तब उसने उन सब की मदद से सेठ को उठाकर बाहर हॉल में पड़ी हुई बड़ी मेज पर लाकर लिटा दिया। इसके अनन्तर वह फिर दूसरी मेज के पास गया और तब उसने सेठ के सेक्रेटरी व फेमली डाक्टर को फोन किया। तमाम नौकर सेठ को होश में लाने के लिये अत्यन्त व्यग्र थे। जमादार ने सेठ के मुंह पर पानी डाला, बिजली का पंखा पूरी रफ्तार पर चला दिया मगर होश फिर भी न आया। सेठ की नाड़ी बहुत ही मध्यम स्वर से चल रही थी और दाँतों की सिथी बन्द थी।

थोड़ी ही देर में प्राइवेट सेक्रेटरी मि० चक्रवर्ती आ गये और उनके पीछे ही डाक्टर के० पी० दत्त जो सेठ के फेमली डाक्टर थे आते दिखाई दिये। सारे नौकर एक तरफ हो गये। डाक्टर ने नाड़ी परीक्षा की और तब फिर स्टेथस-कोप लगाकर दिल की हालत जानी।

"सेठ को कोई बहुत बड़ा दिमागी धक्का लगा है इस लिये इनके दिल पर बहुत बड़ा असर पड़ा है जिसकी वजह से दिल की गति बढ़ गई है और हालत नाजुक होगई है। मगर कोई ज्यादा बात नाजुक नहीं है। दवाई देता हूँ।" डाक्टर ने सेक्रेटरी मि० मदनगोपालजी की तरफ देखकर कहा।

"मेरी राय में तो सेठ को घर पर ले चलें ताकि आप इलाज अधिक परिश्रम से कर सकेंगे तथा हर बात की सुविधा भी रहेगी। कहिये आपकी क्या राय है डाक्टर साहब।" सैक्रेटरी ने कहा।

"आपका कहना तो ठीक है मि० मदनगोपाल मगर बात यह है कि मैं यह चाहता हूँ कि पहले सेठ होश में आ जायें तब फिर सेठ को घर ले चलेंगे क्योंकि बात यह है कि होश में आ जाने से इनकी हालत में सुधार हो जायगा और तब फिर इस प्रकार मुझे इनकी हालत की तरफ से कुछ बेफिक्री सी हो जायगी। न जाने इतनी देर तक बेहोश पड़ा रहना क्या न रङ्ग लाये। इसलिये मैं होश में लाने का उपचार यहीं करूंगा। अपने किसी आदमी से एक गिलास ठण्डा पानी मंगवाइये।" कहकर डाक्टर अपनी दवाइयों का सन्दूक खोलने लगा।

मदनगोपाल ने जमादार की तरफ देखा और तब जमादार ने शीघ्र ही महाराज को पानी लेने के लिये भेजा। डाक्टर ने छाँटकर बक्स में से दो तीन भूरे रङ्ग की शीशियाँ निकालीं और एक सफेद रङ्ग की छोटी सी बन्दूक की गोली की तरह की ट्यूब निकाली। इसके दोनों तरफ ढक्कन लग रहे थे जिनकी वजह से मुंह बन्द थे। डाक्टर ने दोनों तरफ के मुंह के ढक्कन खोले जिसके खोलते ही एक तरफ तो सुराहीदार गर्दन वाला छेद निकल आया और दूसरी तरफ के छेद

में एक ट्यूब लग रहा था जिसमें अनेक छेद थे। यह ट्यूब डाक्टर ने सेठ के सीधे नथुने के पास लगाई! फिर थोड़ी देर बाद बाँये नथुने से लगाई। थोड़ी देर तक बारी से दोनों नथुनों के पास लगाने के बाद सेठ ने करवट ली और होश सा आने लगा और डाक्टर ने तब तक ठंडे पानी के छींटे मारना शुरू कर दिया पाँच मिनट में सेठ ने आंख खोली दी और अब उन्हें होश आ गया था जैसे सेठ ने आँखें खोलीं त्योंही उनके मुँह से निकला हाय मेरा रुपया'।

"जी हां आपका रुपया ठीक है सुरक्षित है। शान्ति रखिये' डाक्टर ने धीरज बंधाते हुये कहा।

"कहां। हाय मेरा रुपया लेगया कहां, लेगया कहां, बताओ' कहकर सेठ पागलों की भांति उठ खड़ा हुआ और इधर उधर दौड़ने लगा। कुछ देर बाद ही वह भाग कर अपने दफ्तर में पहुंचा और खुली हुई तिजोरी के अन्दर रुपया देखने लगा तो शीघ्र ही मालूम हुआ कि चोर ताला बन्द है। उसके अन्दर का चौदह लाखरुपये का सोना व हुन्डी पर्चे ठीक तरह रखे हैं केवल कलकत्ते ब्रॉच का आया हुआ पौने दो लाख रुपया गायब है।

सेठ गंगादीन ने तमाम माल कई बार गिना और पूरी तरह इत्मीनान करके कि इसमें से कुछ नहीं लिया गया ज्यों का त्यों ही रख दिया। वहाँ पर अपने विश्वासी नौकरों का कड़ा पहरा बैठा दिया और तब फिर ठंडी सांस ली इस वाकये

से सेठ की चेतन्य शक्ति फिर वापिस आगई और वह शान्ति से डाक्टर से बातें करता हुआ नीचे तक आया और फिर मदनगोपाल सैक्रेटरी को साथ ले अपनी हवेली को चला गया।

पन्द्रहवां परिच्छेद

जासूसी तय्यारी

बैंक से वापिस आकर मि० वर्मा सीधे अपने बंगले पर पहुँचे। उस वक्त तक उनके पास सुनील था। मोटर से उतर कर दोनों आदमी सीधे अपने बैठने के कमरे में जा पहुँचे। सुनील ने बेग तो एक तरफ रख दिया और कुर्सी पर बैठ गया जो पास ही पड़ी थी। थोड़ी देर तक मि० वर्मा शान्त पूर्वक बैठे रहे और तब सुनील भी पास में रखा एक अखबार पढ़ने लगा यकायक मि० वर्मा ने एक सिगरेट निकाली और उसे सुलगाया। कुछ देर पीने के बाद वह सुनील की तरफ मुड़े और बातें करने लगे।

'सुनील' आज का मामला निहायत अजीब है समझ में नहीं आता है क्या किया जाय।"

"यह मसाला किसी ऐसे वैसे आदमी के हाथ का नहीं है वरन् मुलजिम अकेला भी नहीं है उसका या तो एक गिरोह है या काफी साथी थे क्योंकि इतना बड़ा कार्य कर लेना कुछ मामूली बात न थी।"

"लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि आज ऐसा कौनसा गिरोह पैदा होगया है जो कि ऐसा दुःसाहस कर सका। खूंखार डकैत का नेता नंदलकुमार मारा ही जा चुका और उनके तमाम योग्य साथी जेल में पड़े सड़ रहे हैं नये पैदा हुए दल 'नीला पंजा' को इतनी मजाल नहीं कि वह इतना कठिन काम कर सके। यह तो केवल ठगों का दल मालूम होता है क्योंकि कल परसों ही जो बम्बई के सेठ हेडुग जी पारसी का पन्द्रह लाख रुपया लिया गया है वह तो पूरी ठग विद्या थी वरना और कुछ नहीं। इनकी ताकत भी कमजोर है।"

"यह बात तो जब तक नहीं कही जा सकती कि जब तक कुछ न कुछ हाल उस गिरोह के बारे में न मालूम हो। उस गिरोह की कोई अब तक ज्यादा चर्चा तो प्रजा में नहीं है लेकिन सब कुछ मानते हुये कि यह किसी की चालाकी या कार्यवाही हो सकती है मगर हरसूरत में यह मानना ही पड़ेगा कि इस मामले का करने वाला चालाक ही नहीं वरन् पूर्ण रूप से सुसज्जित है क्योंकि छड़ों के गलाने का काम मामूली नहीं है और सब काम तो होसकते हैं छड़ कितनी मोटी थी और असली इस्पात की बनी हुई थी।" सुनील ने कहा।

मेरी राय तो यह है कि अब कुछ न कुछ ढोंग खेला जाय ताकि वह मुलजिम का पता लगा सके और आसानी से

पकड़े जाने की तरकीब करनी चाहिये। बताओ ऐसी कोई तरकीब। जरा सोच समझ कर बताना। आज तुम्हारा इम्तदान ही सही।' मि० वर्मा ने सुनील से दुलार से कहा।

"अगर आप मुझसे तरकीब पूछते हैं तो मेरी समझ में आता है कि एक सूचना की तौर पर 'पायनियर' में लिख भेजिये कि 'यू० पी० प्रान्त के सी० आई० डी० विभाग के डाइरेक्टर जनरल को कई डाक्टरों ने 'राज-यक्ष्मा' निदान की है अतः वह अपने इलाज के हेतु चित्राल जो काश्मीर राज्य तथा रूस की सीमा पर है जहाँ की जलवायु इसके रोगियों के लिये अत्यन्त हितकर है जा रहे हैं। भारत सरकार ने उन्हें छः मास की छुट्टी देदी है। भगवान् से प्रार्थना है कि वह ऐसे सज्जन पुरुष को पूर्णतया रोग लाभ प्रदान करे। यह सूचना कल ही के अखबार में छपनी चाहिये और परसों आप अपने रवाना होने तथा चार्ज मि० भागवत को संभालने की सूचना छपवा दीजिये इसका इस विषय पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा।" सुनील ने उत्तर दिया।

"सुनील! तेरी यह बात बड़ी पेचदार है। समझा तो सही इसका क्या मतलब निकलेगा। तूने जो कुछ कहा वह ठीक कहा मगर मैं इसकी गुत्थी न समझा।" मि० वर्मा ने प्रश्न किया।

"आप तो बात २ में परीक्षा लेते हैं। आपने उस दिन

बताया था कि नहीं जब मैंने आपसे पूछा था कि [illegible] के पता लगाने के क्या क्या तरीके हैं तो आपने कहा था कि यों तो तरीके बहुत हैं और उन सबके साथ [illegible] वाले तरीके को भी बताया था। अगर मेरी परीक्षा के बारे में पूछना चाहते हो तो मेरा इस तरीके को लागू करने का यह मतलब है कि जब जिस गिरोह ने इतने बड़े बैंक पर एक करोड़ ग्यारह लाख का डाका डाला तो यह कोई ऐसा सीधा नहीं है। यह निश्चय है कि इसका नेता बहुत ही चालाक तथा चतुर होगा। जो शख्स इतना बड़ा खतरे से भरा काम कर रहा है उसने इस काम को करने से पहिले यह भी सोच लिया होगा कि इस काम में उसको कितना खतरा है और किस बात का। खतरों में आपकी शुमार जरूर की गई होगी क्योंकि इतने बड़े काम का संचालक क्या इतनी भी बात याद न रखेगा कि वह संयुक्त प्रान्तीय सरकार की राजधानी में अपना कार्य करने के लिये आमादा हो रहा है तथा पूर्ण भी हो गया है। सरकार क्या बरदाश्त कर सकेगी कि उसकी राजधानी में ही यह गहरा काम हो जाय और वह किसी सूरत से इसे रोकने का प्रबन्ध न कर सके। सरकार अवश्य साम, दाम, दण्ड, भेद से काम निकालेगी। मुलजिम का पूर्ण पता लगाये बिना मुशकिल है किसी को भी दण्ड देना अतः वह मुलजिम का पता लगाने के लिये कुछ भी उठा न रखेगी और खास तौर से जहाँ पर सरकार के पास आप जैसा योग्य व अनुभवी मनुष्य

मौजूद हो । अतः आतताई ने भी आपका ख्याल पहले कर लिया होगा और इस समय उसकी निगाह आपके प्रत्येक कार्य पर होगी। अतः आपका ध्यान हटाने के लिये ताकि आपको कार्य करने के लिये पूर्ण स्वच्छन्दता मिल सके यह करना जरूरी है।" सुनील ने वर्मा को समझाते हुए कहा।

इस बात को सुनकर मि० वर्मा ने उठकर सुनील की पीठ थप थपाई और कहा कि वह घर जाकर खाना खाकर तथा सुस्ता कर आये तब तक के लिये मामला स्थगित किया जाता है। सुनील इस पर उठ बैठा और टोप उठा कर कमरे के बाहर निकलने लगा कि मि० वर्मा भी उसके साथ२ बाहर आये। उन्हों ने बगल वाले दरवाजे की दरार में से देखा कि कोई आदमी खड़ा २ कनसुआ ले रहा था अतः शीघ्रता से लपक कर उस कोठरी में जा पहुँचे और कपड़े बदलने लगे उन्होंने देखा कि वह झाँकने वाला और कोई न था उनका चपरासी रामसेवक ही था। रामसेवक पर मि० वर्मा का काफी दृढ़ विश्वास था अतः वह कपड़े उतारते वक्त में सोचते रहे कि क्या कारण है। मगर कुछ सोच न सके। कपड़े उतारने के बाद मि० वर्मा ने अपने जरूरी कामों से छुट्टी पाई और फिर खाने के कमरे में आकर खाना खाया। इस समय करीब नौ बज चुके थे। इतने ही में सुनील का टेलीफोन आया कि जरूरी काम की वजह से इस समय नहीं आ पा रहा हूँ अतः सुबह शीघ्र आकर चाय आपकी मेज पर ही पीऊँगा।

मि० वर्मा भी काफी थक से गये थे इसलिये वह भी आराम करना चाहते थे अतः वह भी मोंगे के कमरे में जाकर बढ़े। मगर फिर थोड़ी देर बाद उठे और पास ही रखे टेली-फोन का चोंगा उठाकर नम्बर मिलाने लगे।

"हलो! 'पायनियर' आफिस। मैं सहकारी सम्पादक बेल डग्री पर हूँ। कहिये आप कहाँ से बोल रहे हैं।

'हलो! मैं लाटनरोड से मि० रुद्रकंठ वर्मा बोल रहा हूँ।"

'कहिये मेरे लायक कुछ सेवा है।"

"कृपया जो कुछ मैं बोलता जाऊँ आप एक कागज पर नोट करता लीजिये और प्रातःकाल ही निकलने वाले पत्र में अवश्य ही प्रकाशित कर दीजिये।"

थोड़ी देर बाद मि० रेय ने मि० वर्मा से बोलने के लिये कहा।

मि० वर्मा कहने लगे 'मि० रुद्रकंठ वर्मा, डाइरेक्टर जनरल सी० आई० डी० विभाग युक्त प्रान्त भारत के प्रमुख डाक्टरों ने राजयक्ष्मा निदान किया है और जलवायु के हेतु किसी बड़े स्थान पर जाने के लिए राय दी है। तमाम सरकारी और गैर सरकारी डाक्टरों ने जिन्होंने मि० वर्मा को देखा है यही मर्ज तशखीस किया है और उनकी जान विशेष संकट में बताई है।

तमाम डा० की राय से मि० वर्मा कल अपना चार्ज संभालकर छः महीने की छुट्टी पर चित्राल जो काश्मीर तथा रूस की सीमा पर स्थित है और जहाँ की जलवायु इस रोग विशेष के लिये अमृत तुल्य है जा रहे हैं उनकी चित्राल यात्रा शीघ्र ही शुरू हो जायगी और जहाँ तक हो सका चार्ज देने के दूसरे दिन अवश्य चले जायंगे यह निश्चित है ।

"बस इतना ही या और कुछ छापना है ।"

"छापना तो यही है मगर इसको या तो मुखपृष्ठ पर छापना या ऐसी जगह जहां पर विशेष रूप से लोगों की नजर पड़ सके ।"

"आप कह रहे हैं वैसा ही होगा ।"

"धन्यवाद कहकर एकबार मि० वर्मा ने टेलीफोन रख कर नम्बर कैंसिल कर दिये । फिर थोड़ी देर बाद मि० वर्मा ने टेलीफोन अपनी डिरो को मिलाया तो मालूम हुआ कि सिनेमा से लौटे नहीं हैं अतः फिर टेलीफोन रख कर बिस्तरे पर लेट गये । थोड़ी ही देर बाद वह सोगये और इन्हें दीन दुनियां का कुछ होश न रहा ।

करीब एक बजे जब कि मि० वर्मा की आँख खुली तो उस समय रात्रि का एक बजा था । पास ही पत्नी और छोटा बच्चा खाट पर सो रहे थे । मि० वर्मा उठे और तब उन्होंने

पत्नी को भी जगाया। इधर उधर की बात करने के बाद मि० वर्मा पत्नी को वास्तविक कार्य क्रम समझाने लगे।

"रानी! कल नार्दर्न इन्डिया सेंट्रल बैंक" में एक करोड़ और ग्यारह लाख का डाका पड़ गया है वह इस प्रकार कि रात को पहरेदारों की निगाह बचाकर किसी ने विज्ञान की सहायता से मोटी २ लोहे की छड़ें गलाकर अन्दर खजाने में जाने लायक रास्ता बनाया और फिर कुल माल लेकर चम्पत होगया। मुलजिमों का किसी प्रकार भी पता नहीं लग रहा है क्या किया जाय समझ में नहीं आ रहा है। इसलिये कल रात को सुनील व मैंने यह तजवीज किया है कि मैं बीमारी का बहाना बनाकर जा रहा हूँ। वहाँ जाने का हाल पत्रों में मैंने दे दिया है और वह कल 'पायनियर' के प्रथम संस्करण में छप भी जायगा। यह बात तो जरूर है कि मेरे जाने के बाद इस दल वाले मेरा पीछा तो जरूर करेंगे मगर शायद मेरे पीछे घर पर भी कुछ उत्पात कर सकें इसलिये मुझे तुम्हारी तथा बच्चों की तरफ से चिन्ता है।' मि० वर्मा ने पत्नी का हाथ अपने हाथ में लेते हुये कहा।

"हमारी तरफ की चिन्ता आपको किंचित भी न करनी चाहिये। आपकी मौजूदगी में ही मैं निश्चिन्त रहता हूँ वरना किसी की कोई ताकत नहीं जो हमें जरा भी नुकसान पहुँचा

सके। हमारा यहाँ खुला रहना भी किसी सूरत से बाधा नहीं डाल सकता।"

"मगर यह बात तो मानता हूँ कि तुम्हारा सामना करना मुश्किल है मगर यह बात तो बताओ कि शत्रु को छोटा समझना कितनी नादानी है। इसलिये कोई ऐसी तरकीब सोचो ताकि कटक ही दूर रहे। मेरी बात को जरा ठंडे दिल से सोचो कि इसमें सार कहां तक है।

"मैं आपकी यह बात सह नहीं सकती कि शत्रु को छोटा या अपने से तुच्छ नहीं समझना चाहिये क्योंकि अगर हमने उसको अपने से बड़ा समझा तो यह बात जरूर निश्चय है कि हमारा स्वाभिमान जाता रहेगा और हम पर उसकी विजय अनायास ही हो जायगी। और अगर हमने तुच्छ समझा तो निश्चय है कि हम अपने घमंड में शत्रु को जरूर मार डालेंगे या विजय पालेंगे चाहे वह कितना बड़ा ही क्यों न हो। क्यों कि हमारे अन्दर हमारा स्वाभिमान होगा और हमारा एक प्रकार का बल दिखाने के लिये पूर्ण ताकत से किया जायगा। इसलिये मैं आपकी यह बात नहीं मान सकती। क्या आप मेरी धारणा को गलत बता सकते हैं? मैंने इसकी पुष्टि इस लिये करदी है ताकि आप इसका मरम समझलें।"

"अरे भाई तुमने तो नीति की कथा खत्म ही कर डाला। अरे हां अब समझ में आया कि श्रीमतीजी ने अपनी एम० ए०

की पढ़ी हुई पोलीटिकल की क्रियाओं का प्रमाण दिया है कि आप भी पोलीटिक्स जानती हैं। यह बात थी।" मि० वर्मा ने मीठी चुटकी ली।

"बस इसी वजह से तो कोई बात मुंह से नहीं निकलती कि तुम शीघ्र ही कर डालोगे कि जो कुछ भी मुँह पर आगया। और अब कहा सो कहा अब कान पकड़े जो कुछ भी कहूँ आप की बातों के बीच में।" शान्ति ने रुखाई से कहा।

"इसमें भी रुष्ट होने की कोई बात है। जरा एक बात; कहते ही पारा गरम होजाता है। और अब आगे से कुछ न कहूँगा। हां जरा सुनिये तो।' कहकर मि० वर्मा ने हाथ से ठोड़ी पकड़ कर अपनी ओर की।

"क्या कहना है।"

"मैंने तुम्हारे लिये एक नया खेल रचा है अब उसका पूरा करना तुम्हारे ऊपर है। मुझे उम्मीद है कि तुम उसे अवश्य पूरा करोगे। वैसे तो उसके अन्दर कोई ऐसी बात नहीं केवल हिम्मत की जरूरत है।"

"कहिये न कोरी भूमिका ही बाँधते रहेंगे।

मेरी सलाह तो यह है कि कल 'पायनियर' में यह छपने को भेज देना चाहिये कि तुमने मेरी प्राणघातक बीमारी की वजह से संबन्ध विच्छेद कर दिया है जब तक; कि मैं

भली प्रकार ठीक हो जाऊँ और अब आगे से मेरे ठीक होने के समय तक मेरा तुम्हारा कोई संबन्ध न रहेगा। और आगामी संबन्ध की कोई खास शर्त नहीं है यह केवल तुम्हारी मर्जी पर रहेगी।"

"इससे क्या मतलब।"

"मतलब यह निकलेगा कि जब उन लोगों को यह मालूम होगा कि मेरा साथ पत्नी ने छोड़ दिया है तो वह लोग अगर चालाक और समझदार हुये तो उसके दो मतलब निकालेंगे या तो वे लोग मेरा बिलकुल ही ख्याल छोड़ देंगे या मुझे मार डालने की कोशिश करेंगे। अगर मार डालने की कोशिश की तो बहुत ही भला होगा कि मैं उन लोगों को शीघ्र ही पकड़ सकूंगा। वरना कुछ देर अवश्य लगेगी। मेरा फायदा तो इसमें ही है कि वह मुझे मार डालें और मैं कोशिश भी यही करूँगा।

"और मुझसे संबन्ध विच्छेद कराने का क्या मतलब है।

"मतलब तो न जाने क्या २ निकल आयें मगर मेरी समझ में यही आता है कि जैसे ही उन लोगों को यह मालूम होगा कि मेरा तुम्हारा सम्बन्ध विच्छेद हो गया है तो वह लोग तुम को वैसे नहीं छोड़ देंगे मगर तुम पर निगरानी जरूर रखेंगे। और यह देख कर कि तुम मुझ से सख्त नाराज

हो, होसकता है कि वह तुम्हें अपनी तरफ मिलालें नहीं तो वह तुम्हें किसी सूरत में हानि नहीं पहुँचायेंगे।

"अच्छा यह सब तो मेरी समझ में आगया। नींद आ रही है और आप सोने का नाम भी नहीं लेते।

"अच्छा तो तुम अब सो जाओ मैं जग कर थोड़ा सा काम करूँगा। यह कहकर मि० शर्मा पलंग से उठकर दरवाजे से निकल गये।

बाहर जाकर उन्होंने बिजली बुझा दी और तब फिर बिजली का करेंट कमरे की रोशनी के लिये फैला दिया। तब वह अपने चोर कमरे में पहुँचे और शीघ्र ही बांये हाथ वाले कोने में पहुंच कर अदृश्य हो गये। मगर शीघ्र ही चोर कमरे में वह आगये और दरवाजा खोलकर बाहर आये और अपनी बैठक में आपहुंचे वहां पर छोटी मेज के ऊपर वही छोटी अटैची थी जिसमें सुनील बैंक से संदूक का चूरा तथा हड्डों के टुकड़े इत्यादि वस्तुयें काटकर लाया था। उन्होंने बेग को उठाया और फिर चोर कमरे में आये।

कमरे के बांये कोने में पहुँचकर उन्होंने पास ही लगी हुई चमकदार खूंटी जिसके देखने से मालूम होता था कि कपड़े इत्यादि टाँगने के लिये लगाई गई है निकाल ली और शीघ्र ही एक हल्की आवाज़ के साथ चार फीट लम्बा व इतना ही चोड़ा फर्श नीचे की ओर सरकने लगा। उसके सरकते

ही उन्होंने वह खूंटी छेद में अटका दी और फर्श पर निश्चल भाव से खड़े हुए धसकने लगे। करीब ८ फीट नीचे जाने पर फर्श रुक गया और तब मि० वर्मा एक खुले बड़े से हौल के पास ही कमरे में खड़े थे। फर्श से उतरते ही वह फिर अपने आप ऊपर चला गया और जाकर जैसे का तैसा ही लग गया।

इस छोटेसे कमरे से निकल कर मि० वर्मा बड़े हौल में आगये जो निहायत साफ व सुथरा था और उसमें वैज्ञानिक वस्तुओं का भंडार भरा पड़ा था। कमरे के बीचो बीच एक बड़ा सा बिजली का झाड़ लग रहा था और उसके बीच वाला बल्ब जलकर तमाम कमरे में रोशनी दूर तक फैला रहा था। कमरे घुसकर मि० वर्मा ने अटैची पास पड़ी मेज पर रख दी और स्वयं एक आराम कुर्सी पर बैठकर सिगरेट पीने लगे।

थोड़ी देरबाद ही न जाने क्या सोचकर मि० वर्मा यकायक उठ खड़े हुये। उन्होंने एक कोने में जाकर एक स्विच दबा दिया जिसके दबते ही चारों तरफ लगे हुये छत्तीस बल्ब एक साथ जल पड़े। इनके जलने से तमाम कमरा एक दम जगमगा उठा और तमाम चीज बिल्कुल साफ नजर आने लगीं। इसके बाद मि० वर्मा सीधे हाथ की तरफ लगी एक लोहे की अल्मारी के पास जा खड़े हुये और उन्होंने एक छः सात फीट लम्बी मशीन जिसका रङ्ग बिल्कुल लाल था व चमक रही थी निकाल कर एक मजबूत मेज पर रखी। यह मशीन काफी

वजनी थी और इसमें पुर्जे अनगिनती थे। इस मशीन को निकाल कर मेज पर रखने से मि० वर्मा को पसीने आगये और इसलिये वह थोड़ी देर त., खड़े सुस्ताते रहे और गौर से मशीन को देखते भी रहे। फिर झाड़न लेकर मशीन को साफ करा और उसके पुर्जों में तेल दिया।

मशीन से सन्तुष्ट होकर मि० वर्मा ने अटैची खोली लोहे की छड़ें वह एक मशीन के पास लेगये और उसमें और लोहे की छड़ें व लोहे सन्दूक वाली राख निकाली कुछ उसकी जाँच करने लगे। यकायक सारी बिजलियाँ एक दम बंद हो गईं और कमरे में पूर्ण अन्धकार छा गया। इस पर मि० वर्मा टटोलते २ फिर स्विच वाले कोने में पहुँचे और दूसरा स्विच जला दिया जिसके जलते ही सारा कमरा फिर रोशनी से पूर्ण होगया इस कार्य में उन्हें केवल तीस सैकिन्ड ही लगे होंगे कि एक बार बिजली बुझ जाने पर उन्होंने दुबारा जला दी। बिजली जलाने के बाद वह जरा ठहरे और उन्होंने बीच के झाड़ वाले बल्ब को छोड़ कर तमाम बिजलियों के स्विच दबा कर गुल कर दी और जिस प्रकार ऊपर से नीचे आये थे फिर वापिस चले गये।

चोर कमरे से निकलने के बाद उन्होंने बाँये हाथ में पिस्तौल लिया और सीधे हाथ में टौर्च की बत्ती क्योंकि पिस्तौल पर मि० वर्मा का बांया हाथ ही ठीक काम करता था। वह सीधे लपक कर अपने सोने वाले कमरे में आये जहाँ पर वह

अपनी पत्नी शान्ति रानी व प्रिय लड़के प्रभातकुमार को सोता छोड़ गये थे। ज्योंही वह दरवाजे पर आये तो उन्होंने बिजली का करेंट जिसको जाते समय छोड़ गये थे रोकना चाहा। मगर फिर न जाने क्या सोचकर उन्होंने ऐसा न किया और फिर वापिस लौटकर अपने कपड़े लत्ते बदलने वाले कमरे में आगये और रैक पर से उठ कर एक नये किस्म का जूता पहना जिसमें से तारपीन के से तेल की तेज वदवू आ रही थी। और तब फिर उसी कमरे में प्रवेश किया। हालाँकि करेंट बंद नहीं किया था मगर फिर भी उसका कुछ भी असर मि० वर्मा पर न पड़ा।

अन्दर पहुंचकर उन्होंने स्विच पर हाथ लगाकर उसे जला दिया और कमरा एक दम साफ दीखने लगा। उन्होंने देखा कि बायें हाथ वाला दरवाजा जिसका रास्ता बाग से था और जिसे मि० वर्मा लेबोरेटरी जाते समय स्वयम अपने हाथ से बंद कर गये थे उस दरवाजे पर उनका चपरासी रामसेवक बेहोश पड़ा था उसे अपने तन बदन की खबर न थी। मि० वर्मा को विश्वास हो गया कि करेंट से रामसेवक की मृत्यु हो गई होगी मगर ज्योंही उन्होंने उसके पास जाकर उसकी नाड़ी की परीक्षा की तो शीघ्र उन्हें ज्ञात होगया कि उनमें अभी दम बाकी है अतः उन्होंने पहले उसको होश में लाने की तदवीर की मगर फिर कुछ सोचकर उसकी तालाशी लेना शुरू किया। कुछ तो जेब में न मिला मगर ज्योंही उसकी कमर में हाथ डाला तो शीघ्र ही मालूम होगया कि एक नौ इंच

लम्बा तेज चमकदार छुरा एक खूबसूरत मखमली घर में बन्द पजामे में घुस रहा था ।

मि० वर्मा ने उसका आशय समझ लिया और उस छुरे को ज्यों का त्यों ही रखा रहने दिया ताकि यह न मालूम हो सके कि वह उसे देख चुके हैं। उसके बाद उन्होंने बरामदे में आलार्म की घंटी बजाई जिसको सुनकर चारों चौकीदार जो कोठी का पहरा देने आया करते थे शीघ्र आकर उपस्थित हुए। उनको आते ही मि० वर्मा ने कमरे के अन्दर दौड़ने वाले करेंट को बन्द कर दिया और उन चारों की सहायता से रामसेवक को उसी अवस्था में बरामदे में पड़ी बड़ी मेज पर लिटवा दिया। नौकरों की सहायता से उसे शीघ्र ही होश में ले आये। चौकीदार अपने २ काम पर चले गये और तब साहब ने कमरे में पहुँचने का कारण पूछा तो रामसेवक कुछ देर सोचने के बाद बोला ।

"सरकार खाना खाकर मैं लेटा तो थोड़ी देर तक सोने की कोशिश करता रहा मगर नींद ही न आई । तब फिर मैंने उठ कर बिजली जलाई और एक नाविल पढ़ना शुरू किया। यकायक ऐसा हुआ कि एक दम बिजली बुझ गई तब तो मैं बहुत चकराया और बरामदे में निकल आया तो यहां पर अन्धेरा था तब तक फिर मैंने देखा कि एक काली सी मूर्ती सरकार के सोने के कमरे में घुसी है तो मैं भी उसके पीछे२ कमरे में घुसने लगा कि यकायक किसी चीज से ठोकर खाकर

मैं गिर पड़ा और बेहोश हो गया। बाद का हाल मैं कुछ नहीं कह सकता हजूर। जैसे ही मुझे होश आगया तो मैंने सरकार को पाया।

"अच्छा हम तुम्हारी वफादारी पर बहुत खुश हैं और इसलिये तुम्हें सवेरे पाँच रुपये का इनाम दिया जायगा। जाओ आराम से कमरे में सो रहो। ऐसे ही होशियार रहा करो रामसेवक। मि० वर्मा ने चलते हुये कहा।

रामसेवक सलाम करके अपने कमरे की ओर चला गया। मि० वर्मा ने फिर करेंट चालू कर दिया और अपने आफिस में आ बैठे। वहां आकर उन्होंने एक सम्बन्ध विच्छेद की सूचना अखबार में भेजने के लिये शान्ति रानी की तरफ से छापी और तब फिर अपनी तरफ से भी एक सूचना छापी। इन सब चीजों को रखकर आराम से सोने वाले कमरे में पहुँचकर सो गये।

सोलहवां परिच्छेद

अदृश्य कारक यंत्र और उसका प्रयोग

यह हम देख ही चुके हैं कि डार्लिङ्ग ने अदृश्य-कर्ता यंत्र की त्रुटियों को सुधार कर उसको पूर्ण रूप से बनाकर तयार कर ही दिया था। उस यंत्र की परीक्षा लेने के बाद मजेस्टी ने इस यंत्र की एक नई शक्ल बनादी जिसमें कम समय लगे,

और कोई तरह की झंझट भी न रही । उन्होंने इस यंत्र से एक प्रकार की विद्युत निकाली जिसका रंग बिल्कुल हरा था मगर हल्का था और उसको बड़े२ बैटरी के सैलों में भरा । इन सैलों को उसने बैटरी का रूप दिया और व्याई बना दिया। इसका प्रयोग इस प्रकार किया कि अदृश्य करने के लिए बैटरी जिसमें कि वह विद्युत भर रही थी उसका कनक्शन लेकर हरे रंग की लाइट पाँच मिनट तक उसी चीज पर डाली जाती थी जिसको गायब करना होता था। और जब फिर उसको उसकी शक्ल में लाने के लिये लाल रंग की बैटरी की रोशनी दस मिनट तक डालने से फिर चीज की वही अवस्था होजाती थी जो गायब होने से पहले होती थी ।

इस यंत्र का प्रयोग तो हो चुका था और वह पूरा भी उतरा था। मगर उसका ऐसा कोई विशेष महत्व पूर्ण कार्य सन्धान न हुआ था कि उसकी महत्ता को बढ़ाता। अतः वह प्रयोग शाला में ही पूर्ण रूप से तयार रखा था ।

तेरहवें परिच्छेद में हम पढ़ चुके हैं कि मजेस्टी व डार्लिङ्ग दोनों ने उड़ने वाली मोटर की परीक्षा की थी जब कि राधेश्याम और सूरज मोटर को लेकर दुर्गम दुर्ग पहुंच चुके थे। मजेस्टी ने जाते समय यह भी कहा था कि कल हम इसकी परीक्षा लेंगे । वापिस होकर जब डार्लिङ्ग व मजेस्टी अपनी मंजिल में पहुँचे तो उस समय ठीक चार बजे थे । मजेस्टी व डारलिंग ने विश्राम करना उपयुक्त न समझा इसलिये

दोनों आदमी एक २ कुर्सी पर बैठ गये जो पास ही पड़ी थी। मजेस्टी ने जेब से सिगरेट निकाली और पीना शुरू किया फिडार्लिङ्ग ने पास ही पड़ा पिछले दिन का 'पायनियर' उठालिया। दो चार सफे पलटने के बाद कोई खबर पढ़ने लगे।

"मेरी समझ में तो उड़ने वाली मोटर अपने दुर्ग के ही ऊपर उड़ाकर देखनी चाहिये मजेस्टी ने कहा।

हाँ, ठीक है। मगर उसकी परीक्षा के साथ २ कुछ काम बनजाय तो यह भी ठीक है। मेरा ख्याल यह है कि क्यों न हम किसी काम करने के लिये अपनी मोटर ही में बैठकर क्यों न जाये"। डार्लिंग ने अखबार पर से निगाह उठाते हुए कहा।

"अब मेरा कोई काम ही क्या रह गया जो पूरा न होगया हो। इस समय तक केवल तीन काम प्रोग्राम में थे जिन को करने के लिये आदमी भेजे जा चुके हैं। जिनमें दो काम तो पूरे हो गये हैं। गंगादीन सेठ देहली वाला लूटा जा चुका है और ईदुलजी पिस्टीनजी पारसी बम्बई वालों से पन्द्रह लाख रुपया वसूल किया जा चुका है। केवल एक काम रह गया नार्दन इंडिया सेंटल बैंक का डांका मगर उसके लिये भी दो आदमी लखनऊ जा चुके हैं। उम्मीद है वह भी पूरा करके शीघ्र ही आने वाले होंगे। फिलहाल प्रोग्राम पर और कुछ काम में ही

नहीं इसलिये कहो चला जाय ।" मजेस्टी ने समझाते हुए कहा ।

"तो क्यों नहीं हम लोग लखनऊ ही चलें और उन लोगों को या तो काम में मदद दें या खुद ही उसे पूरा बिना उनके जाने हुए पूरा कर लावें । इस में हम लोग सफल ही होंगे और प्रयोग भी हो जायगा ।" डार्लिङ्ग ने दलीली की ।

"अच्छा मैं अभी पहली मंजिल से उन लोगों के काम की रिपोर्ट माँगता हूँ जो लखनऊ वाले लोगों ने दी होगी यह कह कर मजेस्टी ने पास ही मेज पर रखा टेलीफोन उठा लिया और नम्बर मिलाकर उत्तर की बाट जोहने लगा ।

हलो' जवाब आया ।

"मैं नं० १ राजगढ़ च सिंहगढ़ से बोल रहा हूँ । तुम्हारा नं० ?" मजेस्टी ने पूछा ।

"मैं नम्बर ६७ रायगढ़ इन्चार्ज पहली मंजिल से बोल रहा हूँ । हुक्म ?'

"नम्बर १४ का क्या हुआ क्या चार्ज तुमने लिया है । रेजीमेन्टल आफीसर कितने बजे बदले हैं ।

"जी, रेजीमेन्टल आफीसर नम्बर १४ चार बजे मुझे चार्ज देकर गया है । मैं अब यहाँ पर दोपहर के बारह बजे

तक ड्यूटी दूंगा। हर एक अफसर की ड्यूटी आठ घंटे की है।'

"अच्छा शीघ्र रिपोर्ट देखकर बताओ कि लखनऊ से नम्बर १०२ राजगढ़ से क्या खबर भेजी है और ८१ सिंहगढ़ जो उसकी मदद को भेजा गया था क्या रिपोर्ट करता है।"

थोड़ी देर तक दूसरी तरफ से कोई जवाब न आया और मजेस्टी कान से चोंगा लगाये बैठा ही रहा। थोड़ी देर बाद जवाब फिर आया।

"हलो ? फायलें देखने पर मालूम हुआ है कि नम्बर १०२ राजगढ़ ने यह रिपोर्ट की है कि बैंक के नौकर निहायत ईमानदार हैं और कुछ बुजदिल भी हैं। अभी तक किसी नौकर से मेल न हो सका है। उम्मीद है शीघ्र ही खजान्ची से मेल होजाय क्योंकि वह जरा अय्याश तथा खुश मिजाज आदमी है। और नम्बर ८१ सिंहगढ़ ने रिपोर्ट की है कि नम्बर १०२ राजगढ़ "चन्द्रमहल" होटल में ठहरा हुआ है। उसकी कार रोजाना तीन चार घंटे बैंक के दरवाजे पर खड़ी नजर आती है। वह अपने काम में मुस्तैदी दिखा रहा है मगर अभी कामयाबी दिखाई नहीं देती।-

'अच्छा ! शीघ्र इन्चार्ज यात्रा से कह दो कि वह आज रात तक के सात बजे तक मोटर में डांके की यात्रा सम्बन्धी सारा सामान रखदे तथा नम्बर ५६ राजगढ़ से कहना कि वह दिन भर में मोटर की पूर्ण देखभाल करले ताकि मौके पर

समझा और स्वयम् नं० ४ नमरे में जाकर कुछ दवाइयाँ लेकर किसी प्रयोग को करने लगा। यह कमरा निहायत साफ सुथरा था और दीवालों से सटी हुई छत तक लम्बी २ चारों ओर शीशेदार अलमारियाँ लगी हुई थीं जिनके अन्दर रखी हुई शीशियाँ साफ चमक रह थीं। कमरे में तीन बड़ी २ मेजें रखी थीं जिन पर भी अनेक प्रकार की विभिन्न प्रकार की शीशियाँ रखी थीं सामने पड़ी बड़ी मेज पर कई तरह की छोटी २ दवाई नापने की चीजें व मिलाने वाली मशीनें रखी थीं और बैठने के लिये स्टूलें रखी थीं।

मजेस्टी ने इसी मेज के पास एक स्टूल पर बैठकर विभिन्न प्रकार के तरल पदार्थ नाप २ एक कांच के ट्यूब में मिलाये और फिर मिलाने वाली मशीन में वह ट्यूब फिक्स करके मशीन को चला दिया। मशीन के चलने से ट्यूब में रखी हुई दवाइ का रङ्ग सुनहरा पड़ गया तो उसने मशीन रोक दी। यह ट्यूब मशीन पर से उसने खोल ली और उसका तरल पदार्थ निकाल कर एक लोहे के पास रखे सच्चे सांचे में डाल दिया और सांचे को उठाकर स्टोव की हल्की २ आँच पर उसे सेकना शुरू किया। थोड़ी देर बाद जब देखा कि अन्दर का पदार्थ सूख गया होगा तो उसको ठंडा करने रख दिया।

थोड़ी देर बाद ठंडा होजाने पर साँचा उखाड़ने पर पाँच तोले सोने की चौकोर टिकिया निकल आई जिसको देखकर अनायास आदमी सोना कह ही देता। इस टिकिया

को उठाकर मजेस्टी ने तोला तो पूरे पाँच तोले वजन था। और घिसने पर कसोटी ने पूरा कन्चन परखा। यह टिकिया हाथ में लेकर मजेस्टी ने बार २ कसौटी परखी और सदा ही वह कंचन साबित हुई। तब निश्चित होकर मजेस्टी ने टिकिया जेब में डाल ली और कमरे से बाहर निकल आया। डार्लिङ्ग अब तक पड़ी सो रही थी। अतः मजेस्टी कुछ अनमना सा हो गया और कुछ क्षण सोचने के बाद उसने आराम कुर्सी के पास आकर डार्लिङ्ग के कपोलों का चुम्बन ले लिया। बस फिर क्या था डार्लिङ्ग चौंककर बैठ गई और लजा कर आँखें नीची करली।

मजेस्टी ने घड़ी दिखलाकर डार्लिंग को बता दिया कि इस समय नौ बज रहे थे। डार्लिंग हड़बड़ा कर उठ बैठी। तब तक मजेस्टी और वह दोनों प्रयोगशाला से निकल कर लाइब्रेरी में आये और करेंट को दुगना करते हुए अपने निवास स्थान जो कि दूसरी तरफ बना था चले गये।

धीरे २ रवि अस्ताचल गामी होने लगा और ठीक सात बजते ही फिर दोनों जने यानी मजेस्टी व डार्लिंग अपने निवास गृह से काले कपड़े पहने हुये निकले। उनकी पोशाकें बिल्कुल काली थीं और सीधे हाथों पर सोने का बना हुआ भयानक पंजे का चिन्ह था। लायब्रेरी में से होकर मजेस्टी प्रयोगशाला में घुसा और शीघ्र ही अटैची लेकर आ पहुँचा। करेंट की मात्रा बढ़ाकर इतनी करदी गई कि दीवालें वह अन्य

भाग जहाँ पर कि करेंट का जरा भी असर था गर्मी के मारे गुलाबी हो गई।

दरवाजे से निकलते ही चौकीदार ने सिपाहियाना ढङ्ग पर सलाम किया। मजेस्टी ने हाथ की अटैची उसे दे दी और डार्लिङ्ग के हाथ में हाथ डाले हुए ऊपर चलने लगा। चौकीदार अटैची लिये हुए पीछे २ चलने लगा। तमाम रास्ता तय करने के बाद दोनों जने पहली मंजिल के नायक के दफ्तर के पास पहुँच गये जहाँ पर मोटर खड़ी थी और तमाम कार्य सम्बन्धी वहाँ पर उपस्थित थे। मत्र ने दोनों को आते ही फौजी ढंग पर सलाम किया। मजेस्टी ने मोटर के पास पहुँचकर आँगन में फिरने वाली मोटर को रोका और उतर कर 'फ्लाईंग रानी' के पास पहुँचे। मजेस्टी ने डार्लिंग को दिखाया कि 'दफ्फर' पर सुनहरी अक्षर निहायत खूब सूरती के साथ अंग्रेजी में 'फिलाईंग रानी' लिख रही थी।

'फिलाईंग रानी' धोई गई थी इसलिये उसका तमाम रंग दमक रहा था। पीछे सामान रखने के केरियर पर एक लम्बा सा रस्सा कि जिसकी लम्बाई कम से कम पचास गज होगी बँध रहा था और उसके सहारे से एक गोल चकरी बँध रही थी जिसका प्रयोग इस प्रकार किया जा सकता था कि एक रस्से के कौने में बाँधने से दूसरा खींचने पर चीज ऊपर जाती थी और फिर धीरे २ रस्सा छोड़ने पर रस्से का ऊपर वाला कौना फिर नीचे वापिस आ जाता था। पिछली सीट

के नीचे छः बड़ी २ डालियाँ रखी थी जो खाली थीं और उनमें काफी माल आ सकता था।

दो मशकें पानी से भरी तथा टिफिन कैरियर में खाना भी रखा था। एक चाबीदार काठ की पेटी में करीब सौ कारतूस भी रखे थे। गरज यह कि डाँके के काम में आने वाली प्रत्येक वस्तु वहाँ मौजूद थी। मोटर के काम में आने वाले तमाम औजार और एक गैस का पूरा कन्टर भी अलग रखा था ताकि मोटर में लगे हुए कन्टर की गैस खतम हो जाने पर दूसरा रखा हुआ कन्टर लगाया जा सके ताकि काम न रुके। सब सामान पर एक निगाह डाल मजेन्टी डार्लिंग को लिये 'फ्लाइंग रानी' की आगे की सीट पर जा बैठा। डार्लिंग ने स्टेरिंग सम्भाली और मजेन्टी के कहने पर गाड़ी स्टार्ट करके बाहर निकलने के लिये हटने वाले कमरे के सामने जा खड़ी की। मजेन्टी ने गाड़ी पर से उतर कर जेब में हाथ डाला और बड़ा सा चाबी का गुच्छा निकाला और तब सीधे हाथ वाले सातवें कमरे में पहुंचकर बायें हाथ वाले कोने में बने एक छेद में चाबी डाल कर घुमा दी और बाहर निकल कर मोटर में आ बैठा। थोड़ी ही देर में पहले के अनुसार कमरे हटकर दूसरी मंजिल पर जा लगे और रास्ता साफ हो गया। गाड़ी डार्लिंग ने फिर स्टार्ट की और दुर्गम दुर्ग के बाहर ऊजड़ स्थान में लाकर खड़ी कर दी। गाड़ी के बाहर आते ही कमरे फिर अपने २ स्थान पर आ लगे और वह चौड़ा रास्ता बन्द होगया।

गाड़ी में से दोनों फिर उतर पड़े और दोनों ने अपने २ आँखों पर अदृश्य वस्तु [illegible] देखने वाला चश्मा लगा लिया। अटैची खोलकर डालिङ्ग ने एक 'अदृश्यकारी टौर्च वैटरी' खुद ली और दूसरी मजेन्टी को दे दी दोनों ने वैटरी जेब में डाल ली और खाना खाया व पानी पीने के बाद वैटरी से रोशनी फैंककर मोटर को अदृश्य कर दिया और तब फिर अपने २ कपड़ों पर डालकर स्वयम् भी अदृश्य हो गये। चश्मे उतार २ कर उस बात का पूरा ज्ञान कर लिया; कि पूरी तरह अदृश्य हुये या नहीं और पूरा पता लग जाने के बाद कि पूरी तरह अदृश्य हो गये तो अदृश्य विनाशक चश्मा पहन लिये और तब दोनों जने अदृश्य तथा दृश्य दोनों वस्तुओं को देखने लगे।

आठ बज चुके थे, रात की अँधेरी भी छा रही थी तब सब काम से निबट कर दोनों मोटर में आ बैठे और डालिङ्ग ने गाड़ी स्टार्ट की और हवा में उड़ा दी। करीब पचास गज आसमान में जाने के बाद आसमान में गाड़ी चढ़ना रोक कर डालिङ्ग ने पश्चिम की तरफ बढ़ा दी। गाड़ी की रफ्तार हल्की ही थी क्योंकि कुल छः सौ मील का सफर था और बारह बजे बाद पहुँचना था। इसलिये गाड़ी की रफ्तार सौ मील से अधिक न थी गाड़ी मन्दी गति से चल रही थी। मजेन्टी ने जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाई और पीना शुरू कर दिया डालिङ्ग मन्द मन्द स्वर में गुन गुनाति रही और किसी प्रकार पांच सौ मील तय हुये। घड़ी देखने से मालूम हुआ कि [illegible] चुके थे।

"लखनऊ अब कितनी दूर होगा, हम लोग अब पाँच सौ तीन मील आ चुके हैं।" डार्लिंग ने मजेस्टी की तरफ देखकर पूछा।

"अब कुल तेरह मील रह गया।" मजेस्टी ने जेब से एक नकशा निकाल उसे देखते हुये कहा।

थोड़ी देर बाद ही मीटर देखने से मालूम हुआ कि तेरह मील निकल आये तो डार्लिंग ने मजेस्टी से कहा अब तो हम पाँच सौ सोलह मील आ गये। क्या करना चाहिये।

"गाड़ी को पचास उतार कर पच्चीस गज की ऊंचाई पर ही ले आओ और होशियारी से चलाओ। मैं जैसे कहता चलूं वैसे ही चलाना।" मजेस्टी ने जेब से एक लखनऊ का नकशा निकालकर हाथ में खोलते हुये कहा।

मजेस्टी इशारों से नकशे में देख २ कर रस्ता बताता गया और डार्लिंग मोटर उसके कहे अनुसार चलाती रही।

"बस यही है वह बैंक, मोटर दस गज और उतार लो ताकि निश्चय कर सकूं। थोड़ी देर ही में मोटर नीचे उतर आई और मजेस्टी ने पहचान कर कह दिया कि फिर उतनी ही ऊंची करलो। नीचे को देखने वाला झरोखा खोलकर मजेस्टी ने हाथ में दुरबीन लगाकर देखना शुरू किया।

"यहीं मोटर को रोक कर स्तम्भ कर दो देखना पक्की

तरह स्तम्भ करना ताकि हिलें डुलें नहीं । मजेस्टी ने कहा।

डार्लिङ्ग ने बांये हाथ पर लगा हुआ ब्रेक खींच दिया जिस पर सफेद से नम्बर दो लिख रहा था। चलती हुई मोटर एक दम जहां की तहां आसमान में खड़ी होगई। अंजन चल रहा था मगर मोटर आसमान व जमीन के बीच वायु मंडल में रुकी खड़ी थी। डार्लिङ्ग ने स्टेरिंग छोड़ दिया और तब दोनों अगली सीटों पर से उठकर पिछली सीटों पर चले गये।

सीधे हाथ की बगली में लगे हुये बटन के दबाने से गाड़ी की पिछले हिस्से में एक अच्छी छोटी सी खिड़की निकल आई जिसमें होकर हर एक आदमी आसानी से केरियर पर जहां कि पीछे सामान बांधा जाता है आ जा सकता था। इसी केरियर पर चक्करी में लगा रस्सा लग रहा था कि जिस के सहारे माल व आदमी आ ज़ा सकते थे और आसानी से ही तमाम काम किया जा सकता था। गाड़ी इस समय ठीक बैंक के खुले आंगन के ऊपर आसमान में पच्चीस गज की ऊंचाई पर खड़ी थी। मजेस्टी ने डार्लिङ्ग को गाड़ी का अगले हिस्से में लगे हुये वजनी पत्थर को नीचे लटका ने को कहा ताकि केरियर पर आने जाने से गाड़ी का बैलेंस न बिगड़ जाय और कुछ खतरा पैदा न हो जाय।

डार्लिङ्ग ने उसके कहे अनुसार पत्थर जो कि एक जंजीर से लग रहा था खोल दिया और वह पत्थर जंजीर के सहारे बफ्फर से लटका रहा। इस प्रकार गाड़ी का बैलेंस ठीक करके

मजेस्टी ने अटैची खोली और काम में आने वाली सारी वैज्ञानिक शक्तियों के औजार जो साथ में लाये थे निकाले और यथा स्थान जेबों में भर कर केरियर पर आगया। उसने आते ही चक्री जिसमें चक्करी के चारों तरफ रस्सा फंस रहा था जिस के दोनों ही सिरे एक ओर थे और लटकाने के लिये एक मजबूत लोहे का आँकड़ा लटका था उठाकर केरियर को एक मजबूत छड़ में आँकड़े के सहारे लटका दी। और तब फिर झटका दे देकर जाँचा कि कहीं कुछ खतरा तो नहीं है। पूर्ण रूप से उसकी मजबूती की तरफ से निश्चित होकर मजेस्टी ने रस्से के दोनों सिरे हाथ में लिये। एक सिरे में तो एक काँटा लग रहा था जिसमें आसानी से किसी भी चीज को लटकाया जा सकता था और दूसरे सिरे पर एक खुबसूरत हाथ में पकड़ने के लिये हैंडिल लग रहा था कि आदमी उसे पकड़ कर नीचे उतर सके।

चक्करी घुमाने के बाद हाथ में हैंडिल वाले हिस्से को पकड़ कर मजेस्टी लटक गया। दूसरे हिस्से से डार्लिङ्ग ढील देती गई। थोड़ी देर में ही मजेस्टी ने पृथ्वी पर पहुंचने की सूचना रस्सा संकेतिक ढङ्ग पर हिलाकर देदी। तब डार्लिङ्ग ने रस्से का दूसरा सिरा जिस पर कि कांटा लगरहा था वह भी लटका दिया और तत्पश्चात् स्वयं भी बोरे लेकर केरियर पर आ पहुँचा।

मजेस्टी जैसे ही पृथ्वी पर पहुँचा उसने देखा कि एक सिपाही पूरी मुस्तैदी के साथ घूम २ कर खजाने का पहरा दे

रहा है। सामने वाले बरामदे में एक सौ कैंडिल पावर का एक तेज बल्ब जल रहा था इसलिये सारी चीजें प्रत्यक्ष रूप से साफ दीखती थीं। मजेस्टी ने रस्से के दोनों सिरे लेकर बरामदे में लगे एक खम्भे पर काफी ऊंचाई से बाँध दिये ताकि वहाँ से निकलने पर किसी सूरत की अड़चन न पड़े। इस कार्य से निवृत होकर मजेस्टी रास्ते से होता हुआ खजाने के द्वार तक पहुंच गया।

इसी समय हाथ पर लगी घड़ी देखकर चौकीदार ने सामने मोटी रेल की पटरी के सहारे लटके हुए घंटे पर एक बजा कर रात के एक बजने की सूचना दी। घंटा बजाकर चौकीदार ने खजाने के द्वार पर लगा ताला एक बार खटखटाया और उसकी ओर से निश्चित होकर आगे बढ़कर बरामदे पड़ी हुई बैंच पर लेट गया। और आँख मींचकर एक नींद लेने लगा। मजेस्टी इतनी देर तक खड़ा २ उसकी हरकत देखता रहा। जब कि चौकीदार लेट गया तो मजेस्टी ने आगे बढ़कर अदृश्यकारी टोर्च की रोशनी से खजाने के दरवाजे को अदृश्य कर दिया। तत्पश्चात् जेब से ताले खोलने वाला मलहम निकाल कर चाभी लगाने वाले स्थान पर लगाने से ताला शीघ्र ही खुल गया।

ताला खुलने पर दरवाजा खोलकर मजेस्टी जैसे जाने लगा कि उसे किसी बात का ध्यान आ गया और वह उल्टे पैरों लौट कर चौकीदार के पास आया और जेब से एक छोटी सी

शीशी निकाल कर उसका कार्क खोलकर चौकीदार की नाक के पास कर दी। दो तीन साँस ले चुकने के बाद उन्होंने शीशी हटा ली और बंद करके जेब में रखली। फिर एक तमाचा चौकीदार के गाल पर मारकर इस बात का यकीन किया कि वह पूर्णता से वेहोश हुआ कि नहीं। तमाचे की चोट से तनिक भी चौकीदार विचलित न हुआ अतः मजेस्टी को उसके वेहोश हो जाने का पूरा यकीन होगया। तब निश्चिन्त होकर मजेस्टी खजाने के अन्दर घुसा और लोहे की टटरी में लगा हुआ ताला भी मलहम लगाकर खोल दिया और इस प्रकार तहखाने में जा सका।

नीचे जाकर देखा कि तहखाने का छड़दार कमरे के दरवाजे पर ताला लग रहा है तो मजेस्टी ने मलहम लगाकर उसे भी खोलने का इरादा किया मगर यह सोचकर कि ऐसे समय पर छड़ों पर भी धातु विनाशक शक्ति का भी प्रयोग करना चाहा इसलिये उसने मलहम तो रख दिया और धातु विनाशक बैटरी निकालकर उसका प्रकाश छड़ों पर डालकर एक अच्छा खासा दरवाजा बना डाला। क्योंकि छड़ें पक्की इस्पात की थीं इसलिये समय तो अवश्य लगा मगर उनका सारा मसाला धातुविनाशक शक्ति द्वारा वायु मंडल में धुआं बनकर उड़ गया और जली हुई छड़ के सिरे जले हुये मोमबत्ती की भांति गोल तथा चिकने रह गये। इस प्रयोग ने मजेस्टी के हृदय में अपूर्व साहस भर दिया। अतः तब फिर वह उसी

रास्ते होकर खजाने में पहुंचा और तमाम लोहे की अलमारियां तथा सन्दूक खोल २ कर देखने लगा।

सब चीजों का भली भांति निरीक्षण करने के बाद मजेस्टी कमरे से बाहर निकला और फिर रस्सा खोलकर आंकड़े वाला हिस्सा ऊपर कर दिया। इस हिस्से को देखकर डार्लिंग ने एक खाली बोरी कड़े में फंसा दी और रस्से का नीचे वाला हिस्सा हिला दिया। तब नीचे खड़े हुये मजेस्टी ने ऊपर वाले हिस्से को नीचे लाने के लिये अपने हाथ वाले हिस्से को ढील देना शुरू किया। थोड़ी ही देर में खाली बोरी नीचे आगई। इस बोरी को लेकर मजेस्टी खजाने में होकर तहखाने में पहुंचा और सोना भर लिया और फिर आंगन में लाकर आंकड़े के सहारे से बोरी ऊपर पहुंचा दी। इस प्रकार छः बोरी सोने व नोट व रुपये से भर २ कर मजेस्टी ने ऊपर पहुंचा दी अब केवल थोड़ा रुपये के कुछ न रहा था इसलिये उसे बेकार समझ कर मजेस्टी तहखाने से निकल आया और फिर ताले की टटरी जो दरवाजे के ऊपर लग रही थी उसको जैसा का तैसा ही लगाकर बाहर निकल आया। मलहम पोंछते ही ताला फिर लग गया और कुछ भी पहचान न रही कि यह कभी खोला भी गया था। इसी प्रकार सब ताले ज्यों के त्यों कर देने के बाद मजेस्टी ने अदृश्यता विनाशक टौर्च बैटरी से रोशनी फेंक कर दरवाजे को भी पहले ही जैसा कर दिया। चौकीदार को एक दूसरी शीशी सुंघा कर मजेस्टी फिर आंगन में आ गया

और जिस प्रकार रस्से के सहारे आया था फिर ऊपर पहुँच गया।

डार्लिङ्ग ने सारा माल गाड़ी के अन्दर भरकर रख दिया था। रस्सी को ऊपर खींच दरवाजा जो केरियर के लिये खोला था बन्द करके दोनों जने फिर मोटर में आ बैठे और आगे लटका हुआ पत्थर खींचकर डार्लिङ्ग ने गाड़ी दुर्गन-दुर्ग की ओर मोड़दी।

इसी समय सुदूर की किसी घड़ी ने टन-टन करके दो बजने की सूचना दी।

सत्रहवां परिच्छेद

जासूसी चक्कर

प्रातःकाल आठ बजे जब सुनील अपनी चाय पी चुकने के बाद कमरे में बैठा २ बैंक वाले मुकद्दमे के बारे में सोच ही रहा था कि नौकर ने लाकर 'पायनियर' मेज पर रखा। खबरें जानने के लिये सुनील ने अखबार उठाकर खोला कि मुख पृष्ठ पर ही उसने खबरा के साथ देखा।

"यू० पी० सरकार के कार्य में क्षति"

सी० आई० डी० के डायरेक्टर जनरल चित्राल जांयगे

विश्वस्तसूत्र से पता चला है कि यू० पी० सरकार के

सी० आई० डी० के डायरेक्टर जनरल मि० रूपकंठ वर्मा को तमाम प्रान्त के अनुभवी डाक्टरों के मैडीकल बोर्ड ने प्राणघातक यक्ष्मा से पीड़ित बताया है। मि० वर्मा काफी समय से अस्वस्थ्य थे मगर दवाइयों के ज़ोर पर अब तक अपना काम कर रहे थे। मैडीकल बोर्ड ने शीघ्र ही चित्रकाल जाने की सलाह दी है। चित्रकाल काश्मीर रियासत की सीमा तथा रूस की सीमा पर स्थित एक छोटा सा कस्बा है यहाँ पर यक्ष्मा के कई सैनीटोरियम बने हुये हैं और यहाँ की आबहवा यक्ष्मा पीड़ित रोगियों के लिये अत्यन्त श्रेयस्कर है।

भगवान से सर्व जनता की ओर से प्रार्थना है कि वह श्रीमान् को शीघ्र ही अच्छा करके हम लोगों के बीच में फिर भेज दे। आगामी दिवस को मि० वर्मा रात के साढ़े तीन बजे वाली गाड़ी से चित्रकाल के लिये रवाना हो रहे हैं"।

इस खबर को पढ़कर सुनील अत्यन्त प्रसन्न हुआ क्योंकि वह भी यही चाहता था जो कि मि० वर्मा ने किया। अतः वह शीघ्र ही तयार होकर साइकिल पर चढ़कर मि० वर्मा के बँगले पर जा पहुँचे। उस समय मि० वर्मा चाय पीकर बैठे ही थे और अखबार में अपनी ही दी हुई खबर पढ़ रहे थे कि सुनील जा पहुँचा। सुनील को देखते ही मि० वर्मा ने पास ही कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। आज्ञा पाकर सुनील बैठ गया।

"सुनील अब तो मैंने तुम्हारे मन की बात करदी न? अब तो तुम जरूर खुश होगे"। मि० वर्मा ने हाथ का अखबार मेज पर रखते हुए कहा।

"जी हां ! आप ही बताईये कि मेरा ख्याल कहां तक ठीक निकला है। मैं समझता हूँ कि आपने भी गौर करके उसकी महत्ता को पहचान लिया। ऐसा विकट परस्थिति में यही एक अच्छा काम का मार्ग है कि अपना रास्ता साफ किया जा सके।"

"अच्छा अब तुम यह बताओ कि आगे क्या किया जाय। इतना तो ठीक रहा। उम्मीद है कि रात भर में तुमने आगे के लिये प्रोग्राम अवश्य सोच लिया होगा।"

"आगे के लिये यह सोचा है कि आप चित्रकाल यात्रा के लिये रवाना हो जाइये तब वहाँ से पागल या स्वांग भरकर या मृत होकर किसी प्रकार जनता को भुलावा देकर निकल कर अपने काम में तल्लीन हो जाइये। मेरा समझ तो इतना ही काम दे सकी।"

"यही तो जासूसी चक्कर हैं इतना ही जिस दिन समझ लोगे तो फिर क्या रह जायगा। अच्छा अब तुम मेरे कहे मुताबिक काम करना और दलील फिलहाल मत पेश करना। सारी शंकाओं का समाधान एक साथ कर दूँगा।" इतना कहकर मि० वर्मा ने पास ही लगी घंटी बजा दी और शीघ्र ही अरदली रामसेवक हाजिर हुआ।

"रामसेवक तुम जानते हो कि मैं अपने इलाज के लिये चित्रकाल जा रहा हूँ और तुम को भी मेरे साथ चलना

पड़ेगा इसलिये मि० सुनील कुमार चाहते हैं कि वह मेरा व तेरा फोटो साथ ही साथ ले लें। जा तो दफ्तर में से कैमरा ले आ।" मि० वर्मा ने रामसेवक से कहा।

रामसेवक कैमरा लेने चला गया तो मि० वर्मा ने सुनील को समझा दिया कि एक साथ के अलावा अलग २ भी फोटो तरकीब से ले लेना। इतनी देर में रामसेवक ने कैमरा लाकर सुनील बाबू को दे दिया। मि० वर्मा अपनी कुर्सी पर जहां के तहां ही बैठे रहे और रामसेवक उनके पीछे खड़ा होगया। सुनील ने फोकस मिलाकर एकदम तीन फोटो ले डाले ताकि एक न एक अवश्य ही साफ निकलेगा।

"अच्छा रामसेवक तू हट तो जरा अब फोटो अकेले साहब की लूंगा।" यह कह कर सुनील ने रामसेवक को हटा दिया और मि० वर्मा की एक फोटो ली।

सरकार मेरी भी एक फोटो खींच लीजिये।" रामसेवक बोला।

"सुनील ने उत्तम समय पाकर रामसेवक के तीन पोज खींच लिये और अपने काम से निश्चित हुआ। मि० वर्मा तो कुछ कागजात देखने लगे और सुनील ऊपर वाला डाइंग रूम के पास वाली ही प्रयोगशाला में जाकर खींचे हुये फोटोओं को धोकर साफ प्रिन्ट निकालने लगा। थोड़ी ही देर में हर तस्वीर का एक २ प्रिन्ट निकाला मगर रामसेवक की तीनों

तस्वीरों के कई प्रिन्ट निकाले। प्रिंट निकालने के बाद जब वह ठीक हो गये तो सुनील उन्हें लेकर मि० वर्मा के कमरे में पहुँचा। मि० वर्मा उस समय आफिस जाने के लिये कपड़े पहने तय्यार बैठे थे। सुनील ने उन्हें सारे प्रिंट दिखाये। राम सेवक के प्रिंटों में से मि० वर्मा ने राम सेवक का सबसे साफ एक प्रिंट छाँट कर अपने पास रख लिया और बाकी सुनील को वापिस कर दिये। सुनील ने राम सेवक को बुलाकर उसके अलहदा वाले सारे प्रिंट जो बाकी बचे थे उसके हवाले किये। थोड़ी देर बाद ही मि० वर्मा कमरे से बाहर निकले और सुनील को गाड़ी में बैठाकर आफिस चल दिये।

"सुनील मैंने राम सेवक की जो फोटो बनाई है उसको तो मैं हमेशा अपने पास रखूंगा और कल रात को आते समय मैं तो राम सेवक का रूप बनाऊँगा और उसका अपना रूप बनाऊंगा। तुम सारी चीजें जो इस काम में जरूरी होंगी तैयार रखना ताकि वक्त पर झमेला न पड़े।" मि० वर्मा ने रास्ते में सुनील को समझाया।

रास्ते भर और कोई खास बात न हुई थी। गाड़ी थोड़ी ही देर में आफिस के बरामदे में आ खड़ी हुई। मि० वर्मा व सुनील गाड़ी से उतर कर आफिस में चले गये। उस रोज की डॉक खोलकर मि० वर्मा ने जरूरी कागजों को देखा और तब बाद में मि० हरीशप्रसाद जो कि डिप्टी डायरेक्टर थे बुला भेजा मि० हरीशप्रसाद के आने पर मि० वर्मा ने सामने पड़ी कुर्सी पर बैठाया जहाँ कि दूसरी कुर्सी पर सुनील भी बैठा था।

"मि० हरीशप्रसाद आज के 'पायनियर' में मेरी बाबत खबर पढ़कर तुमको उत्सुकता भी हुई होगी। यह खबर मैंने 'नार्दन इण्डिया सैन्ट्रल बैंक' के डाका डालने वालों के ढूढ़ने के लिये निकलवाई है। इसलिये मैं अब दफ्तर का चार्ज तुमको दिये देता हूँ और इस काम का पता लगाने के लिये जा रहा हूँ। सुनील भी मेरे साथ है इसलिये इसको भी कोई खास काम मत बताना। यह फिलहाल यहीं रहेगा और इसके जिम्मे तुम बैंक के डाके वाला केस दिखलाने को डाल देना।" यह कहकर मि० वर्मा ने मेज पर ही रखा चार्ज रिपोर्ट फार्म निकालकर दस्तखत कर दिये।

"मि० हरीशप्रसाद ने सारे रजिस्टर वगैरह देखना शुरू कर दिया। मि० वर्मा ने टेलीफोन द्वारा बैंक के मैनेजर साहब को फोन द्वारा सूचना दे दी कि परसों तक के लिये तहकीकात बन्द रहेगी। बाद को फिर काम शुरू किया जायगा इसलिये किसी प्रकार की किसी भी चीज छूने या हाथ लगाने की सख्त मनाही कर दी। मि० हरीशप्रसाद को जरूरी सूचनाएं देकर मि० वर्मा सुनील को लेकर फिर कोठी पर आ गए। इस समय करीब साढ़े ग्यारह हुये थे इस लिये खाना खा लेने के बाद मि० वर्मा तो मैडिकल बोर्ड के चेयरमैन के पास मिलने चले गये और सुनील बाबू तहखने वाली प्रयोगशाला में जाकर प्रयोग करने लगे।

चोर कमरे से होकर सुनील प्रयोगशाला तक तो आगया मगर मि० वर्मा के न होने के कारण एकान्त उसे खलने लगा।

मगर फिर भी वह सिगरेट सुलगा कर कुर्सी पर बैठ गया और थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। सिगरेट खतम होते ही सिगरेट "ऐशट्रे में फेंकर वह सामने वाली मेज पर जा खड़ा हुआ कि उसके ऊपर वाली अलमारी में तमाम दवाईयों की शीशियाँ ही भरी पड़ी थीं। कुछ देर सोचने के बाद उसने सात शीशियाँ जिनमें विभिन्न प्रकार की दवाईयाँ थीं छांटकर मेज पर रख लीं। एक कांच का ट्यूब निकाल कर उसने उनमें दवाइयां डालीं और फिर एक प्रकार का रङ्ग डाल दिया जिससे दवाई का रङ्ग कुछ २ भूरा होगया। उस ट्यूब में से कुछ दवाई अलग निकाल कर उसने अपने पैर पर मल ली। चंद मिनटों के बाद सूखते ही उस स्थान का रङ्ग गेहुआं हो गया जैसा कि ठीक रामसेवक का था। इसलिये उससे संतुष्ट होकर उसने ट्यूब का तरल पदार्थ एक खाली शीशी में भर कर रख दिया।

फिर मेज से हटकर वह फिर कुर्सी पर आ बैठा। जेब से नोट बुक तथा पैंसिल निकाल कर उसने सोच २ कर एक सूची तय्यार की फिर इस सूची को लाकर वह तमाम अलमारी ढूढ़ता फिरा और सूची में देख २ कर सामान निकाल २ इकट्ठा करने लगा। जब सारा सामान इकट्ठा कर लिया तो फिर उसने सारा सामान एक थैले में भर कर रख लिया। कुछ सोच कर वह थैला उठा कर फिर तहखाने से निकल कर ड्राइङ्ग रूम में आ बैठा। थैला मेज पर रखकर वह आराम कुर्सी पर लेट गया और थोड़ी देर ही में थोड़ी देर के लिये सो गया।

ठीक एक बजे ही मि० वर्मा ने ड्राइङ्ग रूम में प्रवेश किया। मि० वर्मा इस समय मेडीकल बोर्ड से लौटकर आये थे। उनके हाथ में 'साइनियर' सप्लीमेन्ट्र संस्करण था जिसमें मोटी २ लाइनों में लिखा था:—

"पति–पत्नि का सम्बन्ध विच्छेद"

विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि श्रीमती शान्तिरानी ने पति की प्राणघातक बीमारी के डर के मारे पति से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। बात इस प्रकार बताई जाती है कि किसी बात पर मि० वर्मा व शान्ति रानी का मन मुटाव अधिक समय से चला आ रहा था। यकायक मेडीकल बोर्ड के परीक्षा फल आने पर श्रीमती शान्ति रानी का असंतोष और भी बढ़ गया और इसलिये उन्होंने पूर्णतया मि० वर्मा से सम्बध विच्छेद करने की ठान ली। जैसे ही मि० वर्मा से इस बात का जिक्र उन्होंने किया तो अपना ही कसूर समझ कर मि० वर्मा ने श्रीमती रानी को पांच सौ रुपया मासिक अपनी आय में से देना स्वीकार कर लिया और इस बात की सहर्ष स्वीकृति दे दी है कि श्रीमती शान्ति रानी स्वच्छन्दता पूर्वक अपनी आयु काट सकती हैं।

मि० वर्मा डाक्टरों की राय से चित्रराल जा रहे हैं अतः इस समय तो रानी इसी बँगले में रहेंगी। अगर मि० वर्मा का छुटकारा इस प्राणघातक रोग से पूरी तरह हो गया तो संभव

है श्रीमती रानी शायद फिर अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकती हैं।"

मि० वर्मा ने हैट खूंटी पर टाँगकर सुनील को उठाया और यह खबर पढ़ने को दी। सुनील खबर पढ़ते ही भौचक्का रह गया मगर मन में यह सब जासूसी बन्दिश सोचकर चुप रह गया और मि० वर्मा की तरफ ताकने लगा मि० वर्मा ने उसके भावों से उसका मतलब तो समझ लिया मगर कुछ जवाब न देकर चुप बैठे रहे।

"क्या यह सब सच है जो कुछ मैंने यह पढ़ा," सुनील ने उत्सुक भाव से पूछा।

"हाँ! इतना तो तुम को समझ ही लेना चाहिये था। अब मेरा सामान वगैरह बंधवा दो ताकि आज रात ही रवाना हो जाऊँ।" यह कहकर उन्होंने रामसेवक को बुलाने के लिये कहा।

सुनील ने उठकर घन्टी बजा दी और थोड़ी ही देर में रामसेवक आ उपस्थित हुआ।

"रामसेवक आज ही हम लोगों को चलना है। जाओ शीघ्र घर से तय्यार होकर आ जाओ। गाड़ी रात के नौ बजे छूटती है। घर वालों से सारी बात समझाकर कह आना और

यह रुपया देते आना ।" यह कहकर मि० वर्मा ने दस-दस रुपया के दस नोट निकाल कर रामसेवक को दे दिये ।

"अभी सरकार दो बजे होंगे घर जाकर सामान वगैरह लाने में देर लग जायगी इसलिये मैं ठीक छः बजे यात्रा के लिये तय्यार होकर आ जाऊंगा ।" रामसेवक यह कहकर चला गया ।

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा रहा बाद में घड़ी ने तीन बजाये तो नौकर चाय ले आया चाय पीने के बाद सुनील व मि० वर्मा प्रयोगशाला जो कि तहखाने में थी चल गये । जाते समय सुनील अपना थैला भी लेता गया जिसके अन्दर उसकी तमाम इकट्ठी की हुई चीजें रखी हुई थी । प्रयोगशाला पहुँचने पर थैला मेज पर रख दिया और सुनील मि० वर्मा के पास खड़ा हो गया । मि० वर्मा कुछ सोच कर बोले 'सुनील मेरी शक्ल ठीक रामसेवक की सी बनाओ ।

रामसेवक छरहरे बदन का साँवला रङ्ग का करीब तेतीस साल का आदमी था । उसका कद लम्बा था । मगर हाथ पैर गठीले थे । बड़े २ बाल जो पीछे की तरफ कढ़े रहते थे अक्सर साफ पहिनने की वजह से दिखाई नहीं देते थे । उसका माथा कम चौड़ा नाक बड़ी व शक्ल भौंड़ी थी नाक के सीधी तरफ एक छोटा सा स्याह रङ्ग का मस्सा था और दांत पानों की वजह से लाल रहते थे ।

सुनील ने मि० वर्मा को लेजाकर एक ऊंचे स्टूल पर बैठाया और थैले में से सामान निकाल २ कर उनका रूप बदलना शुरू किया। दवाइयों के प्रभाव से उनके चहरे का रङ्ग सांवला बना दिया और थोड़ी ही देर और तमाम बातें जो रामसेवक के चहरे पर थीं वैसे ही कर दीं। गरज यह की सुनील ने मि० वर्मा का स्वरूप इतनी चतुराई से बदला कि उनके चहरे व रामसेवक के चहरे में कोई फर्क ही न रहा। शीशा देखते ही मि० वर्मा ने पीठ ठोक कर सुनील की प्रशंसा की।

इस प्रकार रूप बनाकर मि० वर्मा ने सकरी मोहरी का पजामा लाइनदार कमीज लम्बा कोट व सफेद कुलेदार साफा बांधकर अपने को रामसेवक से बिल्कुल मिला दिया। इस प्रकार मि० वर्मा रामसेवक का रूप रखकर ड्राइङ्ग रूम में आ बैठे। छः बजते ही रामसेवक भी घर से तयार होकर आगया। जैसे ही वह दरवाजे से घुस कर अन्दर आया तो उसके आश्चर्य का पारावार न रहा क्योंकि वह स्वयम् ही भ्रम में पड़ गया। जब कि रामसेवक दूरसे खड़ा कुर्सी पर बैठे रामसेवक को देख रहा था त्योंही सुनील ने लपक कर किवाड़ बन्द करके चटखनी लगा दी। बन्द करने की आवाज से रामसेवक का ध्यान जो दरवाजे की तरफ गया तो उसने देखा कि सुनील पिस्तौल हाथ में लिये उसकी तरफ बढ़ा आ रहा था और फिर मुड़कर ज्यों ही नकली रामसेवक की तरफ देखा तो वह भी

हाथ में पिस्तौल ताने उसकी पीठ के पीछे ही आ पहुँचा था।

इस भयङ्कर परिस्थिती को देखकर रामसेवक घबरा गया। तब सुनील ने सीधा हाथ पकड़ लिया और रामसेवक का बांया हाथ नकली रामसेवक ने पकड़ लिया। तब दोनों उसे एक कुर्सी के पास ला गये और जबरदस्ती उसका रूप बदलने लगे। करीब घन्टे भर बाद मि० वर्मा की शक्ल में रामसेवक हूबहू मि० वर्मा जँचने लगा तब शेर की तरह गरज कर सुनील बोला।

रामसेवक तुम यह जानते हो कि तुम्हारी जिन्दगी हमारे हाथ में है अतः हम तुम्हें समझा कर कहे देते है कि जैसा हम कहें तुमको चाहिये कि तुम वैसा ही करो। वरना एक ही क्षण में तुम्हारा शरीर मृतक के रूप में दीख पड़ेगा। बोलो क्या कहना है।

"लेकिन मेरा कसूर क्या है।"

"कुछ भी नहीं, मगर मालिक का पार्ट रास्ते भर तुम्हें अदा करना पड़ेगा। अगर तुमने किंचित मात्र भी बदमाशी की तो याद रखना कि तुम्हारा लोहू माँस का बना शरीर काटकर कुत्तों के आगे डाल दिया जायगा।" सुनील ने जबाव दिया।

"मालिक कहाँ गये हैं जो मुझे उनकी जगह भेजा जा रहा है।"

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। मगर इतना ही जान

लो कि मालिक एक विशेष महत्व पूर्ण काम गये हुये हैं जिसमें हमारी तुम्हारी सब की ही प्रतिष्ठा तथा लाभ है।"

सुनील की लाल आँखें देखकर तथा उसके कहने के ढङ्ग से रामसेवक डर गया और शपथ ली कि जैसा कहा जायगा करेगा। इस समय तक साढ़े सात बज चुके थे। ड्राइङ्ग रूम का दरवाजा खोलदिया गया। रामसेवक जो मि० वर्मा के रूम में था उसी दम रामसेवक ही कहकर पुकारेंगे कुर्सी पर बैठा था सुनील भी पास की कुर्सी पर बैठा था। मि० वर्मा जो रामसेवक के रूप में थे उन्हें भी हम मि० वर्मा ही कहेंगे बरामदे में खड़े थे। इतने ही में गाड़ी को लाकर ड्राइवर ने खड़ा किया मि० वर्मा ने सब नौकरों से सामान लदवा दिया। तब सुनील रामसेवक को लेकर पिछली सीट पर आ बैठा। रामसेवक के रूप में मि० वर्मा आगे ड्राइवर के पास जा बैठा। गाड़ी चलदी और शीघ्र ही स्टेशन पर आ खड़ी हुई। कुलियों को बुलाकर तमाम सामान मोटर में से उतरवा कर स्टेशन पर खड़े एक डिब्बे में रखवा दिया गया जो पहले से ही रिजर्वड था।

सुनील रामसेवक को लिये आ पहुंचा और एक कोच पर बिस्तर बिछवा कर लिटवा दिया। मि० वर्मा० निहायत मुस्तैदी के साथ काम कर रहे थे। गाड़ी आई और यह डिब्बा भी गाड़ी में लगा दिया गया। नौ बजते ही गाड़ी चल दी।

"आह तब तो अगर न भी पकड़े जाने वाले होंगे तो भी पकड़े जाओगे । पुलिस तुम्हारा पीछा करेगी और तुम मिल जाओगे ।"

"पुलिस मेरा पीछा ही क्यों करेगी ।"

"क्योंकि तुम ही मि० वर्मा के साथ चित्रकाल जा रहे थे और उसके मरने के बाद तुम फरार हो गये ।"

"आह यह भी खूब, पुलिस कैसे जान सकती है कि यात्रा में मैं साथ गया था । यह तो कोई पुलिस में लिखाकर नहीं गया था । मैं तो केवल स्टेशन तक पहुँचाने गया था ।"

"अरे मूर्ख उसकी औरत व सुनील जो कह देगा ।

"वाह खूब रही' सुनील को अच्छी तरह जानता हूँ और मैंने ही उसका सम्बन्ध जो श्रीमती वर्मा से करने का तरीका बताया है । श्रीमती वर्मा क्या सुनील को मुझसे ज्यादा चाहती है । याद रखना इनमें से दोनों यही कहेंगे कि यह तो स्टेशन तक पहुँचाने गया था । यही तो मेरी चाल है ।"

"अरे बावले वहाँ रहने का फायदा ही क्या है । बेकार अपनी जान खतरे में डालता है ।

"फायदा यह है कि वहां पर रहने से जासूसी विभाग की अनेकों खबरें प्राप्त होती रहेंगी । सुनील निहायत शेखी

खोर है जो कुछ करके आता सब मुझे ज्यों का त्यों सुना देता है। वहाँ रह कर मैं सब बातें शीघ्र ही जान जाया करूँगा।

"अच्छा तो तू जा सन्ध्या समय आना और खबरें देते रहना।"

यह सुनकर मि० वर्मा जाने लगे कि नं० ४६ ने सिपाहियाना ढङ्ग से सलाम किया तो तुरन्त ही मिस्टर वर्मा ने उसका उत्तर वैसे ही दे दिया और यह समझ लिया कि यह लोग सिपाहियाना ढङ्ग पर ही सलाम किया करते हैं। होटल से उतर कर मि० वर्मा ने बंगले का रास्ता पकड़ा और शीघ्र ही झुटपुटे में नौकरों की निगाह बचाकर बंगले में घुस गये। शान्ती रानी ने कुशल क्षेम पूछी तो उन्होंने उसे सारा किस्सा शुरू से आखिर तक सुना दिया और यह भी बता दिया कि अब वह बहुत शीघ्र ही उस मंडल के स्थान पर जाने की तैयारी में है।

अठारहवां परिच्छेद

दुरङ्गी दुनिया

साहजीत नगर बुन्देलखंड की एक छोटी सी रियासत है। यह रियासत छोटी है मगर इसके मनोहर दृश्य केवल काश्मीर को छोड़कर शायद सारे भारतवर्ष में सर्व प्रथम माने जाते हैं। आबादी तो कुल रियासत भर की पचास हजार से ज्यादा न होगी मगर यहाँ की प्रजा बहुत

मालदार है। यहां कि भूमि उपजाऊ भी नहीं है और न कोई मिल वगैरह ही तब इसकी प्रजा मालदार कैसे है ?

बात यह है कि साहजीत नगर से कोई लगभग छः मील पर चल कर एक गणेशजी का मन्दिर है। इस मन्दिर की मानता बुन्देलखण्ड में तो क्या तमाम हिन्दुस्तान भर में है। लोगों का अन्ध विश्वास है कि जिसके सन्तान न हो वह स्त्री को एक मास गणेश महाराज की शरण में अकेली छोड़ आये तो निश्चय ही सन्तान हो। और जिसके तब भी न हो तो वह स्त्री गणेश मन्दिर से वापिस आने के पन्द्रह दिन के भीतर ही मरजाती है। अन्धविश्वासी पुरुषों का यह विश्वास बहुत ही अटल है और प्रतिवर्ष वहाँपर लग-भग तीन चार लाख स्त्री सन्तान के लिये छोड़ी जाती हैं।

यह मन्दिर साहजीत नगर के उत्तर में छः मील दूर कृष्ण गङ्गा नदी के किनारे पर बना हुआ है साहजीत नगर से एक पक्की सड़क ठेठ मन्दिर तक जाती है और मार्ग में यात्रियों की सुविधाओं के लिये अनेक कुये तथा धर्मशालायें इत्यादि राज्य की तरफ से बनी हुई हैं। इन धर्मशालाओं में प्रत्येक आदमी की सुविधा के लिये सब सामग्री मौजूद है। कृष्ण गङ्गा नदी के किनारे पर लग-भग चालीस फीट की ऊंचाई पर सफेद पत्थर का मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर में जाने के लिये चौड़ी २ करीब १०० सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर के ऊपर पहुँच कर मन्दिर में प्रवेश करने के लिये एक सिंह द्वार बना है और सिंह द्वार से निकलने पर एक विस्तृत प्रांगण मिलता है।

इस प्रांगण के उत्तर दिशा में एक बड़ी सी गुम्बद बन रही है जो लग-भग ६० फीट ऊँचा है और चारों तरफ महराबदार खम्भों के द्वार लग रहे हैं। इसी गगन चुम्बी गुम्बद के अन्दर 'विनायक महाराज' विराजमान हैं।

'विनायक महाराज' की दस फीट लम्बी सिन्दूर से पुती मूर्ति देखने में बहुत भयानक लगती है। सिर पर एक रत्न जटित स्वर्ण मुकुट पहने रहते हैं। नेत्र के स्थान पर मूर्ती में सच्चे नीलम जड़ रहे हैं जिन की चमक चकाचौंध कर देती है। सूंड भी काफी लम्बी है और उसके नीचे मुँह के दाँत सच्चे हीरे के बने हैं। इन हीरे के दाँतों के स्थान पर कोई नहीं कहसकता कि यह असली दाँतनहीं है। गरदनमें अनेक प्रकार की जवाहरातों की मालाये पड़ी हुई हैं। गरज यह है कि मूर्ती का प्रत्येक भाग जवाहरात पहने है।

मूर्ती के बायीं तरफ एक काले पत्थर का चूहा बन रहा है जिसको विनायक जी की सवारी बताया जाता है। मन्दिर ऊपर से नीचे तक सफेद संगमरमर का बना हुआ है और सफाई की तो यह हद है कि मक्खी का तो नाम निशान ही नहीं मिलता गुम्बद के चारों तरफ एक परिक्रमा का मार्ग बना हुआ है जो इतना तङ्ग है कि एक ही आदमी मुश्किल से चल सकता है। आंगनके चारों तरफ अनेक गमले रखे हुए हैं जिसमें अनेक प्रकार के फूल खिल रहे हैं।

मन्दिर के नीचे जहां कि सीढ़ियां खतम होती हैं वहीं से एक छोटा सा बाजार शुरू होता है जो थोड़ी दूर जाकर

खतम होगया है। यह बाजार अधिक बड़ा तो नहीं है मगर इसमें प्रतिदिन के स्तेमाल के अलावा बढ़िया शृंगार की चीज़ें बहुतायत से मिलेंगी।

बाजार के एक ओर विशाल चौमंजली अट्टालिकायें हैं। यह प्राय: मन्दिर के कार्य कर्ताओं या राज्य के उच्च कर्मचारियों की हैं और उनके पीछे ही मन्दिर के तमाम कर्मचारियों के रहने के लिये स्थान बन रहे हैं। बाजार के दूसरी तरफ असंख्य छोटी २ पक्की कोठरियाँ अलग २ बन रही हैं जो कई मील तक चली गयीं है। यह कोठरियाँ कम से कम गिनती में पाँच हज़ार से कम न होंगी। इन कोठरियों में प्रतिदिन के स्तेमाल की चीजें करीने से रखी जाती हैं। प्रत्येक कोठरी में एक ही आदमी रह सकता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो। इन कोठरियों में वह स्त्रियाँ जो सन्तान कामना से आई हों या किसी बीमारी का इलाज कराने आई हों, या किसी मन वांछित फल की कामना से आई हों, तथा वह पुरुष जो विद्याध्यन करने, स्वास्थ्य लाभ या किसी कार्य की पूर्ती की कामना या मन वांछित फल पाने हेतु आया हो, रहते हैं।

किसी भी रहने वाले को अपने कुटुम्ब के किसी आदमी के साथ नहीं रहने दिया जाता। राज्य इस बात की निगरानी रखता है। नदी के तीर पर अनेक कुँज बन रहे हैं। और नहाने के लिये पक्के घाट बन रहे हैं। इस स्थान पर किसी भी सूरत की असुविधा होने पर राज्य के कर्मचारी से शिकायत

करने पर वह दूर करदी जाती है। कार्य पूर्ण होने पर स्त्री से भेंट में १०) और पुरुष से ५००) लिये जाते हैं। यही है उस मन्दिर का वातावरण।

× × ×

हरीशङ्कर भाटिया गुजरात के रहने वाला एक धनाढ्य सेठ था। उसका बदन चर्बी की वजह से फूल रहा था कि वह स्वयम् भी उसको सँभालने में अपने को सर्वथा असफल पाता था। बात यह थी कि लाला जी कपड़े का काम करते थे। दुकान पर तेरह वर्ष की अवस्था से बैठते थे। प्रातः काल सात बजे जो दुकान पर आते थे तो रात के एक बजे ही घर दुकान बन्द करके जाते थे। प्रातः काल का खाना भी दुकान पर मँगवा लेते थे और रात्रि को घर जाकर खाकर सो रहते थे।

हन्सा उनकी स्त्री का नाम था। हन्सा स्वभाव की हंसमुख व चंचला थी बात यह थी कि लाड़ले घर की बेटी थी जहाँ उसकी हर बात का ध्यान रखा जाता था और सदा हंसती बोलती रहती थी उसका गोरा बदन था, कद लम्बा आँखें बड़ी २ और नाक नकशा भी अच्छा था। उसका रूप देखकर मोहित होजाना मामूली बात थी। ऐसी सुलक्षणी कन्या पल्ले पड़ी ऐसे मूर्ख राज के गले जो रङ्ग के काले, हाथ पैर छोटे २ शरीर इतना मोटा कि खड़े होने में हाँफी आ जाय। घर में कोई हंसने को न बोलने को पति परमेश्वर रात के एक बजे

मोटर में बैठकर आवें सो भी हाँफते हुये और खाना खाकर ऐसे लेटें कि सवेरे ही आंखें खोलें और फिर कोल्हू के बैल की तरह दूकान चल दें। न कभी स्त्री से दुःख सुख ही की पूछें और न हंस कर बोलें ही। भला हन्सा कैसे रह पाती घर में। मगर बेचारी ने अपने विवाहित होने पर अविवाहित सरीखे जीवन के दो साल काटे कि एक दिन रात को सेठ जी बोले।

"विवाह को कितने दिन होगये होंगे।"

"क्यों क्या हुआ, तुम्हें यही बातें रहती हैं। क्यों किसी को रुपया दिया था जो ब्याज का हिसाब लगाना है।" हन्सा ने मीठी चुटकी ली।

"न यह बात नहीं, मैं यह कहूँ कि अभी कोई बालक······!" सेठजी ने सिहाते हुए कहा।

हन्सा क्रोध के मारे चुप रही। मगर सेठ जी कैसे चुप रहते।

हमारी सलाह तो यह है कि ऐसे न हो तो लाओ एक बार तुम्हें विनायक जी महाराज के मठ पर ही छोड़ आऊं। उन्हीं की कृपा से शायद कोई बाल बच्चा हो।"

"नहीं यह सलाह तुम अपने ही पास रखो।"

"यह मैं नहीं मान सकता तुम्हें तो विनायक महाराज के मन्दिर पर रहना ही पड़ेगा क्योंकि लक्ष्मी तो औरत के

लाज का और सम्मान त्यागने के बाद की सीमा है। हम तुम्हें तिलक जी महाराज के मठ पर ले चलते हैं तुम अपना महीने भर का इन्तजाम करके चलियो क्योंकि तोहे वहीं महीने भर रहना पड़ेगा।"

हंसा कुछ न बोली तीसरे दिन सेठ जी हंसा को लेकर मठ पर गये और उसे वहीं छोड़ आये। हंसा ने वहां के चाल चलन में काफी चहल पहल पायी पग पग पर लोग मुस्कराते थे, हमेशा कहकहों की झड़ियां लगी रहती थीं। सेठ जी हंसा को एक कोठरी में छोड़कर उसके खाने पीने रहने का इन्तजाम करके उसे छोड़ आये। हंसा मन्दिर में गई तो भी उसने देखा कि तमाम मन्दिर के कर्मचारी उसकी तरफ घूर २ कर देख रहे थे मानो उसे खा जायेंगे। अतः हंसा शीघ्र ही मन्दिर से चली आई। सड़क पर उसने देखा कि रात के कर्मचारी, दुकानदार तथा रास्ते चलने वालों ने भी टकटकी बांधकर देखा तो वह सहम गई और फिर अपनी कोठरी में आकर पड़ रही। रात व्यतीत होने के बाद प्रातः काल हुआ तो उठी और शौचादि के लिये जङ्गल में गई तो कदम २ आदमियों को बैठा पाया और कुछ स्त्रियाँ वहीं उन्हीं लोगों के पास बैठी थीं। हंसा लाज के मारे न बैठ सकी और दूर निकल कर एक घने वन में आ गयी। वहाँ से आने पर नहाने के लिये नदी पर गयी तो बेचारी धक रह गई कि स्त्री तथा पुरुष पानी में एक साथ एक ही घाट पर नहा रहे है। कुछ देर सोचने के बाद वह भी बेचारी एक घाट पर धोती रखकर नहाने के लिये पानी में

बैठी। गर्दन २ तक पानी में खड़े होकर वह नहाने लगी कि यकायक किसी ने आकर उसके दोनों स्तन पकड़ लिये तो बेचारी एक दम अचरज में रह गई। उसने हाथ से टटोल कर देखा तो एक आदमी का बदन पाया। दर्द के मारे जैसे ही वह चिल्लाने को हुई कि दुष्टात्मा ने उन्हें छोड़ दिया और पानी के अन्दर ही अन्दर निकल गया! घाट के पास हन्सा ने देखा तो एक वृद्ध पुरुष जिसकी आयु लगभग ५० साल की होगी खड़ा २ हंस रहा है उसके भाव से वह ताड़ गई कि यह कुटिल था जिसने पानी में से निकल कर और सूखी धोती पहन कर अपनी कोठरी की ओर चला।

दर्शन करने के लिये जैसे ही वह मन्दिर में पहुँची तो उसने देखा कि उसके कुचों को पकड़ने वाला वही कुटिल बुड्ढा एक जोगिया रङ्ग का कुर्ता पहने व पीला पटका बांधे माथे पर त्रिपुण्ड लगाये, हाथ में तुलसी माला लिये और गले में रुद्राक्ष की माला डाल आँखें मूंदे एक सुनहरी चौकी पर मृगछाला बिछाये बैठा है। अनेक स्त्री पुरुष उसके चरणों को स्पर्श करके अपने को धन्य मान रहे हैं उसको इस दशा में महन्त के रूप में देखकर हन्सा एक दम विह्वल हो उठी और रोष के मारे बिना दर्शन किये ही वापिस चली गई।

संध्या समय उसने सुना कि आठ बजे आज नवीन

मण्डल के कार्य-कर्त्ता केवल डाक ही डालना नहीं जानते वरना वह लोग सभ्य तथा पूर्ण रूप से शिक्षित भी हैं। और यह भी जान लिया कि इस समाचार पत्र के आधार पर जरूर यह डांका डाला गया है। इतना सोच लेने के वाद वह अखबार को मेज पर रख फिर चिन्ता में लीन हो गये। काफी देर तक मौनावस्था में सोचने के बाद फिर मि० प्रताप कुर्सी से उठ खड़े हुए और ड्रेसिंगरूम में जाकर टहलने के लिये कपड़े पहन कर तय्यार हुए। ड्राइवर ने लाकर मोटर खड़ी की तब तक मि० प्रताप की स्त्री शशिप्रभा भी टहलने के लिये तैयार होकर आगई। मि० प्रताप शशि के साथ मोटर पर जा बैठे। शशि ने मोटर चलाई और मि० प्रताप पास ही बैठे रहे।

लेडी जमशेद रोड से मोटर निकल कर 'किंग सर्किल' की तरफ चल दी। थोड़ी ही देर में वहाँ से भी गाड़ी लौटाकर शशि ने दादर पर 'रावल होटल' के आगे गाड़ी लाकर खड़ी की। गाड़ी से उतर कर दोनों प्राणी होटल में चले गये और खाना खाकर शीघ्र ही लौट गये। गाड़ी अब परेल की तरफ चल दी और कुछ ही देर में रास्ता तै करती हुई सीधी सड़क पर होती हुई वायकला पर आ पहुँची। थोड़ी बहुत इधर उधर घूमने के वाद 'बोडवे' सिनेमा पर मोटर जाकर रुकी और एक ओर खड़ी करके दोनों प्राणी वाक्स में जाकर खेल देखने लगे।

मि० प्रताप जब तक चुप चाप थे और न शशि ने ही कोई बात छेड़ी थी। यकायक मि० प्रताप ने सिर घुमाकर एक

अत्यन्त सुन्दर, नव जवान स्त्री को बैठे देखा जो पास वाले बॉक्स में बैठी थी। वह स्त्री बड़ी गौर से मि० प्रताप की ओर घूर रही थी। उसे इस प्रकार अपनी ओर आकर्षित देखकर मि० प्रताप को भी उसकी ओर देखने की रुचि हुई इसलिये वह भी निगाह बचा २ कर कनखियों से देखने लगे। थोड़ी ही देर में खेल शुरू हो गया और रोशनी बन्द हो जाने के कारण कोई किसी को न देख सका। खेल के अर्ध भाग के बाद 'इन्टरवेल' हुआ और रोशनी हुई। उस स्त्री ने उसी प्रकार मि० प्रताप को घूरना शुरू किया। शशि प्रभा ने चाय पीना चाहा, घंटी बजाने पर बेटर अन्दर आया। मि० प्रताप ने उसे चाय लाने का आदेश दिया। शीघ्र ही चाय आई, उनकी देखा देखी उस स्त्री ने भी बेटर से चाय मँगवाई और पी। खेल शुरू हो गया और वह घूरना रोशनी के अभाव के कारण बन्द हो गया। अन्त में खेल खतम हुआ और मि० प्रताप शशि के साथ बाक्स से निकले उधर वह स्त्री भी निकली और गैलरी से दरवाजे की ओर जाते समय दोनों की मुठभेड़ हो गई और अपनी २ तरफ बचकर दोनों चले गये। मि० प्रताप की गाड़ी पहले से ही खड़ी थी और मि० प्रताप ने देखा कि उनके रास्ते को रोके एक लाल रङ्ग की रसिंग कार खड़ी है जो देखने में निहायत शानदार व कीमती लगती थी। थोड़ी ही देर में वही बाक्स वाली औरत झट से आकर इस गाड़ी में आ बैठी और पलक मारते ही गाड़ी लेकर सीधी सड़क पर चली गई।

मि० प्रताप ने अब गाड़ी चलाई और शीघ्र ही अपने

बँगले पर पहुंच कर बरामदे में खड़ी करदी। गाड़ी से उतरने के बाद दोनों प्राणी ड्राइङ्गरूम में आ बैठे। तत्पश्चात शशि तो उठकर अपने ड्रेसिंग रूम चली गई और मि० प्रताप वहीं बैठे २ कुछ सोचा किये। लालकोठी वाली जटिल समस्या उनके दिमाग में इतनी तेजी से उलझ रही थी कि उनके माथे पर पसीना तक आ गया मगर सुलझ न सकी। माथे का पसीना पोंछने को उन्होंने रूमाल निकालने के लिये ज्यों ही हाथ डाला तो उनके आश्चर्य का पारावार न रहा कि उन्हें उस जेब में एक लिफाफा मिला। देखने पर ज्ञात हुआ कि उसका रङ्ग बिल्कुल सूखा खूनी रङ्ग का था जिस पर बहुत ही स्वच्छ लिप में अंग्रेजी के अक्षरों में 'मिस्टर जे० पी० सिन्हा लिख रहा था। लिफाफा खोलने पर उनका हृदय अविल से उछल पड़ा क्यों कि यह खत भी 'नीलापंजे' के दल वालों का था जैसा कि वह लाल कोठी में देख चुके थे। खत रङ्ग लाल खूनी रङ्ग का था सफेद रङ्ग में एक लम्बी सी इबारत लिख रही थी और हस्ताक्षर के स्थान पर 'नीलापंजे' का निशान था।

मि० प्रताप ने खत को कई बार पढ़ा और उद्वेग में मुंह से यह निकल गया "अच्छा यहाँ तक मजाल मेरे ऊपर चोट का साहस !"

इतने ही में शशि भी अपने कपड़े बदल कर शीघ्र ही लौट आई थी। उसने देखा कि स्वामी अभी उसी कुर्सी पर बैठे हैं। उनके चेहरे पर चिन्ता के भाव मौजूद हैं और हाथ

भी कई गुने चालाक व बलवान होते हैं। मगर आखिर को बिचारे पकड़े ही जाते हैं। यह माना कि उनका नाश एक बार आनन्द प्रजा के दिल में पैदा कर देता है। मगर बाद में भय व्यक्त हो जाती है।"

आप जानें और आपका काम। रोज नये सवाल आप अपनी जान के लिये खड़े कर लेते हैं। चन्द्रा तो अब नींद नहीं आ रही क्या सारी रात जागरण ही करना।

"बैठो पहले बात तो सुनो हमेशा नींद ही तुम्हें सताती रहती है।"

इतना सुनने के बाद शशि पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। मि० प्रताप उठे और ड्राइवर रूम का द्वार खोलकर एक बार बाहर की तरफ झांका जब कोई शक पैदा करने वाली बात न मिली तो पुनः दरवाजा बन्द करके अपनी कुर्सी पर फिर आ बैठे।

"शशि तुमने खत पढ़कर यह जान तो लिया ही होगा कि इस बार एक अधिक बलशाली शत्रु से मुकाबिला है। जिसने अपना ध्येय ऐसा रखा है कि जिसके साथ अधिकांश प्रजा की सहानुभूति है और ऐसी हालत में प्रजा से पूरी सहायता पाना दुर्लभ है वह अपनी चाल से निर्धनों के रुपये का शासक बन बैठा है इसलिये अब इस द्वन्द्व में मुश्किल यह है कि सरकार को अकेले ही मुकाबिला करना पड़ा या कुछ धनी मानी मनुष्य ही सहायता कर सकेंगे जिन्हें अपने धन का भय

या किसी प्रकार की हानि का भय होगा। बताओ तो ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिये ?"

"यह भी आपने ठीक पूछा। अगर मुझे ही यह गुत्थी सुलझानी आती तो मैं ही न डिप्टी डायरेक्टर जनरल की कुर्सी पर बैठा करता। आप जो कुछ निर्णय करेंगे उसमें राय तो अवश्य दे सकती हूँ।"

"मैंने यह सोचा है कि आज रात को तो मैं कुछ न कहूंगा और कल रात को यह स्वाँग रचूंगा कि मैं अपनी खाट पर किसी मुर्दे को लिटाऊंगा और उसका सिर काटकर गायब कर दूंगा। कोठी में एक दो चिन्ह ऐसे पैदा कर दूंगा ताकि यह विश्वास किया जा सके कि सचमुच कोई कातिल घर में आया था। तुम उसी समय रात के दो बजे टेलीफोन करके पुलिस को बुलाना और अपना एक झूठा बयान कत्ल के बारे में बनाकर रिपोर्ट में दे देना। मैं अपना भेष माली का करके तुम्हारे पास रहूँगा।"

"हाँ यह तो बिल्कुल ठीक रहा। मगर कोई इसमें ऐसी बात भी मिलाओ कि सारी प्रजा इस दल का आतंक मानने लगे और नफरत करने लगे। यह नफरत गरीबों में पैदा होनी चाहिये तब ही दल का पता जल्दी लग सकेगा और शीघ्र ही वह पकड़ा जा सकेगा। वरना उम्मीद तो कम है।"

"अच्छा यह कल सोचकर बतलायेंगे। तुम्हारा कहना

बिल्कुल ठीक है। प्रजा ही राज की सबसे बड़ी ताकत है। शासक को प्रजा की सहायता की सब से अधिक जरूरत प्रति पल रहती है। कल इस विषय पर सोचूँगा क्योंकि इसके बिना कार्य अधूरा ही नहीं सम्भव ही न हो सकेगा।

इसके बाद दोनों प्राणी सोने चले गये। दूसरे दिन सो कर उठने के बाद माली को बुलाया जो कई दिन से दो महीने की छुट्टी जा रहा था उस से समझाकर कह दिया कि वह आज रात के दस बजे चुप चाप जा सकता है मगर वह जाने की खबर किसी भी नौकर या किसी अन्य प्राणी को न करे। माली ने यह स्वीकार कर लिया और तब अपने जाने की तय्यारी चुप चाप करने लगा। मि० प्रताप ने माली के चले जाने के बाद अपने प्राइवेट कमरे में प्रवेश किया जो सारा लोहे का बना था और करीब चार घंटे बाद बाहर निकलकर आये।

इस समय लगभग ग्यारह बज चुके थे। कमरे से निकलने के बाद मि० प्रताप ने अपने कपड़े बदले और फिर मोटर में बैठ कर अपने दफ्तर के लिये रवाना हो गये। वहाँ जाकर कई घंटे तक तो वह डाइरेक्टर जनरल मि० इरविन से बातें करते रहे और अनेक प्रकार के कागजों पर उनके दस्तखत कराये और तब फिर अपने लिये दो महा की छुट्टी इस काम के करने के लिये माँगी। यह अवकाश उन्हें सहज मिल गया

और तब फिर वह अपना काम अपने असिस्टेंट के सुपुर्द करके कोठी पर वापिस आगये।

खाना पीना खाने के बाद वह अपने मित्र के पास बड़े अस्पताल में मिलने गये और उस दिन का एक लावारिस आदमी जो किसी अकारण बीमारी द्वारा मर चुका था कार में रख कर ले आये यह कार्य उन्होंने इतना चुप चाप किया कि उसका पता स्वयम् शशि तक को न लगा। इस समय तक लगभग संध्या के चार बज चुके थे। बाकी कार्य उन्होंने प्रति दिन की भाँति किये। संध्या समय टहलने भी गये और आठ बजे करीब वापिस भी आगये। माली ने तब ही जाने की प्रार्थना की तो स्वयम् ने उसके साथ जाकर उसे चोरी २ फाटक के बाहर निकाल दिया कि नौकरों तक को मालूम न पड़ सका।

नौ बजे बाद आपने उस मुर्दे को अपने बिस्तर पर लिटाया। उसका सिर काट कर अपने बाग की एक क्यारी में कोई दो गज नीचा गड्ढा खोदकर गाढ़ दिया। तब प्राइवेट रूम में से खून की भरी बोतलें निकाल कर तमाम बिस्तरा खून से रङ्ग दिया और मुर्दे की हालत ऐसी कर डाली कि मानों सचमुच ही किसी कातिल ने उसे मारा होगा। मुर्दे की हालत आप ऐसी करके अपने कमरे में गये और करीब घंटे भर बाद माली का रूप रख कर के बाहर निकले। इस रूप को मि० प्रताप ने इतने कौशल से बनाया था कि यह विचार में आने काबिल था ही नहीं कि सचमुच यह माली नहीं है।

इस समय तक साढ़े ग्यारह बज चुके थे। तमाम नाटक पूरा हो चुका था तब आपने एक तीक्ष्ण दुर्गन्ध वाला तरल पदार्थ निकाल कर शशि को पीने के लिये दिया। इस पदार्थ के शशि के मुँह से एक तीखी दुर्गन्ध आने लगी। एक प्रकार का मलहम निकाल कर उसके पलकों पर लगाया जिससे उसकी आँखें लाल होगईं मानों नशा किया हो। शशि का यह रूप बनाकर मि० प्रताप ने पूर्ण तथा अंगूठी की माँग ली। एक बजे तक दोनों बैठे रहे और तब कार्य शुरू करने का आदेश देकर स्वयम् माली की कोठरी के आगे झोंपड़ी में पड़ी खाट पर जा लेटे।

इधर शशि ने शोर गुल मचाना शुरू किया जिसे सुन कर तमाम नौकर आ पहुँचे और रोने का कारण पूछा तो शशि ने हाथ मुर्दे की तरफ कर दिया। नौकरों ने समझा कि मालिक का खून हो गया इसलिये एक ने जाकर पुलिस को खून की सूचना टेलीफोन द्वारा दी। शशि ने विलाप करना शुरू कर दिया और ऐसा नाटक बनाया कि नौकरों को पूरा विश्वास होगया। मि० प्रताप भी माली के भेश में उपस्थित थे अतः वह उसे सांत्वना देने लगे मगर शशि ने रोना चिल्लाना कम न किया।

लगभग आध घंटे ही में पुलिस भरी मोटर आ पहुंची। मि० विल्स पुलिस सुपरिन्टेंडेंट ने घटना स्थल पर प्रवेश करके सब को चुपचाप हो जाने का आदेश दिया। नौकर सब कतार बाँधकर खड़े हो गये। मगर शशि रो रही थी।

"क्या बात है किसका खून होगया है ?"

एक नौकर ने खाट पर पड़ी हुई लाश की तरफ इशारा करके कहा 'साहब का'।

"अरे क्या मि० प्रताप का" कहते हुये मि० विल्स खाट की तरफ बढ़े और देखने पर उन्हें मालूम हुआ कि सच मुच ही लाश का सर गायब है और सारा बिस्तर खून से रङ्गा हुआ पड़ा है। यह बिकट दृश्य देखकर एक बार तो विल्स ने भय मान कर आंखे' मींच लीं।

इतने में एक नौकर कुर्सी लेकर उपस्थित हुआ। मि० विल्स ने उस पर बैठते हुये पूछा कि मामला क्या है। अब शशि ने रोना बन्द करके कहना शुरू किया।

"प्रति दिन की भांति हम टहलने गये तो रास्ते में साहब ने बतलाया था कि उनकी तबियत आज ठीक न थी। इसलिये अधिक समय न लगाकर शीघ्र ही साढ़े आठ बजे तक हम लोग लौट आये। साहब ने घर आकर रखी हुई एक शराब निकाली और एक गिलसिया स्वयम् पी और एक मुझे पीने को दी। तब उन्होंने खाना खाया और फिर हम लोग बातें करते रहे। करीब ग्यारह बजे उन्हें नींद आ गयी और मैं भी नशे के वश होकर सो गयी।

कुछ देर बाद मुझे प्यास लगी तो मैं उठी और पानी पीने गयी लौटी तो मैंने साहब से पानी पीने के लिये पूछना

सिपाही कोठी की रक्षा के लिये छोड़कर और नौकरों को समझा बुझाकर मि० विल्स लाश के साथ बाकी सिपाहियों को लेकर वापिस चले गये।

इस प्रकार रोते पीटते सारी रात निकल गई और प्रातःकाल हुआ। दिन भर कोठी पर पुलिस अधिकारियों तथा सी० आई० डी० विभाग वालों की आवाज ही रही। संध्या को 'राष्ट्र' के संस्करण में खुले शब्दों में निकला।

"मि० प्रताप 'नीले पंजे' की बलि चढ़े"

कल रात जिस समय मि० प्रताप डिप्टी डाइरेक्टर जनरल सी० आई० डी० विभाग बम्बई अपनी स्त्री के साथ सो रहे थे तो उनका खून कर दिया गया। चूंकि पेट की खराबी होने के कारण उस रात दम्पति ने शराब पी रखी थी इस कारण श्रीमती शशि प्रभा की नींद न खुल सकी। रात के मध्य में जब प्यास के कारण उनकी आँख खुली तो उन्होंने पति को मरा हुआ देखकर शोर मचाया जिसे सुनकर नौकर इकट्ठे हो गये और पुलिस को सूचना दी गई।

पुलिस सुपरिन्टेडेंट मि० विल्स ने मौके पर पहुँचकर जाँच की और लाश को लेकर कोतवाली आये। लाश की खराबी खूब की गई है और उसका सर तो गायब है ही। मि० विल्स को लाश के ऊपर एक नीले रङ्ग का लिफाफा मिला और उसमें नीले रङ्ग की चिट्ठी मिली। यह चिट्ठी हमारे चिर परिचित 'खूनी

बाज' वाले दल की तरफ से लिखी गई थी। बम्बई ही क्या सारा भारत भी अभी तीन साल पहले वाले 'खूनी बाज' दल को न भूला होगा। इस दल का दमन मि० प्रताप ने किया था मगर अभाग्यवश उसका नेता हाथ न आ सका था इसलिये शायद उसने ही इस दल का फिर सङ्गठन किया है।

मि० प्रताप के साथ हमारी समस्त प्रजा की तरफ से हार्दिक सहानुभूतियाँ हैं और हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।"

सम्पादकीय टिप्पणी में सम्पादक ने 'नीला पंजा' के उद्देश्यों की तुलना 'खूनी बाज' के उद्देश्यों से की और इस बात को साफ कर दिया कि एक दूसरे के खुले शब्दों में प्रतिद्वन्द्वी हैं। साथ ही यह भी विचार प्रकट किया कि 'नीला पंजा' अवश्य ही 'खूनी बाज' के पतन में भाग लेगा। इस बार सम्पादक ने नीला पञ्जा को प्रजा का हितू कह पुकारा और प्रजा के हित के लिये 'खूनी बाज' दल का नाश करने की अपील की।

मि० रुद्रकंठ वर्मा ने यह समाचार कौतूहल से पढ़ा और विश्वास न किया और साथ ही पूरा पता लगाने का विचार किया। मजेस्टी ने दुगम दुर्ग में अपनी लाइब्रेरी में बैठकर यह समाचार पूर्ण गम्भीरता से पढ़ा और फिर डार्लिंग को पढ़ने के लिये दिया। दोनों ने सम्पादकीय टिप्पणी पर पूर्ण विचार किया और अगली मीटिंग में रखने के लिये रख छोड़ा।

बीसवाँ परिच्छेद

भीषण प्रतिज्ञा

"ऊँ ज़रा देखो तो यह क्या चला जा रहा है!" एक घुड़सवार ने दूसरे को सम्बोधन करके कहा।

"कहाँ नाहर" दूसरे ने पहले से पूछा।

'अरे वह सामने ही तो है वह देखो"। नाहर ने घोड़ा रोक कर उंगली से इशारा करते हुये कहा।

दूसरे ने भी घोड़ा रोक दिया और इशारे की वस्तु की ओर देखना शुरू किया। प्रातःकाल के पाँच ही बजे थे पूर्ण रूप से रोशनी न थी इसलिये साफ दिखाई न दे रहा था। यकायक कुछ सोचकर पहले घुड़सवार ने कोट की जेब में हाथ डालकर एक टॉर्च निकाली और फिर उस पानी पर तैरती हुई वस्तु की तरफ प्रकाश डाला। प्रकाश पड़ते ही शीघ्र मालूम हो गया कि वह एक औरत की देह थी जो पानी पर तैर रही थी।

'अच्छा लो निकाल ही लाऊँ,, कहकर दूसरा घुड़सवार घोड़े से कूद पड़ा।

उसके कूदते ही पहला भी कूद पड़ा और उसने दोनों

ड़े एक पेड़ से बांध दिये पहले घुड़सवार ने शीघ्रता से कपड़े उतार डाले और एक ओर रख दिये और तब स्वयं नदी की ओर चला।

"नाहर मैं नदी में कूदता हूँ तू पार खड़ा होकर टौर्च से उसके बदन पर रोशनी डाल ताकि शीघ्र पकड़ सकूं" कहकर वह शीघ्रता से पानी में कूद पड़ा।

क्वार का महीना था विशेष ठंड तो न थी परन्तु गीले बदन पर ठंडी समीर लगने से कपकपी बंध जाती थी। शीघ्र ही तैरता हुआ वह उसके पास जा पहुँचा और फिर कन्धे पर लादकर पार पर ला पटका। बदन पोंछकर कपड़े पहने और तब फिर उसके पास आकर नाड़ी की परीक्षा की।

"अभी तो कुछ गर्मी बाकी है। लाओ पेड़ पर लटका कर पानी बदन से निकालें।"

तब दोनों ने उस स्त्री के पैर पकड़ कर पेड़ पर लटका कर बाँध दिया और पेट दाबकर पानी निकालना शुरू किया। शीघ्र ही सारा पानी निकल गया। पानी निकल जाने के बाद नाड़ी देखने पर मालूम हुआ कि बदन की गर्मी कुछ बढ़ी। तब तो एक ने अपने बदन का ओवरकोट उतार कर उसके बदन पर डाल दिया। ऊनी कपड़े की वजह से कुछ गर्मी आई।

"नाहर जाकर कुछ लकड़ी तो इकट्ठी कर ताकि आग जलाकर इसे सेक सके।"

पाठक समझ गये होंगे कि यह दोनों घुड़सवार कोई और नहीं वरन् हमारे पूर्व परिचित रामप्रतापसिंह तथा नाहरसिंह हैं। यह दोनों हरपालसिंह के पुत्र हैं जिनका विवरण दूसरे परिच्छेद में आ चुका है। यह दोनों अपनी ननिसाल किरातपुर जो साहनीत नगर से केवल तेरह मील की दूरी पर है आये हुए हैं। यह दोनों नित्य प्रति प्रातःकाल घोड़ों पर सवार हो नदी कृष्ण गङ्गा के किनारे २ टहलने निकल जाते हैं। आज संध्या को वह लोग अपने घर जाने वाले थे कि यह घटना हो गई।

थोड़ी ही देर में नाहरसिंह कुछ सूखी लकड़ियां इकट्ठी कर लाया। जेब से दियासलाई निकाल कर रामप्रताप ने आग जलाई। गर्मी के सेक लगने से उस स्त्री का रक्त दौड़ने लगा। आग की रोशनी में उन लोगों ने देखा कि उसकी अवस्था बीस वर्ष से अधिक न होगी, रङ्ग गोरा तथा देखने में काफी सुन्दर थी। उसका बदन व रूप रङ्ग इस बात का प्रमाण दे रहे थे कि वह अवश्य ही किसी धनी कुल की बधू रही होगी।

आग गर्मी लगने के कारण थोड़ी ही देर में उसने अपनी आँखें खोलकर देखा तो दो हृष्ट पुष्ट सुन्दर नवयुवक सुसज्जित शिकारी वेश भूषा में उसके सामने खड़े हैं। पास ही अग्नि जल रही थी। जिसकी गर्मी बदन को भली लग रही थी। अब्रनः

पर एक ओवरकोट पड़ा था। इस प्रकार अपने को अपरिचित अवस्था में पाकर वह युवती अवाक् रह गई। कुछ मान मर्यादा का ख्याल करके उसने उठकर बैठना चाहा।

"नहीं लेटी ही रहो, बैठने में कष्ट होगा।", राम प्रताप ने कहा।

मगर वह स्त्री न मानी और उठकर बैठ गई। उसने अपने ठंड से सिकुड़े हुये हाथ व पांव आग पर तापे तब कुछ शान्ति आने पर वह बोली।

"क्या मैं आपका परिचय प्राप्त कर सकती हूँ।"

"हां अवश्य, मेरा नाम रामप्रताप सिंह और इसका नाम नाहरसिंह है। हम दोनों किशनगढ़ के जमींदार हर-पालसिंह ठाकुर के पुत्र हैं। हमारी ननिसाल किरातपुर में है जहां से हम टहलने आये उस समय तुम्हें नदी में पाया और निकाल लिया। अधिक परिचय घर चलकर दिया जायगा चलो घर चलें।"

युवती उठी नाहरसिंह ने घोड़े खोले और रामप्रतापसिंह ने उस युवती को अपने आगे घोड़े पर बैठाया और किशनपुर की तरफ बाग मोड़ दी। दस मील का सफर करने के बाद पौ फटते ही अपनी ननिसाल पहुँच गये। युवती को जनान खाने में भेज दिया गया जहां उसने कपड़े इत्यादि बदले। रामप्रताप सिंह ने अपनी स्त्री चन्द्रामणि को बुलाकर तमाम हाल सुना

दिया। चन्द्रमणि ने उसकी ओर पूरा ध्यान दिया और प्रेम से उसका सत्कार किया।

दोपहर के समय खाना खाने के बाद जब उस स्त्री से उसके बारे में पूछा गया तो उसने केवल अपना इतना ही हाल बताया कि वह एक वणिक पुत्री है और उसके माता पिता मर गये थे। उसका विवाह एक नशेबाज पुरुष से कर दिया गया जो कुछ दिनों पीछे वेश्या गामी हो गया इसलिये उसने एक दिन वेश्या के कहने से नशे की झोंक में आकर उसे नदी में डाल दिया जिस अवस्था में वह उन्हें मिली और अब वह पूर्ण रूप से अकेली थी। उसके रहने के लिये कोई आश्रम भी न था। इसलिये कुछ सोचने के बाद रामप्रताप ने उसे कहा कि वह आज ही उनके साथ जिमींदारी में चले और अब से वह उनकी बहन हो गयी। क्योंकि हरपालसिंह के कोई लड़की न थी इसलिये इस बहन को पाकर सब को काफी प्रसन्नता हुई।

ननिहाल से विदा होकर सब लोग उस युवती समेत अपने घर आ गये। ठाकुर हरपालसिंह ने उसको अत्यन्त प्यार किया। नाम पूछने पर उसने अपना सच्चा नाम हंसा बता दिया। हंसा थोड़े ही दिनों में घर के सब आदमियों से हिल मिल गई। एक दिन चन्द्रमणि ने हन्सा के पास एक बहुत कीमती जोगिया जवाहरात की अंगूठी देखी जिसका जिक्र उसने अपने पति राम प्रतापसिंह से भी किया।

दूसरे दिन रामप्रताप चन्द्रमणि से कहकर हन्सा को अपने कमरे में बुलवाया और उस अंगूठी के बारे में पूछा और देखने को माँगा। हन्सा ने अपने ब्लाउज की चोर जेब से निकाल कर वह अंगूठी रामप्रताप के आगे बढ़ा दी और रोने लगी। रामप्रताप ने देखा कि सोने की अंगूठी में एक जोगिया रङ्ग का हीरा चमक रहा था जिसकी कीमत कम से कम छः लाख से कम न होगी। इतनी भारी कीमती अंगूठी देखकर राम प्रतापसिंह ताज्जुब में रह गया।

"हन्सा मुझे तुझ पर अटल विश्वास है जो कुछ तू कहेगी वह सच ही कहेगी। रोना छोड़ और यह सच बता कि अंगूठी कहाँ से आयी।" राम प्रतापसिंह ने सांत्वना देकर पूछा।

हन्सा ने साफ अपनी सच २ कथा कह सुनाई जहा तक कि वह महन्त अंगूठी लेकर नदी के द्वार वाले रास्ते से भाग कर नदी तीर तक आ गयी थी। उसने इसमें किंचित भी न छोड़ा न कुछ शर्म ही की। राम प्रतापसिंह व चन्द्रमणि ने ध्यान से उसकी कथा सुनी। आगे उसने कहा।

"जब मैं अंगूठी लेकर नदी के किनारे आई तो सब तरफ अंधेरा ही अंधेरा था। मैंने अंगूठी तो अपने ब्लाउज की चोर जेब में रख ली और फिर भाग चलने का रास्ता खोजने लगी। यकायक मैं रास्ता खोजते २ एक ऊंचे टीले पर जा पहुँची। यह टीला नदी से लग भग पन्द्रह फीट ऊंचा था और

अत्यन्त वेग के साथ नदी नीचे होकर बहती थी। इस टीले पर पहुँच कर मैंने देखा कि एक देव मन्दिर बन रहा है जहां पर दीप जलकर प्रकाश कर रहा था। मन्दिर के मदन में करीब पांच छः आदमी बैठे थे जिनमें एक तो मन्दिर का पुजारी जान पड़ता था और बाकी सब भले मानुष दीखते थे। यकायक मुझे देखते ही पुजारी चिल्ला पड़ा अप्सरा आ गई है, सब अपनी उम्मीदें पूरी करो। उसकी यह बात सुनकर सब लोगों ने मेरी तरफ देखा और मैं जहां की तहां खड़ी रह गयी।

एक ने वहीं से बैठे २ कहा कि जिस माल की मुद्दत से चाह थी वह भगवान ने स्वयम् घर बैठे भेज दिया है। यह बात सुनकर मैं मतलब समझ गई और जिधर आई थी उधर ही भाग निकली। मेरे भागते ही उन लोगों ने भी भागना शुरू कर दिया मैं जितना तेज भाग सकती थी भागी और सीधी भागी चली गयी यकायक नदी में जाकर गिर पड़ी और बहाव में पड़कर बहने लगी। मेरा गिरना सुनकर पुजारी ने ऊपर से झाँका तो वह जिस पत्थर पर खड़ा था खिसक गया पहले पुजारी और पीछे पत्थर आया इस वजह से पुजारी के हाथ पांव टूट गये और मैं बहाव मे बहती रही कि मैं बेहोश हो गयी और होश में आने पर तुम दोनों भाइयों को देखा।"

इस रोमांचकारी कथा को सुनकर राम प्रतापसिंह का बदन मारे गुस्से के कांपने लगा और उसी समय उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक वह इस मन्दिर, पुजारी महन्त व राज्य का ही सत्यानाश करके तहस-नहस ही न कर देंगे तब तक वह स्त्री भोग न करेंगे।

इक्कीसवां परिच्छेद

शतरंजी चालें

मि० वर्मा ने शान्ति रानी से तमाम ब्यान करते हुए यह भी कहा कि वह शीघ्र ही आक्रमण कारियों के दुर्ग में जाने की तय्यारी में हैं। उस समय पूर्ण रूप से भुवन में भास्कर सूर्य भगवान् निकल चुके थे। अन्धकार का नाम भी लेश मात्र न था। अतः पहले तो मि० वर्मा नित्य कर्मों से फारिग होकर और चाय पीने के बाद ड्राईंगरूम के बाहर बैठे थे कि 'राष्ट्र' आया। उन्होंने जितेन्द्र प्रताप की मृत्यु के बारे में खबर भी पढ़ी और सम्पादकीय टिप्पणी भी। उन्हें मि० प्रताप की मृत्यु की खबर पढ़कर विश्वास न हुआ। परन्तु विश्वास इस वजह से होता था कि 'खूनी बाज़' दल की ताकत मि० वर्मा अच्छी तरह जानते थे जिसने तीन वर्ष पहले बम्बई प्रान्त में लूट मार की हद करदी थी। सैकड़ों स्त्रियां व लड़कियां उस दल ने जबरदस्ती पकड़वा ली थीं। करोड़ों रुपये के डाके डाले गये थे। प्रजा का धन व मान मर्यादा दोनों ही उस दल ने ले डाली थीं। उसका सामना करने के लिये सरकार को अपने बृद्ध विख्यात जासूस नरेन्द्रसिंह की आहुति देनी पड़ी थी। विश्वास इसलिये नहीं होता था कि मि० प्रताप ने खूनी बाज़ दल का नाश कर डाला था। उनके गढ़ से अरबों रुपयों का चांदी, सोना, जवाहरात सरकार के हाथ लगी थी। केवल

दल का नेता ही भाग गया था नहीं तो दल का प्रत्येक सदस्य गिन २ कर मारा जा चुका था। इसलिये उन्हें इस खबर पर अत्यन्त कौतूहल था और कुछ विचार नहीं कर पा रहे थे।

इसी बात पर सोच रहे थे कि उनकी आंख लग गई। कुछ संभल कर वह फिर उठे और अपने शयन-कक्ष में जाकर पलङ्ग पर सो रहे। खाने के समय शास्त्री रानी ने उन्हें उठाया और खाना खिलाया। खाना खाने के बाद मि० वर्मा उठे और अपने साथ लाये हुये सिर को लेकर अपनी नीचे वाली प्रयोगशाला में पहुंचे। पहले उन्होंने सिर को धोकर साफ किया और तब फिर दवाई लगाकर रख दिया ताकि बिगड़ न सके। थोड़ी देर तक वह आराम कुर्सी पर लेटे २ सिगरेट पिया करे तब यकायक उठकर वह सिर लिये आलमारी के पास रखी हुई मशीन के पास जा पहुँचे।

यह मशीन देखने में साधारण तो थी मगर उसका काम देखकर मनुष्य दांत तले उङ्गली दबा जाता था। इसकी बनावट विशेष आकर्षक न थी। एक करीब सात फीट लम्बी व तीन फीट चौड़ी लोहे की चद्दर के ऊपर एक नया टायप राइटर फिट था और उसके प्रत्येक शब्द संचालक पत्र से एक बिजली का तार फिट था यह तमाम तार इकट्ठे होकर मशीन के पीछे ही पास में लगे एक स्विच बोर्ड में फिट थे जिसमें से एक मोटा तार निकलकर एक तिपाही के ऊपर रखे हुये छोटे से टब में कनेक्टेड था।

स्विच बोर्ड से कुछ दूर पर एक फुट ऊँची तिपाई खड़ी थी जिसके ऊपर एक चमकदार तांबे का टब सा रखा था। इस टब के अन्दर बहुत से बिजली के तारों का बना हुआ जाल सा था जो टब की पैंदी में लग रहा था इन तमाम तारों के सिरे इकट्ठे होकर नीचे से आये हुये तार से मिल जाते थे। और फिर दूसरा तार जो कि एक प्लग से लग रहा था उसके तार से मिल जाते थे।

मि० वर्मा ने पास ही मेज पर पड़े झाड़न से उठाकर मशीन को साफ किया और तब एक बार गहरी निगाह डाल कर मशीन के प्रत्येक पुर्जे की जाँच की कि वह अपने स्थान पर भली प्रकार फिट है या नहीं। सब प्रकार से संतुष्ट होकर उन्होंने दूसरे तार वाला प्लग जो कि उस छोटे से टब के तारों से लग रहा था पास ही लगे बिजली के स्विच में फिक्स कर दिया। तब उन्होंने एक नीली बोतल उठाई और उसका सरल पदार्थ उस छोटे से टब में डाल दिया जिसका रङ्ग सफेद था मगर वह गाढ़ा था। इस पदार्थ को डालने के बाद उसने फिर वही सिर उठाकर उस टब में रख दिया ताकि कटा हुआ हिस्सा नीचे रह सके और सिर ऊपर रह जाये। पास ही लगे टाइप राइटर पर मि० वर्मा ने एक बिल्कुल सफेद साफ कागज चढ़ा दिया और टाइप में लगे हुये बटन को दबा दिया।

आप खुद पास में पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गये। करीब दो मिनट बाद ही अपने आप टायप राइटर चलने लगा और

सफेद उस पर हो चढ़े हुए कागज पर छपने लगा। मि० वर्मा बैठे बैठे सारे काम देखते रहे। जब वह कागज छप गया तो मशीन रुक गई तब मि० वर्मा उठे और उन्होंने बटन दबा कर मशीन की चलित शक्ति को रोका और फिर एक साफ कागज चढ़ा दिया। इस प्रकार करीब घन्टे भर में टाइप मशीन ने चार कागज छाप डाले और फिर छापना बन्द कर दिया। मशीन के बन्द होते ही 'की बोर्ड' पर लगा हुआ लाल बल्ब जल उठा जिससे सूचित हो गया कि अब कुछ भी विचार उस कटे हुये सिर के अन्दर नहीं रहे हैं। इसलिये लाल बल्ब के जलते ही मि० वर्मा ने पहले तो बटन से मशीन बन्द की और तब प्लग अलग करके मशीन को रख दिया।

इन चारों कागजों को लेकर जो मशीन में लगे हुये टाइप राइटर ने छापे थे, मि० वर्मा प्रवेश द्वार के पास ही पड़ी हुई मेज के पास कुर्सी पर जा बैठे। इस कुर्सी के सामने एक मेज थी, इस मेज पर एक कपड़ा बिछ रहा था जिस पर सामने एक कलमदान, कुछ सफेद कागज व बांये हाथ को एक बिजली का टेबिल लैम्प रखा था। कुर्सी पर बैठने के बाद मि० वर्मा ने हाथ बढ़ाकर टेबिल लैम्प में लगा हुआ बटन दबा दिया और तब फिर चारों कागज मेज पर रख दिये। सिगरेट जलाकर सिगरेट पीने लगे। यकायक कुछ ख्याल आते ही उन्होंने सिगरेट 'ऐशट्रे' पर रख दी और पुनः मशीन की

तरफ प्रस्थान किया है। अब हम इस मशीन को बार बार मशीन न कहकर 'हृदय ज्ञान' यन्त्र कहेंगे।

'हृदय ज्ञान यंत्र' का आविष्कार मि० वर्मा ने ही किया था। उनको कितनी ही बार भीषण परिस्थितियों में इस बात की जरूरत महसूस हुई थी कि मुर्दा शव की यह तमाम बातें उगलवा ली जांय जिस समय कि मरा हो। अतः इसी बात के ज्ञान के लिये यह लगभग सात साल के कठोर परिश्रम के बाद इस अद्वितीय यंत्र का आविष्कार कर सके थे। इस यंत्र के आविष्कार के लिये उन्हें कई बार विदेश यात्रायें भी करनी पड़ी थीं और कितने ही विज्ञानाचार्यों से सलाह के अलावा उनसे कुछ भाग भी खरीदने पड़े थे जिनके लिये उन्हें अच्छी रकम देनी पड़ी थी। इस प्रकार लगभग सात लाख के खर्च के बाद मि० वर्मा ने सात वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद इस यंत्र को तैयार किया था जिसका प्रयोग उन्होंने आज इस प्रकार सबसे पहले किया था।

मशीन के पास पहुँचकर उन्होंने छोटे टब में रखे उस कटे हुये सिर को उठा लिया और पास ही पड़ी हुई लम्बी मेज के ऊपर लेजाकर एक नीली दवा पड़ी हुई बहुत बड़े काँच के बेसिन में रख दिया। फिर जो ऊंगली गढ़ा कर मस्तिष्क की परीक्षा की तो सिर के ऊपर के भाग को नरम पाया। कुछ देर तक वह उस पानी से उस सर को धोते रहे और तब साफ कपड़े से पोंछकर प्रयोगशाला के दूसरे विभाग में चले गये।

यह विभाग पहले विभाग के आगे ही बना हुआ था। पहले विभाग के बांए तरफ होकर एक दरवाजा इस विभाग मे जाता था। यह विभाग दो भागों में बंटा हुआ था। जिस का प्रथम भाग तो तरह तरह की दवाइयों का भण्डार था। इसमें अनेक बड़ी २ अल्मारियां लगी रही थीं और उनमें कांच लगे हुए दरवाजों में से अनेक शीशियां जिन पर लेबिल लग रहे थे चमक रही थीं। और इसी भाग के बीच में होकर एक दरवाजा दूसरे भाग को जाता था। इस भाग में जो पिछली प्रयोगशाला से कुछ ही छोटा था अनेक प्रकार की मशीनें करीने से लग रही थीं ऊपर छत पर अनेक बिजली के पंखे व रोशनी के लिये बल्ब भी लग रहे थे। यह मशीनें गिनती में लगभग इक्कीस थीं और तमाम विभिन्न प्रकार की थीं। इन तमाम मशीनों पर नाम तो न थे परन्तु कागज के कटे हुये लेबिल लग रहे थे जिन पर अंगरेजी के अक्षरों में नम्बर पड़े हुये थे।

मि० वर्मा उस कटे हुये सिर को लिये हुये दूसरी प्रयोगशाला के प्रथम भाग में होते हुये मशीन वाले विभाग में पहुंचे। तब एक सरसरी निगाह से एक बार उन मशीनों को देखने के बाद आपने सिर उठाकर मशीन नं० २१ के पास पड़ी हुई छोटी मेज पर रख दिया।

यह मशीन नं० २१ एक अद्भुत प्रकार की थी जो देखने में बिल्कुल कैमरे के भांति थी। मगर उसके नीचे के भाग में

जहाँ से कि तिपाही के पाये शुरू होते थे अनेक प्रकार के तार लटक रहे थे जिनका लगाव नीचे रखी हुई लोहे की दो फीट लम्बी और एक फीट चौड़ी व डेढ़ फीट ऊंची सन्दूकची से था। इस सन्दूकची में खोलने के लिये कहीं भी स्थान न था केवल बांये हाथ की तरफ से एक काला मोटा तार तो करीब सात आठ गज लम्बा था और जिसमें स्विच में लगाने के लिये प्लग लग रहा था निकला हुआ था। मि० वर्मा ने इस प्लग को उठाकर पास ही दीवार में लगे हुये स्विच में लगा दिया और तिपाही के ऊपर रखी हुई कैमरे की भांति वाली मशीन के अग्रभाग को खोला जो कैमरे की भांति खुलकर सीधा हो गया। इस खुले हुये भाग के आगे लगे हुये काठ की प्लेट में एक छः इंच लम्बा व चार इंच चौड़ा दूधिया रङ्ग का कांच लग रहा था। तब मि० वर्मा ने वह सिर उठाकर एक सात फीट ऊंची तिपाही पर ठीक करके रख दिया और पिछले भाग में हाथ डालकर एक बटन जला दिया जिसकी रोशनी सिर के ऊपर तथा कुछ इधर उधर पड़ने लगी। तब फिर रोशनी बुझा कर मि० वर्मा ने उसका फोकस ठीक किया और इस बार रोशनी जलाकर देखा तो पता लगा कि अब वह ठीक सिर पर ही पड़ती है। तब इस कार्य से निवृत होकर मि० वर्मा ने रोशनी बन्द करदी और पास ही रखे हुये काठ के डिब्बे को खोलकर एक सैलोलाइड की छः इंच लम्बी व चार इंच चौड़ी प्लेट उस शीशे के ऊपर लगे हुये काँटों में फिक्स करदी और एक बार फिर तमाम बातों को ध्यान पूर्वक देखने के बाद

पर लेटे रहे। एक बार आंखें खोलकर उन्होंने कागज पास ही रखी हुई मेज पर रखकर पेपर वेट से दाब दिये और सिगरेट एशट्रे में डाल दी। फिर आंखें बन्द करके मीठी झपकी लेने लगे।

बाईसवां परिच्छेद

मित्र मिलन

कृष्णपक्ष की रात थी और संध्या के आठ बजे थे कि ऊपर आसमान में एक बिजली सी कौंधी और थोड़ी देर में अत्यन्त चमकदार शब्दों में एक संदेश को आसमान के नीले पर्दे पर छोड़कर गायब हो गयी। मि० प्रताप जो इस समय माली के वेश में अपने बरामदे की सीढ़ियों पर बैठे हुये थे इस चमक पर चौंके और ऊपर देखने लगे तो उनके आश्चर्य का वारापार न रहा क्योंकि उन्होंने ऐसा अद्भुत दृश्य पहले न देखा था हां! पहले दृश्य के बारे में पढ़ा अवश्य था। इस बार वही अद्भुत बात जिसके देखने को वह बहुत दिनों से लालायित थे उनको देखने को मिल गई। वह सीधे उठकर खड़े हो गये और बार २ उस संदेश को पढ़ने लगे।

यह संदेश लगभग डेढ़ घन्टे तक आसमान में चमकने के बाद यकायक गायब हो गया। मि० प्रताप को इसका अत्यन्त ताज्जुब हुआ कि यह संदेश सब स्थानों से एकसा ही दीखता था। रात के ग्यारह बजते ही वह अपने बिस्तर पर

आराम से लेट गये और घन्टों तक पड़े २ इसकी उधेड़ बुन में लगे रहे कि यह सन्देश क्यों लिखा गया और किस वास्ते लिखा गया। उनको इस बात का भी विश्वास हो गया कि आताताई न केवल खूनी या चालाक ही हैं वरन विज्ञान के पूर्ण ज्ञाता भी हैं। तब वह लेटे उन लोगों के मुकाबले में विज्ञान वेत्ता की फिक्र में पड़ गये और तब उन्हें अपने सजातीय और बचपन के प्रिय मित्र मि० रुद्रकंठ वर्मा का ध्यान आया। उनका ध्यान आते आते ही उन्हें अपने बचपन की याद आगई और पुरानी बातें सोचते २ ही निद्रादेवी की गोद में पड़कर अचेत हो गये।

प्रातःकाल सात बजे शशिप्रभा ने उनको जगाया। जब चाय पीने के लिये दम्पति मेज पर बैठा तो बाहर से किसी ने घन्टी बजाई। शशिप्रभा ने जाकर देखा तो नौकर खड़ा है उसने पुलिस इन्सपैक्टर मि० विल्स के आने की सूचना दी। उनको बैठने के लिये हुक्म देकर शशि फिर मेज पर आ बैठी और दोनों ने शीघ्र ही चाय पी। तब मि० प्रताप चोर दरवाजे निकलकर माली का रूप बनाये माली वाली कोठरीमें जा बैठे और एक बीड़ी जेब से निकाल कर पीने लगे।

इधर शशि चाय पीने के बाद अपने ड्रेसिंग रूम में पहुँची और कपड़े बदलने के बाद वह ड्राइङ्गरूम में जा पहुँची जहाँ पर पुलिस इसपैक्टर मि० विल्स उसकी प्रतिज्ञा में बैठे हुए थे। शशि के कमरे में घुसते ही मि० विल्स ने उठकर

उसका स्वागत किया और तब दोनों बैठ गये और बातें करने लगे।

मि० विल्सन—मिसेज शशिप्रभा क्या आप अपने पति की हत्या के बारे में कुछ बता सकती हैं। आपका किसी पर शक हो या और कुछ कहना हो।

शशि—मि० विल्सन यह तो आप जानते ही हैं कि मि० प्रताप जासूसी विभाग के मुख्य कार्य कर्ता थे और उन्होंने अनेक देश द्रोही, खूनी व विप्लवी अपराधी पकड़े थे और सरकार से उचित दंड दिलवाया था। पिछले साल ही बम्बई प्रान्त का 'खूनी बाज' नामक दल पकड़ा था जिसका आतङ्क समस्त भारत में छाया हुआ था। इसलिये अपराधियों में से तो इतने अधिक दुश्मन मौजूद हैं जिनकी गिनती भी असम्भव है। वरना उनका बर्ताव ऐसा न था कि कोई उनका अन्य दुश्मन हो सके।

मि० विल्सन—इसका मतलब यह हुआ कि उनके निजी दुश्मन न थे वरन उनके पद के दुश्मन थे और वह भी अपराधियों के दल वाले जिन्हें उन्होंने पकड़कर उचित दंड दिलाया था। मगर क्या आप यह भी बता सकती हैं कि कोई उनका ऐसा भी दोस्त हो जिससे पहले तो दोस्ती रही हो और फिर बाद को दुश्मनी हो गई हो।

शशि—मुझे तो केवल उनके एक दोस्त के बारे में मालूम है जिसको कि मैंने एक बार देखा भी है और उसकी

कई चिट्ठियाँ भी आती थीं। वही उनके एक दोस्त बचपन से हैं और इस समय तक दोनों में किसी प्रकार न तो मन मुटाव है और न किसी बात पर झगड़ा ही हुआ है। वरन पहले की अपेक्षा अधिक मेल हो गया है।

मि० विल्स—क्या मैं उनका नाम पूछ सकता हूँ।

शशि—जी हाँ! वह हैं मि० रुद्रकंठ वर्मा, डाइरेक्टर जनरल सी० आई० डी० विभाग संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध।

मि० विल्स—क्या आप इनका कुछ परिचय भी दे सकती हैं।

शशि—मि० रुद्रकन्ठ वर्मा, हमारे सजातीय सक्सेना कायस्थ हैं। मि० प्रताप और मि० वर्मा दोनों ने बाल्यकाल की शिक्षा ही पायी थी। दोनों के पिताओं में भी मेल होने की वजह से एक दूसरे के घर आना जाना व दुःख दर्द में शरीक होना था। अब भी मि० वर्मा और मि० प्रताप एक दूसरे को वैसा ही मानते हैं जैसा कि पहले।

मि० विल्स—क्या आप मि० वर्मा का पता भी बता सकेंगे ताकि समय पर काम पड़ने पर उनसे टेलीफोन पर बातें की जा सकें।

शशि—मि० रुद्रकंठ वर्मा, राजा कौंसिल, लाटूश रोड लखनऊ।

मि० विल्स ने जेब से एक लाल जिल्द की डायरी निकाली और वह पता उस पर नोट कर लिया।

मि० विल्स—मैंने आपका अधिक समय जरूरत से ज्यादा बरबाद किया है जिसके लिये क्षमा चाहता हूँ।

यह कहकर मि० विल्स कुर्सी पर से उठ खड़े हुये और शशि ने भी उठकर उनको दरवाजे तक पहुँचा दिया। तब मि० विल्स अपनी बरामदे में खड़ी हुई कार में बैठ गया और दरवाजे की तरफ चल दिया। शशि ने बरामदे में खड़े होकर एक बार सड़क पर जाती हुई कार पर नजर डाली और तब सीढ़ियों से उतर कर सड़क पर आ गई और माली को आवाज दी मि० प्रताप जो माली के भेष में थे फौरन आये तब शशि ने एक जोड़े गुलदस्ते के लिये कहा और बरामदे में आकर आराम कुर्सी पर बैठ गई और मि० प्रताप की बाट देखने लगी कि वह गुलदस्ते लेकर आये।

थोड़ी ही देर में मि० प्रताप गुलदस्ते लिये हुये हाजिर हुये तब शशि भी उनके साथ ड्राइङ्गरूम होती हुई प्राईवेट कमरे में आ बैठी। मि० प्रताप और शशि सोफे पर बैठ गये और बातें चलने लगीं।

"शशि मि० विल्स क्या पूछने आये थे।" मि० प्रताप ने पूछा।

"यही कत्ल के बारे में खाना पूरी करने आये थे। बात तो कुछ न पूछी केवल उल्टे सीधे सवाल पूछते रहे। मैं तो जवाब देते २ उकता गई। सवाल भी काम के नहीं जिनका कुछ भी तात्पर्य था ही नहीं।" शशि ने उत्तर दिया।

"लेकिन जो कुछ पूछा था सब साफ २ बताओ।"

"इन्होंने पहले तो पूछा कि तुम्हारे कत्ल के बारे में शक किस पर है।"

"तुमने क्या कहा।"

"कहना ही क्या था जो कहती कह दिया कि मेरा शक तो किसी पर नहीं है।"

"बस यही गलती की जो एक दो नाम न बता दिया। कुछ न था एक-दो चतुर नौकरों के ही नाम बता देती ताकि वह लोग हट जाते और हमारी तुम्हारी स्वतन्त्रता अधिक हो जाती क्योंकि पुराने नौकरों के सामने मिलने जुलने पर बात फूटने का डर रहता है और इस प्रकार तमाम कोशिश भी बेकार हो जायगी।"

अच्छा तब वह इसके बाद आपके दोस्तों के बारे में पूछने लगा तो मैंने मि० रुद्रकंठ वर्मा का उल्लेख कर दिया और वह उनका पता भी मुझसे पूछ कर लिख ले गया है।

सन्देश लगभग डेढ़ घन्टे तक आसमान पर चमकने के बाद गायब हो गया।"

सम्पादकीय टिप्पणी में सम्पादक ने गवर्नमेंट से इन घटनाओं की तरफ विशेष ध्यान देने की प्रार्थना की थी और कुछ खरी-खोटी भी सुनाई थी। पहले ही से मि० प्रताप इस सन्देश की तरफ से अधिक सशंकित थे और वह इस बार इस टिप्पणी को पढ़कर सोच में पड़ गये उत्सुक होकर उन्होंने 'पायनियर' खड़ा किया और गौर से प्रत्येक लाइन पढ़ने लगे। मगर कुछ भी हाथ न लगा। क्योंकि आज पत्र में समाचारों की अपेक्षा विज्ञापन अधिक थे। एक पूरे पेज पर तो ज्योतिष का विज्ञापन दिया गया था।

इस पेज पर मध्य में तो बांये हाथ का पञ्जा बन रहा था और दोनों किनारों पर स्वास्तिक के निशान थे। नीचे इबारत में ज्योतिष का विज्ञापन था और पते पर 'राधाचक्र ज्योतिषगृह' लाहौर लिख रहा था। और टेलीग्राफिकएड्रेस पर लिख रहा था—आला ? इस विज्ञापन को मि० प्रताप ने गौर से पढ़ा मगर कोई बात शक की न पाई।

"राधा-चक्र ज्योतिषी गृह" लाहौर का एक अच्छा ज्योतिष गृह था और लोग भी इसके नाम से भली भांति परिचित थे। इसके विज्ञापन कईबार समाचार पत्रों में निकल चुके थे। अतः मि० प्रताप को शक की कोई बात न मिली। हारकर

मि० प्रताप ने समाचार पत्र एक ओर रख दिये और चिंता में मग्न हो गये। थोड़ी देर ही गुजरी होगी कि किसी ने बाहर से दरवाजा धीरे २ खटखटाया और तब मि० प्रताप ने उठकर द्वार खोलकर देखा तो शशि को खड़े पाया। शशि इस समय सहमी सी खड़ी थी और उसने रुंधे हुये कंठ से ड्राइङ्गरूम तक चलने को कहा। मि० प्रताप शशि के साथ ही ड्राइङ्गरूम तक चले आये। वहां आकर उन्होंने देखा कि मेज पर ठीक वैसा ही एक तीर व उसमें एक लाल रङ्ग का खूनी पर्चा बंधा हुआ रखा था जैसा कि वह ईदुल जी के यहाँ देख आये थे। उन्होंने शशि से द्वार बन्द करने को कहा और स्वयम् पर्चा खोलकर पढ़ने लगे। उसमें लिखा था:—

"शशि प्रभा, हमको तुम्हारे पति की मृत्यु के बारे में मालूम हो चुका है? हमको मालूम हो गया है कि तुम्हारा मृत्यु पति इस समय कहाँ है और कैसे है। हमसे छिपाने की चेष्टा मत करना। तुमने व तुम्हारे पति ने इस चाल को चलकर सरकार को धोखा तो खूब दिया है। हम तमाम बातें तुम्हारे जरिये ही सुनना चाहते हैं इसलिये तुम एक खत में अपने पति की मृत्यु के बारे के हाल का तमाम अहवाल लिखकर रामचन्द्र, मार्फत, पोस्टमास्टर बम्बई के नाम डाल देना यह खत हमें मिल जायगा। मगर कुछ देरी हुई या कुछ नाजायज हरकत की तो तुमको गायब कर दिया जायगा। मोहलत है कुल तीन दिन की। होशियार।"

हस्ताक्षर के स्थान पर पानीवालों के तरह का पंजे का चिन्ह था।

पत्र को पढ़ने के बाद मि० प्रताप कुछ देर तक सोचते रहे और तब फिर शशि से बातें करने लगे।

मि० प्रताप:—शशि यह तीर व खत तुम्हें कहां और कैसे मिला।

शशि जो इस समय भी भयभीत दीख पड़ती थी और प्रारम्भ करते हुये बोली—जब आप अखबार आदि लेकर खाली वाली कोठरी में चले गये थे तो थोड़ी देर तक तो मैं प्राइवेट कमरे में आराम कुर्सी पर पड़ी रही। उसके बाद जब वहाँ मेरी तबियत न लगी तो मैंने पुस्तकालय में जाकर पुस्तक तलाश की और कुछ देर बाद 'तिलिस्मी पंजा' लेकर बरामदे में आ बैठी और कुर्सी पर बैठी २ पढ़ने लगी। एकायक एक सर्र करता हुआ तीर मेरे कान को छूता हुआ दरवाजे में जा गढ़ा। उसकी आवाज से मैं बेतरह भयभीत हो गई और घबरा कर कुर्सी पर से उछल पड़ी। सड़क पर निगाह डाली तो एक काले रङ्ग की खूब सूरत गाड़ी मध्यम चाल से चली जा रही थी। हमारी कोठी तरफ वाली खिड़की की तरफ मुँह निकाले एक हंसमुख युवक मुंह में सिगार दबाये देख रहा था। थोड़ी ही देर में वह गाड़ी निगाह से दूर हो गई तब ही मैंने तुमको जाकर सूचना दी।

मि० प्रताप—अच्छा घबराने की कोई बात नहीं ईश्वर चाहे सब काम ठीक हो जायेंगे।

इधर सायंकाल हो गया और मि० प्रताप भी वहां से उठकर बाग में आ बैठे। चितत प्रताप घास के लॉन पर लेट गये और आताताइयों के बारे में सोचने लगे। कुछ ही देर में अँधेरा हो गया और सड़कों पर लगी बिजलियों ने जलकर रास्ते के अन्धकार को दूर किया। इतने ही में फिर पहले दिन की तरह एक बिजली की सी चमकदार लकीर आसमान में चमक गई और आसमान के नीले पटल पर निम्नलिखित सन्देश चमकदार हरफों में छोड़कर गायब हो गई।

"मित्र-मिलन"

समस्त लोगों को सूचित करके अथवा 'पायनियर' जैसे विख्यात समाचार पत्र में अपना ठिकाना लिखकर श्याम ने हमको सूचित कर दिया था। हमने उसके ठिकाने पर पहुँच कर उससे भेंट की और उसे मिला लिया और साथ ही लेते भी आये। श्याम सुन्दर—वही श्याम सुन्दर जिसके नाम से एक दिन धनियों की हृदयगति रुक जाती थी वही आज हमारे साथ है। धनी नोट करलें।

गवर्नमेंट को परेशान करना हमारा ध्येय नहीं है इस लिये हम समझाये देते हैं कि 'राधाचक्र ज्योतिष गृह' वाले ही समाचार पत्र द्वारा श्याम ने हमको सूचना दी थी। 'राधाचक्र ज्योतिष गृह' का तार का पता 'आला' नहीं 'माला' है। मगर 'आला' श्याम सुन्दर का प्यार का नाम है जिसे हमारे सिवाय कोई नहीं जानता। हमें आशा है कि अब हम

भीला पड़ा ।

अपना कार्य निर्विघ्नता से कर सकेंगे क्योंकि हमारा एक अत्यन्त बलशाली मित्र मिल गया है, जिसमें [illegible] महात्मा की बर्बादी है।" [illegible] के [illegible] पर [illegible] निशान लगा था।

इस समाचार को पढ़कर मि० प्रताप अति चिन्तित हुये क्योंकि वह श्यामसुन्दर के शौर्य से भली भांति ही परिचित थे। इनके माथे पर पसीना आ गया और वह आँखें बन्द करके पलंग पर ही लेट गये।

तेईसवां परिच्छेद

गहरी चाल

रामप्रताप ने हंसा का नाम बदल कर उषा रख दिया था। कुछ ही दिनों बाद रामप्रताप ने अमरीका यात्रा से पहले उषा का विवाह अपने सजातीय व परम मित्र कुमार जागेन्द्रराय से कर दिया था। यद्यपि वृद्धजनों ने इसकी आपत्ति की मगर सामाजिक एकता की बात बताने पर यह कार्य सहज ही सुलझ गया। दुर्दैव ने उषा का साथ यहाँ भी न छोड़ा और दो वर्ष के अन्दर ही कुमार जागेन्द्रराय तथा उनके समस्त परिवारिक जन उषा को उनकी एक मात्र जागीर की उत्तराधिकारणी छोड़कर स्वर्ग सिधार गये। अब उषा के ऊपर समस्त जागीर का बोझ आ पड़ा और अब वह अपने विशाल भवन में ही रह कर समस्त कार्य करने लगी।

हरपालसिंह या नाहरसिंह कभी २ आकर उससे मिल जाते थे और वह भी अक्सर किशनगढ़ हो आया करती थी। रामप्रतापसिंह व उनकी पत्नी चन्द्रमणि दो साल बाद अमरीका से लौटकर आये थे। उनका जब ही कुमर जोगेन्द्रराय की मृत्यु तथा उषा पर इस दुर्घटना के पड़ने की खबर लगी वैसे ही वह दोनों उससे मिलने आये कई दिन तक वह वहां पर रहे और उसकी र ांत्वना के साथ उसके कार्य कर्ताओं की भी देख रेख करते रहे।

घर आने के बाद रामप्रतापसिंह ने अपने दो विश्वस्त नौकर उषा के यहाँ काम करने तथा उसके निरीक्षण के साथ ही उसके मैनेजर कृपालचन्द्र पर निगाह रखने के लिये भेज दिये थे। चन्द्रमणि तथा रामप्रताप दोनों को ही मैनेजर कृपाल चन्द्र पर शक हो गया था क्योंकि कृपालचन्द्र जरा २ सी बातों के लिये भी उषा से सलाह लेने के लिये आया करता था और बिना बात का विवाद किया करता था। बातें करते समय वह सदा एक टक उषा के मुख की तरफ गौर से निहारा करता था। इन बातों से दोनों ने यही निश्चय किया था कि उसकी कुछ न कुछ नियत में फर्क अवश्य था। राम प्रतापसिंह कहते थे कि वह उषा के रूप पर मोहित था और चन्द्रमणि उसका कारण धन बतलाती थी। इसी बात का फैसला करने के लिये वह दोनों नौकर वहां भेजे गये थे जो समय २ पर अपनी रिपोर्ट भी भेजते रहते थे।

रुपये देने का वायदा किया है। मैं तब आप से आगे के लिये कार्य-क्रम पूछने आया हूँ।

रामप्रताप ने गहरी दृष्टि चन्द्रमणि पर डाली तब चन्द्रमणि ने कुछ देर सोचने के बाद कहा 'कमलुआ' अभी तो घर जाकर रास्ते की थकान मिटा तब हम शाम को यहाँ तुझे मिलेंगे और विचार करके तुझे आगे के लिये कार्य-क्रम बतायेंगे।

कमलुआ उठा और दोनों पति-पत्नी को प्रणाम करके जाने लगा कि कुछ सोचकर चन्द्रमणि ने उसे रोका और कमरे में जाकर कुछ ले आई और वह कागज सा उसके हाथ में दे दिया। देखने पर कमलुआ को मालूम हुआ कि वह १००) रु० का एक नोट था। कमलुआ ने कृतज्ञ नेत्रों से उनकी ओर देखा और जुहार करके चला गया।

इस समय संध्या के तीन बज चुके थे। रामप्रताप व चन्द्रमणि अपनी २ कुर्सियों से उठे और फिर अपनी प्रयोगशाला में पहुँच गये और अन्दर से द्वार बन्द कर लिया। रामप्रताप ने एक सिगरेट सुलगाई और मुंह में लगाकर धुआँ छोड़ते हुए कहना शुरू किया।

रामप्रताप—चन्द्रमणि हमारे तुम्हारे दोनों के शक पूरे रहे इसलिये कोई किसी से नहीं हारा है। मैं भी यही सोचता था कि कहीं विनायक मन्दिर का महंत अवश्य ही चपा का

पता लगाने के लिये मारा २ फिर रहा होगा। मुझे क्या मालूम था कि सर्व श्री महन्तजी अपनी अनुकम्पा करके उपा के इतने समीप पहुँच चुके हैं।

चंद्रमणि—हाँ मुझे भी इतना स्वप्न में भी अनुमान न था अच्छा अब आप कोई ऐसी युक्ति निकालिये कि वह दुराचारी चारों खाने चित्त जा पड़े।

रामप्रताप—इससें तुम्हारी सलाह ही विशेष है। स्त्री पति की प्रधान मंत्री होती है। जैसे राजा के प्रत्येक कार्य में प्रधान मंत्री की राय की जरूरत होती है इसलिये मेरे काम में भी होना निश्चय है। क्योंकि मैं पति हूँ इसलिये तुम्हारे लिये नृप के सदृश्य हूँ और पिता ने नाम भी राजा ही रखा है।

यह सुनकर चंद्रमणि मुस्कुरा दी और यह कहते २ राम प्रताप भी हंस पड़े थे।

चंद्रमणि—यह पद मुझे नहीं भाता है इसलिये इससे मैं सहर्ष स्तीफा देती हूँ मुझे उस राजा का मंत्रित्व नहीं करता है जो अपने मंत्री के गुणों का पूरा लाभ न उठा सके।

यह मंत्री का विचार निर्मूल है। वह इतना नहीं जानता कि उसे राजा के साथ उसकी भीष्म प्रतिज्ञा को भी पूरा करना है। अगर संसार का प्राणी मात्र इस प्रकार काम के वस में होकर अपने को खो बैठे तो शौर्यवान संतान कहाँ से

हो। मन्त्री वह नहीं समझता कि सोहराब जो गुणों में अपने पिता रुस्तम से भी बढ़ गया था सिकन्दर जिसे संसार जानता है महाराजा भरत जिन्होंने भारत की मर्य्यादा बाँध दी यह सब क्यों और कैसे हुये उन सब का एक मात्र यही उत्पत्ति कारण कहा जा सकता है कि उनके माता पिता ने काम के वश न होकर धैर्य से काम लिया और अपनी इतनी बलशाली सन्तान उत्पन्न की कि उनके मर जाने के हजारों वर्षों तक भी उनका नाम अब तक चल रहा है। चन्द्रे! धैर्य धारण करो और समय की प्रतीक्षा करो" गम्भीर मुद्रा में रामप्रताप ने उत्तर दिया।

इस उत्तर को सुनकर चन्द्रमणि पहले तो खिन्न हुई और फिर बाद में प्रसन्न चित्त होकर उनकी बातों को सोचने लगी। कुछ देर बाद बोली।

चन्द्रमणि—मेरी समझ में यह आता है कि अंगूठी उषा को दे दी जाय और गुप्त रूप से उसकी हर समय निगरानी व रक्षा की जाय।

रामप्रताप—बस यहीं पर तुम कुछ भूल गयीं। अंगूठी नहीं वरन् एक दूसरी नक़ली अंगूठी उस ही की तरह की उषा को दी जाय और वह उसके घर में कहीं पर रख दी जाय और इस बात की सूचना कमलुआ के जरिये कृपालचन्द्र पर भी भेज दी जाय। कृपालचन्द्र अवश्य अंगूठी की टोह करेगा मगर

हम लोग निगरानी में रहकर उसकी तमाम हरकतें देख सकेंगे। और उचित प्रबन्ध भी कर सकेंगे।

चंद्रमणि—मैं आपकी यह बात बड़ी करती हूँ कि वह अंगूठी क्यों नहीं उस अनोखे मोरदार डिब्बे में बन्द करके रखी जाय और उसकी चाबी उपा को देदी जाय ताकि मैनेजर को चाबी देख कर भी लोभ बढ़े और उधर कमलुआ की भी बात सुनकर वह अपने कार्य में लग जाय।

इतनी सलाह रामप्रताप ने शीघ्र ही मान ली और उठ कर एक नकली लाल ठीक उसी नगीने के बराबर का मेज की दराज खोलकर निकाला और फिर उसे कई प्रकार के तेजाबों में डालकर उसका रङ्ग जोगिया कर दिया और ठीक सच्ची अंगूठी के लगे नग से मिला दिया इस काम से निबृत्त होकर चन्द्रमणि से मोर का डिब्बा लाने के लिये कहा।

प्रयोगशाला से बाहर निकल कर राम प्रताप ने एक नौकर को बुलाकर कहा कि वह शीघ्र बुला लाये। शीघ्र ही सुनार भी आ गया तब राम प्रतापसिंह ने उसे एक कागज पर खींचकर अंगूठी का नमूना दिखाया और शीघ्र ही बना लाने को कहा। सुनार अगले दिन बना लाने का वायदा करके चला गया।

संध्या के ठीक छः बजे जब कि चंद्रमणि के साथ राम प्रताप सबसे ऊपर अपने कमरे के आगे खुली छत पर

हवा में बैठे कि कमलुआ ने आकर जुहार किया। कमलुआ अब तुम्हारा केवल तनिक सा काम ही बचा है। तुम केवल मैनेजर की अँगूठी की जगह बता देना और उसकी सहायता के लिये एक झिल्ली जो हम देंगे दे देना आगे कार्य हम खुद देख लेंगे। कमलुआ ने तीसरे दिन आने का वाइदा किया और तत्पश्चात राम प्रताप व चंद्रमणि अन्य कामों में लग गये।

दूसरे दिन सुनार ने अगूंठी बनाकर ला दी जैसी कि रामप्रताप चाहते थे। उन्होंने उस अंगूठी में स्वयम् ही नग जड़ा और सच्ची अँगूठी के सदृश्य बना दिया। सब तरह से निश्चित होकर उन्होंने मोर वाले डिब्बे को उठाया और उसकी पूँछ जिसमें चूड़ियाँ पड़ीं थीं खोलकर अलग कीं जिसके अलग करते ही चाबी डालने का एक छोटा सा निशान निकल आया। पास ही चाँदी के गुच्छे में पड़ी हुई चाबी लगा कर खोलते ही मोर अलग हो गया और डिब्बे का मुँह खुल गया। एक पतले कागज में बाँध कर रामप्रताप ने अंगूठी रख दी फिर ज्यों का त्यों ही बन्द कर दिया।

अगले दिन जब कमलुआ जाने के लिये तय्यार होकर आया तो राम प्रताप ने उसे समझा दिया कि वह एक या दो दिन बाद वह स्वयम् ही आयेंगे और उसको एक पुर्जे पर उस स्थान का ठीक २ पता जहाँ पर कि वह अंगूठी रक्खेंगे ये दे जायेंगे। कमलुआ चला गया और दो दिन बाद जाने का

रातप्रताप व चंद्रमणि ने भी निश्चय किया। रामप्रताप ने कुमर जोगेन्द्रराय के सामने ही उस हवेली को भली प्रकार देखा था। अतः वह जानते थे कि उषा के ड्राइंगरूम के नीचे एक बहुत शानदार तहखाना है जिसको अब शायद ही कोई जानता होगा। इसलिये उन्होंने रहने का निश्चय किया ताकि वह कृपालचन्द्र की प्रत्येक हरकत देख सकें व उषा की रक्षा भी कर सकें। क्योंकि वह जानते थे कि कृपाल जैसे ही अगूठी का आभास पायगा वैसे ही वह उसे शीघ्र अपने कब्जे में लाने का उद्योग करेगा।

दो दिन में यात्रा का सारा सामान करके रामप्रतापसिंह चंद्रमणि के साथ उषा के गाँव में पहुँचे इस समय रात के दो बजे थे। सर्दी की शीत रातें थी, केवल कुत्ते ही भौंकते रहे थे और समस्त जन समुदाय अपनी शीत रक्षा के लिये खाटों में पड़ा निद्रादेवी की गोद में मस्त था। रामप्रताप ने गाड़ी हवेली के पास ही बने छोटे से शिव मन्दिर के पास खड़ी की और उतर कर मन्दिर में प्रवेश किया।

यह शिवजी का मंदिर हवेली की पिछली तरफ बिल्कुल सटा हुआ ही बना था इसकी लम्बाई मुशकिल से सात आठ फीट होगी और चौड़ाई छः फीट से ज्यादा न थी। बीचों बीच मंदिर में एक लिङ्ग भगवान् की मूर्ति विराजमान थी और छत से लटके हुये सात पीपल के घंटे परिक्रमा में चलते समय बजाये जाते थे। शिवलिङ्ग के बॉई ओर पार्वती

जी हाथ जोड़े विराजमान थीं और सीधे हाथ पर गणेश जी की शान्त मूर्ति रखी थी। सामने सङ्गमरमर का नादिया बैठी हुई शक्ल में रखा था। रामप्रताप ने मन्दिर में पहुंचते ही सामने रखे नादिये को उठाकर एक कोने में रख दिया जिसके स्थान के नीचे एक लोहे की छड़ पृथ्वी में गढ़ी हुई निकली। तब उन्होंने जैसे ही उस छड़ को अपनी तरफ खींचकर सीधे हाथ को घुमाया वैसे ही सीधे हाथ वाले कोने से लगी पटिया एक ओर हट गई और एक काफी लम्बा चौड़ा नीचे जाने के लिये रास्ता निकल आया। रामप्रताप ने इसी रास्ते के द्वारा चन्द्रमणि की मदद से मोटर में रखकर तमाम सामान नीचे तहखाने में पहुँचा दिया।

इसी काम में करीब साढ़े तीन बज आये तब उस द्वार को जैसे को वैसा ही करके रामप्रताप ने जाकर हवेली का द्वार खट खटाया। बुड्ढे चौकीदार ने द्वार खोला और रामप्रताप को देखकर वह उन्हें तथा चन्द्रमणि को बड़े आदर से अन्दर लिवा ले गया। दासी ने जाकर सोती हुई उषा को खबर की और उषा भी खबर पाते ही शीघ्र ही रामप्रताप के पास चली आयी। एक दम हवेली में कोलाहल हो गया और तमाम नौकर चाकर जाग पड़े और आतिथ्य सत्कार में लग गये।

दूसरे दिन बातों ही बातों में अंगूठी का जिक्र चन्द्रमणि ने छेड़ा इस पर रामप्रताप ने अपने ऊपर रखे सामान में से

वह लोहे का मोरदार डिब्बा निकाला जिसमें कि वह नकली अंगूठी रखी थी और एक बार डिब्बे खोलने की विधि बतादी और फिर उसे ज्यों का त्यों ही अंगूठी अन्दर रख कर बन्द कर दिया।

उषा—भय्या तुम यह तो सुन ही चुके हो कि उस दुराचारी महन्त की इस अंगूठी बिना क्या दशा होगी। वह जरूर ही इस अंगूठी के लिये अपने प्राणों तक न्योछावर करके खोज निकालने के प्रयत्न में होगा। संशय नहीं कि वह मेरा पता भी पा जाय और यहाँ अंगूठी के लिये आ धमके और इसे ले जाय। यह वही अंगूठी है जो उसको महन्त के सिंहासन पर पुनः आरूढ़ करा देगी और वह फिर अबलाओं की इज्जत लूटना शुरू कर देगा। इसलिये आप ही इसे सुरक्षित अपने पास ही रक्खें।

रामप्रताप—उषा, उसका प्रबन्ध मैंने सब सोच लिया है। पहले तो यह डिब्बा ही ऐसा साधारण नहीं कि प्रत्येक मनुष्य चाभी पा जाने पर भी इसे खोल सके। दूसरे मैं इसे तेरे आंगन में गाड़ दूंगा ताकि यह सर्वदा तेरी आंखों के सामने रहे। इसका सामान दिन में करले ताकि रात को तीनों प्राणी इस कार्य को आसानी से कर सकें।

दिन भर में उषा ने जरूरत का तमाम सामान एक कोठरी में रखवा लिया। रात्रि के बारह बजते ही उसने तमाम

नौकरों चाकरों को बाहर सोने की आज्ञा दी और अपना कार्य शुरू किया। रामरनाथ ने सावधानी से नाप कर ठीक आंगन में एक गड्ढा खोद कर गाड़ दिया। चंद्रमणि ने उषा की डायरी के एक पन्ने पर यह नाप तोल साफ २ लिख दी और ऊपर यह भी लिख दिया कि 'अंगूठी गाड़ने के स्थान की नाप' ताकि एक बार पढ़ने ही से समझ में आ सके। चार पांच दिन रहने के बाद दोनों प्राणी उषा के यहां से विदा होकर अपने घर की तरफ मोटर में बैठ कर चल दिये।

चौबीसवां परिच्छेद

जान के लाले

मि० रुद्रकंठ वर्मा की आंख जब खुली तो उन्होंने अपने आपको लेबोरेटरी में अपनी कोच पर लेटा पाया। सामने ही मेज पर वह टाइप किये हुए कागज रक्खे थे जो उन्होंने कुछ समय पहले 'हृदय ज्ञान यन्त्र' द्वारा छपकर रक्खे थे। कुछ देर तक सो चुकने के कारण उनकी तबियत फिर स्वच्छ हो गई थी और अब उनकी थकावट इत्यादि भी बिल्कुल जाती रही थी। उन्होंने शीघ्र ही एक सिगरेट सुलगाई और पीना शुरु किया। फिर सामने रखे कागज उठा लिये और उन्हें गौर से देखने लगे। इतने ही में घण्टी बज उठी इसलिये वह काम जैसे का तैसा ही छोड़ अपने गुप्त द्वार से ऊपर वाली लेबोरेटरी

जा पहुंचे और वहां से निकल कर ड्राइङ्गरूम में होते हुये शान्ति रानी के कमरे पर जहां वह बैठी हुई उनके आने का ही इन्तजार कर रही थी।

मि० वर्मा—क्यों मुझे कैसे बुलाया है ?

शान्ती रानी—अभी २ डाक से एक पत्र रामसेवक के नाम मिला है। देखो न क्या लिखा है।

यह कहकर शान्ती रानी ने वह खत उठाकर मि० वर्मा के आगे रख दिया। मि० वर्मा ने शीघ्र ही उसे खोला जिसमें साफ हिन्दी भाषा में लिख रहा था।

"रामसेवक"

आज ही मुझे मजेस्टी का संदेश मिला है कि वह तुमसे मिलना चाहते हैं इसलिये आज रात ही को तुम स्टेशन से बांयी तरफ वाली कङ्कड़ों की सड़क जो खतौरा गांव को जाती है करीब ११ बजे उसी सड़क पर दो मील चले जाना। वहां जाकर तुम्हें एक छोटी सी कोठरी सड़क के किनारे ही मिलेगी। उस कोठरी में बीचों बीच में आग दहक रही होगी और पास ही सूखा फूस रखा होगा। तुम पहुंच कर फूस उठाकर उस आग में डाल देना और फिर दरवाजे पर खड़े इन्तजार करना। करीब दस मिनट के अन्दर ही वहाँ मोटर उपस्थित होगी बस शीघ्र ही मोटर में जा बैठना जो तुम्हें 'पेलिस्टाइन' तक लेजायगा

तुम्हें याद रखना चाहिये कि 'रामचन्द्र' अपने दल का संबोधक चिन्ह है और तुम्हारा नं० राजगढ़ १०२ है इन बातों को सदा याद रखना वरना खतरे में पड़ जाओगे। खत को पढ़ते ही नष्ट कर डालना। कार्यवाही का ध्यान रखना।

तुम्हारा नं० ८१ सिंहगढ़''

इस खत को एक साँस तक पढ़ जाने के बाद मि० वर्मा ने संक्षेप में तमाम बातें शान्ती रानी से समझा कर कहीं और साथ ही यह भी कह दिया कि समय बहुत ही कम है और उन्हें अब दुश्मन के किले में जाने की तय्यारी करनी है। इस लिये वह उठ खड़े हुये और अपनी प्रयोगशाला में चले गये।

जब वह निकले तो उस समय लगभग साढ़े नौ बज चुके थे। इस समय उनकी वेशभूषा बिल्कुल रामसेवक से मिलती थी। शान्ती रानी ने शीघ्रता से उन्हें भोजन कराया और फिर पति की मंगल कामना की प्रार्थना परम पिता जगदीश्वर से की और सहर्ष विदाई की। पत्र के मुताबिक कार्य करने से वह नियत स्थान पहुंचे और उन्हें वहाँ एक मोटर मिली जिसमें वह जाकर बैठे ही थे कि वह मोटर कुछ दूर पृथ्वी पर चलने के बाद आसमान में उड़ने लगी। मोटर अन्दर लगे हुये लाल बल्ब की रोशनी में वह बखूबी देख सके कि सामने अर्थात् अगली सीट पर एक शानदार पोशाक पहने रोबीला जवान बैठा था और पास ही उसके पास वैसी पोशाक

पहने जो स्त्री बैठी थी वह अत्यन्त रूपवती व बलशाली प्रतीत होती थी।

मटर इस समय अति तीव्र गति से अनन्त की ओर चल रही थी। अनेक कोशिश करने पर भी मि० वर्मा अपने आप को न सम्भाल सके और कुछ ही समय में बेहोश होकर यहाँ बैठे थे गिर पड़े। उनके गिरते ही स्त्री ने जो अगली सीट पर बैठी थी मुड़ कर उसकी नाड़ी देखी और तब फिर कुछ सोचने के बाद पति से कह दिया कि वह अचेत हो गया है गाड़ी निरन्तर उसी रफ्तार से चलती हुई चिर-परिचित किले के सामने आकर खड़ी हो गई। इस समय लगभग प्रातः काल का समय हो आया था। प्रभात सूर्य की प्रथम किरणें शीघ्रता ही से ससार में फैल कर तिमिर विध्वन्स कर रही थीं। गाड़ी वहीं जंगल में खड़ी करके अगली सीट पर से वह दोनों उठ खड़े हुये और पर्वत श्रेणी की ओर जाने लगे। जब वह काफी दूर पहुँच गये तो पिछली सीट पर दबे हुये मि० वर्मा जो अचेत अवस्था में पड़े थे उठे और शीघ्रता से अगली सीट पर आये। उन्होंने अगली सीट पर आते ही एक बार मशीन के ढङ्ग को निहारा और फिर एक दम गाड़ी स्टार्ट कर हवा में उड़ा ले गये मोटर की आवाज सुन कर पास ही पर्वत की चोटी पर बैठे हुये वही स्त्री और पुरुष जो गाड़ी से उतरे थे चौंके और उन्होंने ज्यों ही आकाश की तरफ देख

तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और वह दोनों हाथ मलते ही रह गये अब क्या हो सकता था।

इधर मि० वर्मा निरन्तर उस मोटर को दौड़ाये हुये आ रहे थे कि यकायक एक विकट आवाज के साथ ही मोटर बहुत जोर से लड़खड़ाई और मि० वर्मा ने यह समझा कि मशीन फट गई, इसलिये उनके हाथ पांव फूल गये और अकाल मृत्यु का दृश्य आते ही उनके हाथ से मोटर का स्टेरिंग छूट गया और बे होश होकर गद्दी पर लुढक गये।

पच्चीसवां परिच्छेद

दुष्टता की सजा

जिस समय रामप्रताप व चन्द्रमणि मोटर में बैठकर ·कर की तरफ चले थे उस समय सन्ध्या हो जाने से झुटपुटा था। इसलिये वह लोग कुछ दूर जाकर ही लौट आये। मगर इस बार उनका आना किसी को मालूम न था। उन्होंने अपनी मोटर एक किसान के बहुत बड़े छप्पर में खड़ी करदी थी और स्वयम् दोनों अपने को लोगों की निगाहों से बचाते हुये शिवजी के मन्दिर वाले द्वार से होकर तहखाने में जा पहुँचे। इस तहखाने में से ऊपर के प्रत्येक भाग के लिये झरोखे इस प्रकार

थे जिन्हें उनके सिवाय कोई और न जानता था और
उनमें होकर ऊपर के कमरों का सारा हाल दिखाई दिया करता
था।

कमलुआ की सहायता से कृपालचंद्र ने उषा की डायरी
में से वह सफा फटवा लिया था जिसमें सारी नाप तोल
रामप्रताप ने अपने हाथ से मय उस स्थान के नकशे के बना
दी थी जहाँ पर कि वह अँगूठी वाला डिब्बा गाड़ा गया था।
रात्रि के बारह बजते ही जब मोर नौकर अपने २ घर चले
गये थे तो कृपालचन्द्र ने दबे पांव उषा के कमरे में प्रवेश किया
और उसे धमका कर ताली लेनी चाही। अन्त में उसने अपने
चहरे पर लगी हुई झिल्ली उतारी तो शीघ्र ही उषा पहचान गई
कि यह वही खुंसट महन्त था जिसे वह धोखा देकर विनायक
मंदिर से भाग निकली थी। उस महन्त की पैशाचिक वृत्ति का
ध्यान आते ही उषा के रोंगटे खड़े हो गये और वह कांप कर
बेहोश हो गयी। जिससे आगे का हाल पहले परिच्छेद में
पढ़ चुके हैं।

इधर तो कमरे से निकल कर वह कृपालचंद्र बाहर
गया कि उधर चोर दरवाजे में होकर वह दोनों प्राणी कमरे
में आये और वह उषा को अचेत अवस्था ही में उठाकर तह-
खाने में ले गये और फिर एक मसनूही लाश लाकर उसके स्थान
से हटाकर कृपालचन्द्र को परेशान करने के लिये रख दी गई।

हम पहले परिच्छेद में पढ़ चुके हैं कि जैसे कृपालचन्द्र उस अंगूठी वाले डिब्बे को लेकर कमरे में आया और लाश को देखने लगा त्यों ही वह मूर्छित हो गया और उसकी उस अवस्था का लाभ उठाकर रामप्रताप व चन्द्रमणि ने उसके सारे बदन को जंजीरों से जकड़ लिया और तहखाने में ले गये। थोड़ी देर बाद जब कृपालचन्द्र को होश आया तो उसने आपको जंजीरों से बेतरह जकड़ा पाया और सामने रामप्रताप और चन्द्रमणि को देखकर वह समझ गया कि अब उसका सारा भेद उनको मालूम होगया है और उनके चंगुल में से बचना भी दुर्लभ था। उषा ने जैसे ही अपना होश सँभाला तो वह अपनी हालत देखते ही समझ गई कि वह आज उनकी कृपा से बच सकी है।

कृपालचन्द्र ने बचने का कोई उपाय न देखकर अपने बांये हाथ की छोटी उंगली में पड़ी हीरे की अंगूठी में लगे हीरे को चाट लिया और परमगति को प्राप्त हुआ। दुष्टता का परिणाम उसकी मृत्यु निकाली।

उपसंहार
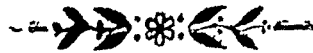
इस उपन्यास में मि० वर्मा ने और मि० प्रताप ने अपनी अपनी चालाकियों से आतताइयों को बेहद बुरी तरह छका दिया था। उन दोनों ने अपना आगामी कार्यक्रम निर्धारित करने के लिये क्षेत्र उपस्थित कर लिया था। मि० वर्मा ने मोटर छीनकर तो अपने अपूर्व बल, चातुरी, और शौर्य का परिचय दिया था मजेस्टी ने मोटर छिनते ही समझ लिया कि अब की टक्कर करी है और उसे अपनी शक्ति तथा कौशल पर सन्देह होने लगा। वह आततायियों की वह जबरदस्त हार थी जिसके फल स्वरूप वह लोग मिट्टी में मिला दिये गये और उनके हौसले पस्त होगये।

मि० वर्मा के शानदार कारनामे और 'नीला पञ्जा' दल की पराजय का आगे का इतिहास जानने के लिये 'नीला पञ्जा' (खूनी तीर) पढ़िये।

छप रहा है 'नीला पंजा' (खूनी तीर)

समाप्त

बृहद् पाकशास्त्र